श्री रामचरितमानस

अयोध्या काण्ड

(सटिप्पण)

भूमिका

श्री वियोगी हरि

१९५२

सस्ता साहित्य प्रकाशन

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय, मंत्री
सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली

प्रथम बार : १९५२
मूल्य १)

मुद्रक
उद्योगशाला प्रेस,
किंग्सवे, दिल्ली

दो शब्द

हिन्दी-साहित्य का शिरोरत्न 'रामचरित-मानस', और उसकी अप्रतिम आभा अयोध्या काण्ड। भरत का जैसा लोकोत्तर चित्राङ्कण तुलसीदास ने अयोध्या काण्ड में किया है वह अन्यत्र कहाँ मिलेगा? भरत के आगे वे एक वार राम को भी भूल-से जाते हैं, जब उनके अतर से यह शब्द फूट पड़ते हैं,—

जग जपु राम राम जप जेही।

तथा,—जो न जनमु जग होत भरत को।

अचर सचर चर अचर करत को॥

और अंत मे,—

सियराम प्रेम पियूष पूरन होत जनमु न भरत को॥

कलिकाल तुलसी से सठन्हि हठि राम सनमुख करत को॥

और इसी कारण अयोध्या काण्ड में रामचरित से भी अधिक तन्मयता कवि की भरत-चरित के चित्राङ्कण मे दिखाई देती है।

इस काण्ड में गोसाईं जी अपनी गहरी तन्मयता में शिव-पार्वती-सवाद अथवा भुसुण्डि-गरुड़ संवाद तक को भूल जाते हैं। यहाँ वे जैसे किसी पूर्व कथानक का आधार नहीं ले रहे हैं। पूरे-के-पूरे अपने मूलरूप में वे यहाँ दीखते हैं। वाणी ने. इस भरत-काण्ड में, शील में अवगाहन कर अपनी अवतारणा को प्रथम वार तथा शायद अंतिम वार भी सफल किया है। लोक-संग्रह एव परमार्थ-संग्रह श्रेयम् के दोनों ही पक्षों की साधना तुलसीकृत भरत-चरित के गहरे अनुशीलन से सभव है, इसमें कोई सन्देह नहीं।

तुलसी की अजर-अमर वाणी के अनेक भाष्य और अनेक टीकाएँ हुई हैं, और होती ही चली जा रही हैं. कारण कि—'तदपि कहे बिनु रहा न कोई।' हमारे हरिजन-निवास के श्री बालकृष्ण शास्त्री ने भी कठिन

शब्दों का केवल सरल अर्थ करके अयोध्या काण्ड का यह सटिप्पण संस्करण प्रस्तुत किया है। कुछ कठिन स्थलों का भावार्थ भी अंत में दे दिया है। परिशिष्ट में प्रसंग-कथाएँ भी संक्षेप में उन्होंने देदी हैं। साधारण पाठकों और विशेषतः विद्यार्थियों के लिए अयोध्या काण्ड के इस संस्करण को उपयोगी बनाने का प्रयत्न किया गया है। आशा है कि तुलसी साहित्य के विद्यार्थी इस सटिप्पण अयोध्या-काण्ड से लाभ उठायेंगे।

वियोगी हरि

गोस्वामी तुलसीदास

संक्षिप्त जीवन-चरित

प्रयाग के पास बाँदा ज़िले मे राजापुर ग्राम में आत्माराम दूबे नाम के एक प्रतिष्ठित सरयूपारीण ब्राह्मण रहते थे। उनकी पत्नी का नाम हुलसी था। तुलसीदासजी इसी दम्पति के पुत्र थे। इनकी जन्म-तिथि के विषय में मतभेद है। शिवसिंह सेंगर ने अपने ग्रन्थ "शिवसिंह सरोज" में १५८३ जन्म-संवत् लिखा है, और रामचरित-मानस के प्रसिद्ध मर्मज्ञ पण्डित रामगुलाम द्विवेदी ने संवत् १५८९। इधर वेणीमाधव दास कृत 'गोसाँईचरित' का सक्षिप्त रूप 'मूल गोसाँई चरित' मिला है। वेणीमाधव दास, गोसाँई जी के शिष्य कहे जाते हैं। कहते हैं कि ये गोसाँईजी के साथ बहुत दिनों रहे भी थे। 'मूल गोसाँई चरित' में उल्लिखित बातें परम्परा से प्रचलित जनश्रुतियों से मेल भी खाती हैं। तिथियाँ भी प्रायः ठीक उतरती हैं। अतः इसके अनुसार सवत् १५५४ की श्रावण शुक्ला सप्तमी के दिन अभुक्तमूल नक्षत्र में इनका जन्म हुआ था।

लोक प्रसिद्धि है कि अमुक्तमूल में उत्पन्न होने के कारण अनिष्ट की आशका से गोसाँईजी की माता ने नवजात शिशु को अपनी दासी के साथ उसके ससुराल भेज दिया। दासी ने जिसका नाम चुनियाँ था बड़े प्रेम से बालक का पालन-पोषण किया। अपने त्यागने की चर्चा कवि ने 'कवितावली' में की है—

जायो कुल मङ्गन बधायो न बजायो सुनि,
भयो परिताप पाप जननी जनक को।

इसी ग्रन्थ में अन्यत्र लिखा है—

'मातु-पिता जग जाइ तज्यो, बिधिहू न लिख्यो कछु भाल भलाई।

ऊपर लिखे प्रसगो से इतना अवश्य स्पष्ट हो जाता है कि तुलसी दास का शैशव कोई सुख पूर्वक नहीं बीता, और वे बाल्यकाल ही में घर से निकल पडे थे। दैव सयोगात् साधुओं का सत्संग मिल गया। गुरु ने कृपा करके 'सूकर खेत' मे राम कथा सुनाई —

'मैं पुनि निज गुरु सन सुनी, कथा सो सूकर खेत।'

परम्परा से नरहरिदास को गोस्वामी तुलसीदास का गुरु कहा जाता है। रामचरित मानस मे लिखा भी है—

'वन्दउँ गुरु पद कञ्ज, कृपा सिन्धु नररूप हरि।'

गुरु के द्वारा विविध शास्त्रों, पुराणों, काव्यों, नाटकों आदि में रामचरित की चर्चा से राम-तत्त्व जानते हुए तुलसीदासजी उन्ही के साथ रहने लगे। 'मूल गोसॉई चरित' से स्पष्ट है कि वे अपने गुरु के साथ काशी के पचगगा घाट पर स्वामी रामानन्द के स्थान पर रहने लगे थे। वहीं शेष सनातन भी रहते थे। वे वेद-शास्त्र के मर्मज्ञ विद्वान् थे। तुलसीदासजी ने उनसे वेद-वेदाङ्ग, शास्त्र, इतिहास, पुराण, काव्य कला का बड़े मनोयोग से अध्ययन किया।

'नाना पुराण निगमागम सम्मत यत्
रामायणे निगदित क्वचिदन्यतोऽपि।'

इससे सिद्ध है कि ये बडे प्रकाण्ड विद्वान् थे तथा सत्सगी भी।

कुछ दिन बाद उनकी लोक-वासना जाग्रत हो उठी और अपने गुरु से आज्ञा लेकर वे अपनी जन्म-भूमिको लौट आए। 'तारी' गॉव की 'रत्नावली' नाम की कन्या से विवाह किया। प्रवाद है कि वे अपनी पत्नी में अतिशय आशक्त थे। एक दिन वह अपने मायके गई। तुलसीदास उसका वियोग न सह सके। उसके पीछे-पीछे ससुराल जा पहुँचे। वहाँ उन्हें आया देख वह लज्जित हुई। उसके मुँह से निकल पड़ा—

लाज न लागत आपको, दौरे आएहु साथ।
धिक् धिक् ऐसे प्रेम को, कहा कहौ मैं नाथ॥
अस्थि-चर्ममय देह मम, तामे जैसी प्रीति।

तैसी जौ श्रीराम महँ, होति न तो भवभीति ॥

तुलसीदासजी को ये शब्द तीर से लग गये। वे उल्टे पाँव लौट पड़े। प्रयाग पहुँचकर वैरागी बाना धारण कर लिया।

वैराग्य लेने के पश्चात् तुलसीदास के मन मे राम-भक्ति के जो संस्कार बचपन में ही जम चुके थे, वे पल्लवित हो आए। अपने इष्टदेव राम की खोज में अयोध्या पहुँचे। तदनन्तर चारों धामों की यात्रा किए। देश की दशा को अपनी आँखों देखा, समाज की क्या दुर्दशा थी, जनता के धार्मिक विचारों मे क्या अव्यवस्था थी, आर्थिक-चिन्ताओं ने किस प्रकार लोगों को ग्रस रखा था और राजनीतिक आतङ्क ने देश की शक्ति को किस प्रकार छिन्न भिन्न कर रखा था—यह सब उन्होंने देखा।

इस प्रकार देश-दर्शन कर चुकने पर वे चित्रकूट में भगवद्भक्ति करने लगे तथा नित्य राम की कथा कहने लगे। चित्रकूट में कुछ दिन रहने के बाद फिर काशी, जनकपुर नैमिषारण्य, अयोध्या, वृन्दावन आदि स्थानों का दर्शन किया। जीवन का उत्तरार्ध काशी में ही बिताया। अन्तिम दिनों मे असी घाट पर रहते थे, जिसे आजकल तुलसीघाट कहते हैं। सकटमोचन की मूर्त्ति वहाँ पर इन्हीं की स्थापित की हुई है।

प्रारम्भ में काशी के पुराण-पन्थी पण्डितों ने तुलसीदासजी का बड़ा विरोध किया, पर बाद में इनकी निष्कपट सच्ची भक्ति का प्रभाव सबके ऊपर पड़ा। इन बातों को 'कवितावली' 'विनयपत्रिका' में अनेक मार्मिक वचनों द्वारा प्रकट किया है। क्षुद्र लोगों ने धर्मान्धतावश उन्हें तंग किया, इस पर वे स्वयं कहते हैं—

'कौन की त्रास करै तुलसी जो पै राखिहैं राम तो मारिहैं को रे।'

(कवितावली)

कवितावली में कुछ ऐसे भी पद्य हैं जिनमें काशी में महामारी के प्रकोप का वर्णन है। उसी के अन्तर्गत 'हनुमान बाहुक' मे ऐसे पद्य हैं, जिनमें गोस्वामीजी की बाहुपीड़ा का वर्णन है। निधन-तिथि के विषय मे भी कई मत हैं, पर प्रामाणिक मत यह है कि—

श्री गणेशाय नमः

श्रीजानकीवल्लभो विजयते

श्रीरामचरितमानस

द्वितीय सोपान

(अयोध्याकाण्ड)

श्लोक

यस्याङ्के च विभाति भूधरसुता देवापगा मस्तके
भाले बालविधुर्गले च गरलं यस्योरसि व्यालराट् ।

सोऽयं भूतिविभूषणः सुरवरः सर्वाधिपः सर्वदा
शर्वः सर्वगतः शिवः शशिनिभः श्रीशङ्करः पातु माम् ॥१॥

प्रसन्नतां या न गताभिषेकतस्तथा न मम्ले वनवासदुःखतः
मुखाम्बुजश्रीरघुनन्दनस्य मे सदास्तु सा मञ्जुलमङ्गलप्रदा ॥२॥

नीलाम्बुजश्यामलकोमलाङ्गं सीतासमारोपितवामभागम् ।
पाणौ महासायकचारुचापं नमामि रामं रघुवंशनाथम् ॥३॥

दो०—श्रीगुरु चरन सरोज रज निज मनु मुकुरु सुधारि ।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चारि ॥

जब ते रामु ब्याहि घर आए। नित नव मंगल मोद बधाए ॥
भुवन चारिदस भूधर भारी। सुकृत मेघ बरषहिं सुख बारी ॥
रिधि सिधि संपति नदीं सुहाई। उमगि अवध अंबुधि कहुँ आई ॥
मनिगन पुर नर नारि सुजाती। सुचि अमोल सुंदर सब भाँती ॥
कहि न जाइ कछु नगर बिभूती। जनु एतनिअ बिरंचि करतूती ॥
सब बिधि सब पुर लोग सुखारी। रामचंद मुख चंदु निहारी ॥
मुदित मातु सब सखीं सहेली। फलित बिलोकि मनोरथ बेली ॥
रमा रूपु गुन सीलु सुभाऊ। प्रमुदित होइ देखि सुनि राऊ ॥

दो०–सब कें उर अभिलाषु अस कहहिं मनाइ महेसु।
आप अछत जुबराज पद रामहि देउ नरेसु ॥१॥

एक समय सब सहित समाजा। राजसभाँ रघुराजु बिराजा ॥
सकल सुकृत मूरति नरनाहू। राम सुजसु सुनि अतिहि उछाहू ॥
नृप सब रहहिं कृपा अभिलाषें। लोकप करहिं प्रीति रुख राखें ॥
तिभुवन तीनि काल जग माहीं। भूरिभाग दसरथ सम नाहीं ॥
मंगलमूल रामु सुत जासू। जो कछु कहिअ थोर सबु तासू ॥
रायँ सुभायँ मुकुरु कर लीन्हा। बदनु बिलोकि मुकुटु सम कीन्हा ॥
श्रवन समीप भए सित केसा। मनहुँ जरठपनु अस उपदेसा ॥
नृप जुबराजु राम कहुँ देहू। जीवन जनम लाहु किन लेहू ॥

दो०–यह बिचारु उर आनि नृप सुदिनु सुअवसरु पाइ।
प्रेम पुलकि तन मुदित मन गुरहि सुनायउ जाइ ॥२॥

कहइ भुआलु सुनिअ मुनि नायक। भये राम सब बिधि सब लायक
सेवक सचिव सकल पुरबासी। जे हमारे अरि मित्र उदासी ॥
सबहि रामु प्रिय जेहि बिधि मोही। प्रभु असीस जनु तनु धरि सोही ॥
बिप्र सहित परिवार गोसाईं। करहिं छोहु सब रौरिहि नाईं ॥
जे गुरु चरन रेनु सिर धरहीं। ते जनु सकल बिभव बस करहीं ॥

मोहि सम यहु अनुभयउ न दूजे। सबु पायउँ रज पावनि पूजे ॥
अब अभिलाषु एकु मन मोरे। पूजिहि नाथ अनुग्रह तोरे ॥
मुनि प्रसन्न लखि सहज सनेहू। कहेउ नरेस रजायसु देहू ॥

दो०-राजन राउर नामु जसु सब अभिमत दातार।
फल अनुगामी महिप मनि मन अभिलाषु तुम्हार ॥३॥

सब बिधि गुरु प्रसन्न जियँ जानी। बोलेउ राउ रहँसि मृदु बानी ॥
नाथ रामु करिअहिं जुबराजू। कहिअ कृपा करि करिअ समाजू ॥
मोहि अछत यहु होइ उछाहू। लहहिं लोग सब लोचन लाहू ॥
प्रभु प्रसाद सिव सबइ निबाहीं। यह लालसा एक मन माहीं ॥
पुनि न सोच तनु रहउ कि जाऊ। जेहिं न होइ पाछें पछिताऊ ॥
सुनि मुनि दसरथ बचन सुहाए। मंगल मोद मूल मन भाए ॥
सुनु नृप जासु बिमुख पछिताहीं। जासु भजन बिनु जरनि न जाहीं ॥
भयउ तुम्हार तनय सोई स्वामी। रामु पुनीत प्रेम अनुगामी ॥

दो०-बेगि बिलंबु न करिअ नृप साजिअ सबुइ समाजु।
सुदिन सुमंगलु तबहिं जब रामु होहिं जुबराजु ॥४॥

मुदित महीपति मंदिर आए। सेवक सचिव सुमंत्रु बोलाए ॥
कहि जयजीव सीस तिन्ह नाए। भूप सुमंगल बचन सुनाए ॥
जौं पाँचहि मत लागै नीका। करहु हरषि हियँ रामहि टीका ॥
मंत्री मुदित सुनत प्रिय बानी। अभिमत बिरवँ परेउ जनु पानी ॥
बिनती सचिव करहिं कर जोरी। जिअहु जगतपति बरिस करोरी ॥
जग मंगल भल काजु बिचारा। बेगिअ नाथ न लाइअ बारा ॥
नृपहि मोदु सुनि सचिव सुभाषा। बढ़त बौंड़ जनु लही सुसाखा ॥

दो०-कहेउ भूप मुनिराज कर जोइ जोइ आयसु होइ।
राम राज अभिषेक हित बेगि करहु सोइ सोइ ॥५॥

हरषि मुनीस कहेउ मृदु बानी। आनहु सकल सुतीरथ पानी॥
औषध मूल फूल फल पाना। कहे नाम गनि मंगल नाना॥
चामर चरम बसन बहु भाँती। रोम पाट पट अगनित जाती॥
मनिगन मंगल बस्तु अनेका। जो जग जोगु भूप अभिषेका॥
बेदबिदित कहि सकल बिधाना। कहेउ रचहु पुर बिबिध बिताना॥
सफल रसाल पूगफल केरा। रोपहु बीथिन्ह पुर चहुँ फेरा॥
रचहु मंजु मनि चौकें चारू। कहहु बनावन बेगि बजारू॥
पूजहु गनपति गुर कुलदेवा। सब बिधि करहु भूमिसुर सेवा॥

दो०—ध्वज पताक तोरन कलस सजहु तुरग रथ नाग।
सिर धरि मुनिबर बचन सबु निज निज काजहिं लाग॥६॥

जो मुनीस जेहि आयसु दीन्हा। सो तेहिं काजु प्रथम जनु कीन्हा॥
बिप्र साधु सुर पूजत राजा। करत राम हित मंगल काजा॥
सुनत राम अभिषेक सुहावा। बाज गहागह अवध बधावा॥
राम सीय तन सगुन जनाए। फरकहिं मंगल अंग सुहाए॥
पुलकि सप्रेम परसपर कहहीं। भरत आगमनु सूचक अहहीं॥
भए बहुत दिन अति अवसेरी। सगुन प्रतीति भेंट प्रिय केरी॥
भरत सरिस प्रिय को जग माहीं। इहइ सगुन फलु दूसर नाहीं॥
रामहि बंधु सोच दिन राती। अंडन्हि कमठ हृदउ जेहि भाँती॥

दो०—एहि अवसर मंगलु परम सुनि रहँसेउ रनिवासु।
सोभत लखि बिधु बढ़त जनु बारिधि बीचि बिलासु॥७॥

प्रथम जाइ जिन्ह बचन सुनाए। भूषन बसन भूरि तिन्ह पाए॥
प्रेम पुलकि तन मन अनुरागीं। मंगल कलस सजन सब लागीं॥
चौकें चारु सुमित्राँ पूरी। मनिमय बिबिध भाँति अति रूरी॥
आनँद मगन राम महतारी। दिए दान बहु बिप्र हँकारी॥
पूजीं ग्रामदेबि सुर नागा। कहेउ बहोरि देन बलिभागा॥

जेहि बिधि होइ राम कल्यानू। देहु दया करि सो बरदानू॥
गावहिं मंगल कोकिलबयनीं। बिधुबदनीं मृगसावकनयनीं॥

दो०–राम राज अभिषेकु सुनि हियँ हरषे नर नारि।
लगे सुमंगल सजन सब बिधि अनुकूल बिचारि॥८॥

तब नरनाहँ बसिष्ठु बोलाए। रामधाम सिख देन पठाए॥
गुर आगमनु सुनत रघुनाथा। द्वार आइ पद नायउ माथा॥
सादर अरघ देइ घर आने। सोरह भाँति पूजि सनमाने॥
सेवक सदन स्वामि आगमनू। मंगल मूल अमंगल दमनू॥
तदपि उचित जनु बोलि सप्रीती। पठइअ काज नाथ असि नीती॥
प्रभुता तजि प्रभु कीन्ह सनेहू। भयउ पुनीत आजु यहु गेहू॥
आयसु होइ सो करौं गोसाईं। सेवकु लहइ स्वामि सेवकाईं॥

दो०–सुनि सनेह साने बचन मुनि रघुबरहि प्रसंस।
राम कस न तुम्ह कहहु अस हंस बंस अवतंस॥९॥

बरनि राम गुन सीलु सुभाऊ। बोले प्रेम पुलकि मुनिराऊ॥
भूप सजेउ अभिषेक समाजू। चाहत देन तुम्हहि जुबराजू॥
राम करहु सब संजम आजू। जौं बिधि कुसल निबाहै काजू॥
गुरु सिख देइ राय पहिं गयऊ। राम हृदयँ अस बिसमउ भयऊ॥
जनमे एक संग सब भाई। भोजन सयन केलि लरिकाई॥
करनबेध उपबीत बिआहा। संग संग सब भए उछाहा॥
बिमल बंस यहु अनुचित एकू। बंधु बिहाइ बड़ेहि अभिषेकू॥
प्रभु सप्रेम पछितानि सुहाई। हरउ भगत मन कै कुटिलाई॥

दो०–तेहि अवसर आए लखन मगन प्रेम आनंद।
सनमाने प्रिय बचन कहि रघुकुल कैरव चंद॥१०॥

बाजहिं बाजने बिबिध बिधाना। पुर प्रमोदु नहिं जाइ बखाना॥
भरत आगमनु सकल मनावहिं। आवहुँ बेगि नयन फलु पावहिं॥

हाट बाट घर गलीं अथाईं। कहहिं परसपर लोग लोगाईं॥
कालि लगन भलि केतिक बारा। पूजिहि विधि अभिलाषु हमारा॥
कनक सिंघासन सीय समेता। बैठहिं रामु होइ चित चेता॥
सकल कहहिं कब होइहि काली। विघन मनावहिं देव कुचाली॥
तिन्हहि सोहाइ न अवध बधावा। चोरहि चदिनि राति न भावा॥
सारद बोलि विनय सुर करहीं। बारहिं बार पाय लै परहीं॥

दो०-बिपति हमारि बिलोकि बड़ि मातु करिअ सोइ आजु।
रामु जाहिं बन राजु तजि होइ सकल सुरकाजु॥११॥

सुनि सुर विनय ठाढ़ि पछिताती। भइउँ सरोज विपिन हिमराती॥
देखि देव पुनि कहहिं निहोरी। मातु तोहि नहिं थोरिउ खोरी॥
बिसमय हरष रहित रघुराऊ। तुम्ह जानहु सब राम प्रभाऊ॥
जीव करम बस सुख दुख भागी। जाइअ अवध देव हित लागी॥
बार बार गहि चरन सँकोची। चली बिचारि बिबुध मति पोची॥
ऊँच निवासु नीचि करतूती। देखि न सकहिं पराइ बिभूती॥
आगिल काजु बिचारि बहोरी। करिहहिं चाह कुसल कबि मोरी॥
हरषि हृदयँ दसरथ पुर आई। जनु ग्रह दसा दुसह दुखदाई॥

दो०-नामु मंथरा मंदमति चेरी कैकइ केरि।
अजस पेटारी ताहि करि गई गिरा मति फेरि॥१२॥

दो०-सभय रानि कह कहसि किन कुसल राम महिपालु।
लखनु भरतु रिपुदमनु सुनि भा कुबरी उर सालु॥१३॥

कत सिख देइ हमहि कोउ माई। गालु करब केहि कर बलु पाई॥
रामहि छाडि कुसल केहि आजू। जेहि जनेसु देइ जुबराजू॥
भयउ कौसिलहि बिधि अति दाहिन। देखत गरब रहत उर नाहिन॥
देखहु कस न जाइ सब सोभा। जो अवलोकि मोर मनु छोभा॥
पूतु बिदेस न सोचु तुम्हारे। जानति हहु बस नाहु हमारें॥
नीद बहुत प्रिय सेज तुराई। लखहु न भूप कपट चतुराई॥
सुनि प्रिय बचन मलिन मनु जानी। झुकी रानि अब रहु अरगानी॥
पुनि अस कबहुँ कहसि घरफोरी। तब धरि जीभ कढ़ावउँ तोरी॥

दो०-काने खोरे कूबरे कुटिल कुचाली जानि।
तिय बिसेषि पुनि चेरि कहि भरतमातु मुसुकानि॥१४॥

प्रियबादिनि सिख दीन्हिउँ तोही। सपनेहुँ तो पर कोपु न मोही॥
सुदिनु सुमंगल दायकु सोई। तोर कहा फुर जेहि दिन होई॥
जेठ स्वामि सेवक लघु भाई। यह दिनकर कुल रीति सुहाई॥
राम तिलकु जौं साँचेहुँ काली। देउँ मागु मन भावत आली॥
कौसल्या सम सब महतारी। रामहि सहज सुभायँ पिआरी॥
मो पर करहिं सनेहु बिसेषी। मैं करि प्रीति परीछा देखी॥
जौं बिधि जनमु देइ करि छोहू। होहुँ राम सिय पूत पुतोहू॥
प्रान ते अधिक रामु प्रिय मोरें। तिन्ह के तिलक छोभु कस तोरें॥

दो०-भरत सपथ तोहि सत्य कहु परिहरि कपट दुराउ।
हरष समय बिसमउ करसि कारन मोहि सुनाउ॥१५॥

एकहिं बार आस सब पूजी। अब कछु कहब जीभ करि दूजी॥
फोरै जोगु कपारु अभागा। भलेउ कहत दुख रउरेहि लागा॥

कहहिं झूठि फुरि बात बनाई। ते प्रिय तुम्हहि करुइ मैं माई ॥
हमहुँ कहबि अब ठकुरसोहाती। नाहिं त मौन रहब दिनु राती ॥
करि कुरूप बिधि परबस कीन्हा। बवा सो लुनिअ लहिअ जो दीन्हा ॥
कोउ नृप होउ हमहि का हानी। चेरि छाड़ि अब होब कि रानी ॥
जारैं जोगु सुभाउ हमारा। अनभल देखि न जाइ तुम्हारा ॥
ताते कछुक बात अनुसारी। छमिअ देबि बड़ि चूक हमारी ॥

दो०-गूढ़ कपट प्रिय बचन सुनि तीय अधरबुधि रानि।
सुरमाया बस बैरिनिहि सुहृद जानि पतिआनि ॥१६॥

सादर पुनि पुनि पूँछति ओही। सबरी गान मृगी जनु मोही ॥
तसि मति फिरी अहइ जसि भाबी। रहसी चेरि घात जनु फाबी ॥
तुम्ह पूँछहु मैं कहत डेराऊँ। धरेहु मोर घरफोरी नाऊँ ॥
सजि प्रतीति बहुबिधि गढ़ि छोली। अवध साढ़साती तब बोली ॥
प्रिय सिय रामु कहा तुम्ह रानी। रामहि तुम्ह प्रिय सो फुरि बानी ॥
रहा प्रथम अब ते दिन बीते। समउ फिरें रिपु होहिं पिरीते ॥
भानु कमल कुल पोषनिहारा। बिनु जल जारि करइ सोइ छारा ॥
जरि तुम्हारि चह सवति उखारी। रूँधहु करि उपाउ बर बारी ॥

दो०-तुम्हहि न सोचु सोहाग बल निज बस जानहु राउ।
मन मलीन मुह मीठ नृपु राउर सरल सुभाउ ॥१७॥

चतुर गँभीर राम महतारी। बीचु पाइ निज बात सँवारी ॥
पठए भरतु भूप ननिअउरें। राम मातु मत जानब रउरें ॥
सेवहिं सकल सवति मोहि नीकें। गरबित भरत मातु बल पी कें ॥
सालु तुम्हार कौसिलहि माई। कपट चतुर नहिं होइ जनाई ॥
राजहि तुम्ह पर प्रेमु बिसेषी। सवति सुभाउ सकइ नहिं देखी ॥
रचि प्रपंचु भूपहि अपनाई। राम तिलक हित लगन धराई ॥

यह कुल उचित राम कहुँ टीका । सबहि सोहाइ मोहि सुठि नीका ॥
आगिलि बात समुझि डरु मोही । देउ दैउ फिरि सो फलु ओही ॥

दो०–रचि पचि कोटिक कुटिलपन कीन्हेसि कपट प्रबोधु ।
कहिसि कथा सत सवति कै जेहि बिधि बाढ़ बिरोधु ॥१८॥

भावी बस प्रतीति उर आई । पूँछ रानि पुनि सपथ देवाई ॥
का पूँछहु तुम्ह अबहुँ न जाना । निज हित अनहित पसु पहिचाना ॥
भयउ पाखु दिन सजत समाजू । तुम्ह पाई सुधि मोहि सन आजू ॥
खाइअ पहिरिअ राज तुम्हारें । सत्य कहें नहिं दोषु हमारे ॥
जौं असत्य कछु कहब बनाई । तौ बिधि देइहि हमहि सजाई ॥
रामहि तिलक कालि जौं भयऊ । तुम्ह कहुँ बिपति बीजु बिधि बयऊ ॥
रेख खँचाइ कहउँ बलु भाषी । भामिनि भइहु दूध कइ माखी ॥
जौं सुत सहित करहु सेवकाई । तौ घर रहहु न आन उपाई ॥

दो०–कद्रूँ बिनतहि दीन्ह दुखु तुम्हहि कौसिलाँ देब ।
भरतु बंदिगृह सेइहहिं लखनु रामकै नेब ॥१९॥

कैकयसुता सुनत कटु बानी । कहि न सकइ कछु सहमि सुखानी ॥
तन पसेउ कदली जिमि काँपी । कुबरीं दसन जीभ तब चाँपी ॥
कहि कहि कोटिक कपट कहानी । धीरजु धरहु प्रबोधिसि रानी ॥
फिरा करमु प्रिय लागि कुचाली । बकिहि सराहइ मानि मराली ॥
सुनु मंथरा बात फुरि तोरी । दहिनि आँखि नित फरकइ मोरी ॥
दिन प्रति देखउँ राति कुसपने । कहउँ न तोहि मोह बस अपने ॥
काह करौं सखि सूध सुभाऊ । दाहिन बाम न जानउँ काऊ ॥

दो०– अपनें चलत न आजु लगि अनभल काहुक कीन्ह ।
केहिं अघ एकहि बार मोहि दैअँ दुसह दुखु दीन्ह ॥२०॥

नैहर जनमु भरब बरु जाई । जिअत न करबि सवति सेवकाई ॥
अरि बस दैउ जिआवत जाही । मरनु नीक तेहि जीवन चाही ॥
दीन बचन कह बहुबिधि रानी । सुनि कुबरीं तियमाया ठानी ॥
अस कस कहहु मानि मन ऊना । सुखु सोहागु तुम्ह कहुँ दिन दूना ॥
जेहिं राउर अति अनभल ताका । सोइ पाइहि यहु फलु परिपाका ॥
जब तें कुमत सुना मैं स्वामिनि । भूख न बासर नींद न जामिनि ॥
पूँछेउँ गुनिन्ह रेख तिन्ह खाँची । भरत भुआल होहिं यह साँची ॥
भामिनि करहु त कहौं उपाऊ । है तुम्हरीं सेवा बस राऊ ॥

दो०–परउँ कूप तुअ बचन पर सकउँ पूत पति त्यागि ।
कहसि मोर दुखु देखि बड़ कस न करब हित लागि ॥२१॥

कुबरीं करि कबुली कैकेई । कपट छुरी उर पाहन टेई ॥
लखइ न रानि निकट दुखु कैसें । चरइ हरित तिन बलिपसु जैसें ॥
सुनत बात मृदु अंत कठोरी । देति मनहुँ मधु माहुर घोरी ॥
कहइ चेरि सुधि अहइ कि नाहीं । स्वामिनि कहिहु कथा मोहि पाहीं ॥
दुइ बरदान भूप सन थाती । मागहु आजु जुड़ावहु छाती ॥
सुतहि राजु रामहि बनबासू । देहु लेहु सब सवति हुलासू ॥
भूपति राम सपथ जब करई । तब मागेहु जेहिं बचनु न टरई ॥
होइ अकाजु आजु निसि बीतें । बचनु मोर प्रिय मानेहु जी तें ॥

दो०–बड़ कुघातु करि पातकिनि कहेसि कोपगृहँ जाहु ।
काजु सँवारेहु सजग सबु सहसा जनि पतिआहु ॥२२॥

कुबरिहि रानि प्रानप्रिय जानी । बार बार बड़ि बुद्धि बखानी ॥
तोहि सम हित न मोर संसारा । बहे जात कइ भइसि अधारा ॥
जौं बिधि पुरब मनोरथु काली । करौं तोहि चख पूतरि आली ॥
बहुबिधि चेरिहि आदरु देई । कोपभवन गवनी कैकेई ॥

त्रिपति बीजु बरषा रितु चेरी । भुइँ भइ कुमति कैकई केरी ॥
पाइ कपट जलु अंकुर जामा । बर दोउ दल दुख फल परिनामा ॥
कोप समाजु साजि सबु सोई । राजु करत निज कुमति बिगोई ॥
राउर नगर कोलाहलु होई । यह कुचालि कछु जान न कोई ॥

दो०-प्रमुदित पुर नर नारि सब सजहिं सुमंगलचार ।
एक प्रबिसहिं एक निर्गमहिं भीर भूप दरबार ॥२३॥

बाल सखा सुनि हियँ हरषाही । मिलि दस पाँच राम पहिं जाहीं ॥
प्रभु आदरहिं प्रेमु पहिचानी । पूँछहिं कुसल खेम मृदु बानी ॥
फिरहिं भवन प्रिय आयसु पाई । करत परसपर राम बड़ाई ॥
को रघुबीर सरिस संसारा । सीलु सनेहु निबाह निहारा ॥
जेहिं जेहिं जोनि करम बस भ्रमही । तहँ तहँ ईसु देउ यह हमहीं ॥
सेवक हम स्वामी सियनाहू । होउ नात यह ओर निबाहू ॥
अस अभिलाषु नगर सब काहू । कैकयसुता हृदयँ अति दाहू ॥
को न कुसंगति पाइ नसाई । रहइ न नीच मतें चतुराई ॥

दो०-साँझ समय सानंद नृपु गयउ कैकई गेहँ ।
गवनु निठुरता निकट किय जनु धरि देह सनेहँ ॥२४॥

कोपभवन सुनि सकुचेउ राऊ । भय बस अगहुड़ परइ न पाऊ ॥
सुरपति बसइ बाहँबल जाकें । नरपति सकल रहहिं रुख ताकें ॥
सो सुनि तिय रिस गयउ सुखाई । देखहु काम प्रताप बड़ाई ॥
सूल कुलिस असि अँगवनिहारे । ते रतिनाथ सुमन सर मारे ॥
सभय नरेसु प्रिया पहिं गयऊ । देखि दसा दुखु दारुन भयऊ ॥
भूमि सयन पटु मोट पुराना । दिए डारि तन भूषन नाना ॥
कुमतिहि कसि कुबेषता फाबी । अनअहिवातु सूच जनु भाबी ॥
जाइ निकट नृपु कह मृदु बानी । प्रानप्रिया केहि हेतु रिसानी ॥

छं०-केहि हेतु रानि रिसानि परसत पानि पतिहि नेवारई ॥
मानहुँ सरोष भुअंग भामिनि विपम भाँति निहारई ॥
दोउ वासना रसना दसन वर मरम ठाहरु देखई ॥
तुलसी नृपति भवतव्यता वस काम कौतुक लेखई ॥

सो०-वार वार कह राउ सुमुखि सुलोचनि पिकवचनि ।
कारन मोहि सुनाउ गजगामिनि निज कोप कर ॥२५॥

अनहित तोर प्रिया केइँ कीन्हा । केहि दुइ सिर केहि जमु चह लीन्हा ॥
कहु केहि रंकहि करौं नरेसू । कहु केहि नृपहि निकासौं देसू ॥
सकउँ तोर अरि अमरउ मारी । काह कीट वपुरे नर नारी ॥
जानसि मोर सुभाउ वरोरू । मनु तव आनन चंद चकोरू ॥
प्रिया प्रान सुत सरवसु मोरें । परिजन प्रजा सकल वस तोरें ॥
जौं कछु कहौं कपटु करि तोही । भामिनि राम सपथ सत मोही ॥
विहसि मागु मनभावति वाता । भूषन सजहि मनोहर गाता ॥
घरी कुघरी समुझि जियँ देखू । वेगि प्रिया परिहरहि कुवेषू ॥

दो०-यह सुनि मन गुनि सपथ वडि विहसि उठी मतिमंद ।
भूषन सजति विलोकि मृगु मनहुँ किरातिनि फंद ॥२६॥

पुनि कह राउ सुहृद जियँ जानी । प्रेम पुलकि मृदु मंजुल वानी ॥
भामिनि भयउ तोर मनभावा । घर घर नगर अनंद वधावा ॥
रामहि देउँ कालि जुवराजू । सजहि सुलोचनि मंगल साजू ॥
दलकि उठेउ सुनि हृदउ कठोरू । जनु छुइ गयउ पाक वरतोरू ॥
ऐसिउ पीर विहसि तेहिं गोई । चोर नारि जिमि प्रगटि न रोई ॥
लखहिं न भूप कपट चतुराई । कोटि कुटिल मनि गुरू पढ़ाई ॥
जद्यपि नीति निपुन नरनाहू । नारिचरित जलनिधि अवगाहू ॥
कपट सनेहु वढ़ाइ वहोरी । वोली विहसि नयन मुहु मोरी ॥

दो०-मागु मागु पै कहहु पिय कबहुँ न देहु न लेहु ।
देन कहेहु बरदान दुइ तेउ पावत संदेहु ॥२७॥

जानेउँ मरमु राउ हँसि कहई । तुम्हहि कोहाब परम प्रिय अहई ॥
थाती राखि न मागिहु काऊ । बिसरि गयउ मोहि भोर सुभाऊ ॥
झूठेहुँ हमहि दोषु जनि देहू । दुइ कै चारि मागि मकु लेहू ॥
रघुकुल रीति सदा चलि आई । प्रान जाहुँ बरु बचनु न जाई ॥
नहिं असत्य सम पातक पुंजा । गिरि सम होहि कि कोटिक गुंजा ॥
सत्यमूल सब सुकृत सुहाए । बेद पुरान बिदित मनु गाए ॥
तेहि पर राम सपथ करि आई । सुकृत सनेह अवधि रघुराई ॥
बात दृढाइ कुमति हँसि बोली । कुमत कुबिहग कुलह जनु खोली ॥

दो०-भूप मनोरथ सुभग बनु सुख सुबिहग समाजु ।
भिल्लिनि जिमि छाड़न चहति बचनु भयंकरु बाजु ॥२८॥

सुनहु प्रानप्रिय भावत जी का । देहु एक बर भरतहि टीका ॥
मागउँ दूसर बर कर जोरी । पुरवहु नाथ मनोरथ मोरी ॥
तापस बेष बिसेषि उदासी । चौदह बरिस रामु बनबासी ॥
सुनि मृदु बचन भूप हियँ सोकू । ससि कर छुअत बिकल जिमि कोकू ॥
गयउ सहमि नहिं कछु कहि आवा । जनु सचान बन झपटेउ लावा ॥
बिबरन भयउ निपट नरपालू । दामिनि हनेउ मनहुँ तरु तालू ॥
माथे हाथ मूदि दोउ लोचन । तनु धरि सोचु लाग जनु सोचन ॥
मोर मनोरथु सुरतरु फूला । फरत करिनि जिमि हतेउ समूला ॥
अवध उजारि कीन्हि कैकेईं । दीन्हिसि अचल बिपति कै नेईं ॥

दो०-कवनें अवसर का भयउ गयउँ नारि बिस्वास ।
जोग सिद्धि फल समय जिमि जतिहि अबिद्या नास ॥२९॥

एहि बिधि राउ मनहिं मन झाँखा । देखि कुभाँति कुमति मन माखा ॥
भरतु कि राउर पूत न होंही । आनेहु मोल बेसाहि कि मोही ॥

जो मुनि सरु अस लाग तुम्हारें। काहे न बोलहु बचनु सँभारें॥
देहु उतरु अनु करहु कि नाहीं। सत्यसंध तुम्ह रघुकुल माहीं॥
देन कहेहु अब जनि बरु देहू। तजहु सत्य जग अपजसु लेहू॥
सत्य सराहि कहेहु बरु देना। जानेहु लेइहि मागि चबेना॥
सिबि दधीचि बलि जो कछु भाषा। तनु धनु तजेउ बचन पनु राखा॥
अति कटु बचन कहति कैकेई। मानहुँ लोन जरे पर देई॥

दो०-धरम धुरंधर धीर धरि नयन उघारे रायँ।
सिरु धुनि लीन्हि उसास असि मारेसि मोहि कुठायँ॥३०॥

आगें दीखि जरत रिस भारी। मनहुँ रोष तरवारि उघारी॥
मूठि कुबुद्धि धार निठुराई। धरी कूबरीं सान बनाई॥
लखी महीप कराल कठोरा। सत्य कि जीवनु लेइहि मोरा॥
बोले राउ कठिन करि छाती। बानी सबिनय तासु सोहाती॥
प्रिया बचन कस कहसि कुभाँती। भीर प्रतीति प्रीति करि हाँती॥
मोरें भरतु रामु दुइ आँखी। सत्य कहउँ करि संकरु साखी॥
अवसि दूतु मैं पठइब प्राता। ऐहहिं बेगि सुनत दोउ भ्राता॥
सुदिन सोधि सबु साजु सजाई। देउँ भरत कहुँ राजु बजाई॥

दो०-लोभु न रामहि राजु कर बहुत भरत पर प्रीति।
मैं बड़ छोट बिचारि जियँ करत रहेउँ नृपनीति॥३१॥

राम सपथ सत कहउँ सुभाऊ। राममातु कछु कहेउ न काऊ॥
मैं सबु कीन्ह तोहि बिनु पूँछें। तेहि तें परेउ मनोरथु छूछें॥
रिस परिहरु अब मंगल साजू। कछु दिन गएँ भरत जुबराजू॥
एकहि बात मोहि दुखु लागा। बर दूसर असमंजस मागा॥
अजहूँ हृदउ जरत तेहि आँचा। रिस परिहास कि साँचेहुँ साँचा॥
कहु तजि रोषु राम अपराधू। सबु कोउ कहइ रामु सुठि साधू॥
तुहूँ सराहसि करसि सनेहू। अब सुनि मोहि भयउ संदेहू॥
जासु सुभाउ अरिहि अनुकूला। सो किमि करिहि मातु प्रतिकूला॥

दो०-प्रिया हास रिस परिहरहि मागु विचारि विवेकु।
जेहिं देखौं अब नयन भरि भरत राज अभिषेकु ॥३२॥

जिऐ मीन वरु वारि विहीना। मनि विनु फनिकु जिऐ दुख दीना॥
कहउँ सुभाउ न छलु मन माहीं। जीवनु मोर राम विनु नाहीं॥
समुझि देखु जियँ प्रिया प्रवीना। जीवनु राम दरस आधीना॥
सुनि मृदु वचन कुमति अति जरई। मनहुँ अनल आहुति घृत परई॥
कहइ करहु किन कोटि उपाया। इहाँ न लागिहि राउरि माया॥
देहु कि लेहु अजसु करि नाहीं। मोहि न बहुत प्रपंच सोहाहीं॥
रामु साधु तुम्ह साधु सयाने। राममातु भलि सब पहिचाने॥
जस कौसिलाँ मोर भल ताका। तस फलु उन्हहि देउँ करि साका॥

दो०-होत प्रातु मुनिवेष धरि जौं न रामु वन जाहिं।
मोर मरनु राउर अजस नृप समुझिअ मन माहिं ॥२३॥

अस कहि कुटिल भई उठि ठाढ़ी। मानहुँ रोष तरंगिनि बाढ़ी॥
पाप पहार प्रगट भइ सोई। भरी क्रोध जल जाइ न जोई॥
दोउ वर कूल कठिन हठ धारा। भवँर कूबरी वचन प्रचारा॥
ढाहत भूपरूप तरु मूला। चली विपति वारिधि अनुकूला॥
लखी नरेस बात फुरि साँची। तिय मिस मीचु सीस पर नाची॥
गहि पद विनय कीन्ह बैठारी। जनि दिनकर कुल होसि कुठारी॥
मागु माथ अबहीं देउँ तोही। राम विरहँ जनि मारसि मोही॥
राखु राम कहुँ जेहि तेहि भाँती। नाहिं त जरिहि जनम भरि छाती॥

दो०-देखी व्याधि असाध नृपु परेउ धरनि धुनि माथ।
कहत परम आरत वचन राम राम रघुनाथ ॥३४॥

व्याकुल राउ सिथिल सब गाता। करिनि कलपतरु मनहुँ निपाता॥
कंठु सूख मुख आव न बानी। जनु पाठीनु दीन विनु पानी॥

पुनि कह कटु कठोर कैकेई। मनहुँ घाय महुँ माहुर देई॥
जौं अतहुँ अस करतबु रहेऊ। मागु मागु तुम्ह केहिं बल कहेऊ॥
दुइ कि होइ एक समय भुआला। हँसब ठठाइ फुलाउब गाला॥
दानि कहाउब अरु कृपनाई। होइ कि खेम कुसल रौताई॥
छाड़हु बचनु कि धीरजु धरहू। जनि अबला जिमि करुना करहू॥
तनु तिय तनय धामु धनु धरनी। सत्यसंध कहुँ तृन सम बरनी॥

दो०-मरम बचन सुनि राउ कह कहु कछु दोषु न तोर।
लागेउ तोहि पिसाच जिमि कालु कहावत मोर॥३५॥

चहत न भरत भूपतहि भोरें। बिधि बस कुमति बसी जिय तोरें॥
सो सबु मोर पाप परिनामू। भयउ कुठाहर जेहिं बिधि बामू॥
सुबस बसिहि फिरि अवध सुहाई। सब गुन धाम राम प्रभुताई॥
करिहहिं भाइ सकल सेवकाई। होइहि तिहुँ पुर राम बड़ाई॥
तोर कलंकु मोर पछिताऊ। मुएहुँ न मिटिहि न जाइहि काऊ॥
अब तोहि नीक लाग करु सोई। लोचन ओट बैठु मुहु गोई॥
जब लगि जिऔं कहउँ कर जोरी। तब लगि जनि कछु कहसि बहोरी॥
फिरि पछितैहसि अंत अभागी। मारसि गाइ नहारू लागी॥

दो०-परेउ राउ कहि कोटि बिधि काहे करसि निदानु।
कपट सयानि न कहति कछु जागति मनहुँ मसानु॥३६॥

राम राम रट बिकल भुआलू। जनु बिनु पंख बिहंग बेहालू॥
हृदयँ मनाव भोरु जनि होई। रामहि जाइ कहै जनि कोई॥
उदउ करहु जनि रबि रघुकुल गुर। अवध बिलोकि सूल होइहि उर॥
भूप प्रीति कैकइ कठिनाई। उभय अवधि बिधि रची बनाई॥
बिलपत नृपहि भयउ भिनुसारा। बीना बेनु संख धुनि द्वारा॥
पढहिं भाट गुन गावहिं गायक। सुनत नृपहि जनु लागहिं सायक॥

मंगल सकल सोहहिं न कैसे। सहगामिनिहि बिभूषन जैसें ॥
तेहि निसि नीद परी नहिं काहू। राम दरस लालसा उछाहू ॥

दो०—द्वार भीर सेवक सचिव कहहिं उदित रबि देखि।
जागेउ अजहुँ न अवधपति कारनु कवनु बिसेषि ॥३७॥

पछिले पहर भूपु नित जागा। आजु हमहि बड अचरजु लागा ॥
जाहु सुमंत्र जगावहु जाई। कीजिअ काजु रजायसु पाई ॥
गए सुमंत्रु तब राउर माहीं। देखि भयावन जात डेराहीं ॥
धाइ खाइ जनु जाइ न हेरा। मानहुँ बिपति बिषाद बसेरा ॥
पूछें कोउ न ऊतरु देई। गए जेहि भवन भूप कैकेई ॥
कहि जयजीव बैठ सिरु नाई। देखि भूप गति गयउ सुखाई ॥
सोच बिकल बिबरन महि परेऊ। मानहुँ कमल मूलु परिहरेऊ ॥
सचिव सभीत सकइ नहिं पूछी। बोली असुभ भरी सुभ छूछी ॥

दो०—परी न राजहि नीद निसि हेतु जान जगदीसु।
रामु रामु रटि भोरु किय कहइ न मरमु महीसु ॥३८॥

आनहु रामहि बेगि बोलाई। समाचार तब पूँछेहु आई ॥
चलेउ सुमंत्रु राय रुख जानी। लखी कुचालि कीन्हि कछु रानी ॥
सोच बिकल मग परइ न पाऊ। रामहि बोलि कहिहि का राऊ ॥
उर धरि धीरजु गयउ दुआरें। पूँछहिं सकल देखि मनु मारें ॥
समाधानु करि सो सबही का। गयउ जहाँ दिनकर कुल टीका ॥
राम सुमंत्रहि आवत देखा। आदरु कीन्ह पिता सम लेखा ॥
निरखि बदनु कहि भूप रजाई। रघुकुलदीपहि चलेउ लेवाई ॥
रामु कुभाँति सचिव सँग जाहीं। देखि लोग जहँ तहँ बिलखाहीं ॥

दो०—जाइ दीख रघुबंसमनि नरपति निपट कुसाजु।
सहमि परेउ लखि सिंघिनिहि मनहुँ बृद्ध गजराजु ॥३९॥

सूखहिं अधर जरइ सबु अंगू। मनहुँ दीन मनिहीन भुअंगू॥
सरुष समीप दीखि कैकेई। मानहु मीचु घरीं गनि लेई॥
करुनामय मृदु राम सुभाऊ। प्रथम दीख दुखु सुना न काऊ॥
तदपि धीर धरि समउ बिचारी। पूँछी मधुर बचन महतारी॥
मोहि कहु मातु तात दुख कारन। करिअ जतन जेहिं होइ निवारन॥
सुनहु राम सबु कारनु एहू। राजहि तुम्ह पर बहुत सनेहू॥
देन कहेन्हि मोहि दुइ बरदाना। मागेउँ जो कछु मोहि सोहाना॥
सो सुनि भयउ भूप उर सोचू। छाड़ि न सकहि तुम्हार सँकोचू॥

दो०–सुत सनेहु इत बचनु उत संकट परेउ नरेसु।
सकहु त आयसु धरहु सिर मेटहु कठिन कलेसु॥४०॥

निधरक बैठि कहइ कटु बानी। सुनत कठिनता अति अकुलानी॥
जीभ कमान बचन सर नाना। मनहुँ महिप मृदु लच्छ समाना॥
जनु कठोरपनु धरें सरीरू। सिखइ धनुषबिद्या बर बीरू॥
सबु प्रसंगु रघुपतिहि सुनाई। बैठि मनहुँ तनु धरि निठुराई॥
मन मुसुकाइ भानुकुल भानू। रामु सहज आनंद निधानू॥
बोले बचन बिगत सब दूषन। मृदु मंजुल जनु बाग बिभूषन॥
सुनु जननी सोइ सुतु बड़भागी। जो पितु मातु बचन अनुरागी॥
तनय मातु पितु तोषनिहारा। दुर्लभ जननि सकल संसारा॥

दो०–मुनिगन मिलनु बिसेषि बन सबहि भाँति हित मोर।
तेहि महँ पितु आयसु बहुरि संमत जननी तोर॥४१॥

भरतु प्रानप्रिय पावहिं राजू। बिधि सब बिधि मोहि सनमुख आजू॥
जौं न जाउँ बन ऐसेहु काजा। प्रथम गनिअ मोहि मूढ़ समाजा॥
सेवहिं अरँडु कलपतरु त्यागी। परिहरि अमृत लेहिं बिषु मागी॥
तेउ न पाइ अस समउ चुकाहीं। देखु बिचारि मातु मन माहीं॥

अंत एक दुखु मोहि बिसेषी । निपट बिकल नरनायकु देखी ॥
थोरिहिं बात पितहि दुख भारी । होति प्रतीति न मोहि महतारी ॥
राउ धीर गुन उदधि अगाधू । भा मोहि तें कछु बड अपराधू ॥
जाते मोहि न कहत कछु राऊ । मोरि सपथ तोहि कहु सतिभाऊ ॥

दो०–सहज सरल रघुबर बचन कुमति कुटिल करि जान ।
चलइ जोंक जल बक्रगति जद्यपि सलिलु समान ॥४२॥

रहसी रानि राम रुख पाई । बोली कपट सनेहु जनाई ॥
सपथ तुम्हार भरत कै आना । हेतु न दूसर मै कछु जाना ॥
तुम्ह अपराध जोगु नहिं ताता । जननी जनक बंधु सुखदाता ॥
राम सत्य सबु जो कछु कहहू । तुम्ह पितु मातु बचन रत अहहू ॥
पितहि बुझाइ कहहु बलि सोई । चौथेंपन जेहिं अजसु न होई ॥
तुम्ह सम सुअन सुकृत जेहिं दीन्हे । उचित न तासु निरादरु कीन्हे ॥
लागहिं कुमुख बचन सुभ कैसे । मगहँ गयादिक तीरथ जैसे ॥
रामहि मातु बचन सब भाए । जिमि सुरसरि गत सलिल सुहाए ॥

दो०–गइ मुरुछा रामहि सुमिरि नृप फिरि करवट लीन्ह ।
सचिव राम आगमन कहि बिनय समयसम कीन्ह ॥४३॥

अवनिप अकनि रामु पगु धारे । धरि धीरजु तब नयन उघारे ॥
सचिवँ सँभारि राउ बैठारे । चरन परत नृप रामु निहारे ॥
लिए सनेह बिकल उर लाई । गै मनि मनहुँ फनिक फिरि पाई ॥
रामहि चितइ रहेउ नरनाहू । चला बिलोचन बारि प्रबाहू ॥
सोक बिबस कछु कहै न पारा । हृदयँ लगावत बारहिं बारा ॥
बिधिहि मनाव राउ मन माहीं । जेहिं रघुनाथ न कानन जाहीं ॥
सुमिरि महेसहि कहइ निहोरी । बिनती सुनहु सदासिव मोरी ॥
आसुतोष तुम्ह अवढर दानी । आरति हरहु दीन जनु जानी ॥

दो०–तुम्ह प्रेरक सब के हृदयँ सो मति रामहि देहु।
बचनु मोर तजि रहहिं घर परिहरि सीलु सनेहु ॥४४॥

अजसु होउ जग सुजसु नसाऊ। नरक परौं बरु सुरपुरु जाऊ ॥
सब दुख दुसह सहावहु मोही। लोचन ओट रामु जनि होंही ॥
अस मन गुनइ राउ नहिं बोला। पीपर पात सरिस मनु डोला ॥
रघुपति पितहि प्रेमबस जानी। पुनि कछु कहिहि मातु अनुमानी ॥
देस काल अवसर अनुसारी। बोले बचन बिनीत बिचारी ॥
तात कहउँ कछु करउँ ढिठाई। अनुचितु छमब जानि लरिकाई ॥
अति लघु बात लागि दुखु पावा। काहुँ न मोहि कहि प्रथम जनावा ॥
देखि गोसाइँहि पूँछिउँ माता। सुनि प्रसंगु भए सीतल गाता ॥

दो०–मंगल समय सनेह बस सोच परिहरिअ तात।
आयसु देइअ हरषि हियँ कहि पुलके प्रभु गात ॥४५॥

धन्य जनमु जगतीतल तासू। पितहि प्रमोदु चरित सुनि जासू ॥
चारि पदारथ करतल ताकें। प्रिय पितु मातु प्रान सम जाकें ॥
आयसु पालि जनम फलु पाई। ऐहउँ बेगिहिं होउ रजाई ॥
बिदा मातु सन आवउँ मागी। चलिहउँ बनहि बहुरि पग लागी ॥
अस कहि राम गवनु तब कीन्हा। भूप सोक बस उतरु न दीन्हा ॥
नगर ब्यापि गइ बात सुतीछी। छुअत चढ़ी जनु सब तन बीछी ॥
सुनि भए बिकल सकल नर नारी। बेलि बिटप जिमि देखि दवारी ॥
जो जहँ सुनइ धुनइ सिरु सोई। बड़ बिषादु नहिं धीरजु होई ॥

दो०–मुख सुखाहिं लोचन स्रवहिं सोकु न हृदयँ समाइ।
मनहुँ करुन रस कटकई उतरी अवध बजाइ ॥४६॥

मिलेहि माझ बिधि बात बेगारी। जहँ तहँ देहिं कैकइहि गारी ॥
एहि पापिनिहि बूझि का परेऊ। छाइ भवन पर पावकु धरेऊ ॥
निज कर नयन काढ़ि चह दीखा। डारि सुधा बिषु चाहत चीखा ॥

कुटिल कठोर कुबुद्धि अभागी। भइ रघुबंस बेनु बन आगी ॥
पालव बैठि पेड़ु एहिं काटा। सुख महुँ सोक ठाटु धरि ठाटा ॥
सदा रामु एहि प्रान समाना। कारन कवन कुटिलपनु ठाना ॥
सत्य कहहिं कवि नारि सुभाऊ। सब बिधि अगहु अगाध दुराऊ ॥
निज प्रतिबिंबु बरुकु गहि जाई। जानि न जाइ नारि गति भाई ॥

दो०—काह न पावकु जारि सक का न समुद्र समाइ।
का न करै अबला प्रबल केहि जग कालु न खाइ ॥४७॥

का सुनाइ बिधि काह सुनावा। का देखाइ चह काह देखावा ॥
एक कहहि भल भूप न कीन्हा। बरु बिचारि नहिं कुमतिहि दीन्हा ॥
जो हठि भयउ सकल दुख भाजनु। अबला बिबस ग्यानु गुनु गा जनु ॥
एक धरम परमिति पहिचाने। नृपहि दोसु नहिं देहिं सयाने ॥
सिबि दधीचि हरिचंद कहानी। एक एक सन कहहिं बखानी ॥
एक भरत कर संमत कहहीं। एक उदास भायँ सुनि रहहीं ॥
कान मूदि कर रद गहि जीहा। एक कहहिं यह बात अलीहा ॥
सुकृत जाहिं अस कहत तुम्हारे। रामु भरत कहुँ प्रानपिआरे ॥

दो०—चंदु चवै बरु अनल कन सुधा होइ बिषतूल।
सपनेहुँ कबहुँ न करहिं किछु भरतु राम प्रतिकूल ॥४८॥

एक बिधातहि दूषनु देहीं। सुधा देखाइ दीन्ह बिषु जेहीं ॥
खरभरु नगर सोचु सब काहू। दुसह दाहु उर मिटा उछाहू ॥
बिप्रबधू कुलमान्य जठेरी। जे प्रिय परम कैकई केरी ॥
लगीं देन सिख सीलु सराही। बचन बानसम लागहिं ताही ॥
भरतु न मोहि प्रिय राम समाना। सदा कहहु यहु सबु जगु जाना ॥
करहु राम पर सहज सनेहू। केहिं अपराध आजु बनु देहू ॥
कबहुँ न कियहु सवति आरेसू। प्रीति प्रतीति जान सबु देसू ॥
कौसल्याँ अब काह बिगारा। तुम्ह जेहि लागि बज्र पुर पारा ॥

दो०—सीय कि पिय सँगु परिहरिहि लखनु कि रहिहहिं धाम।
राजु कि भूँजब भरत पुर नृपु कि जिइहि बिनु राम ॥४९॥

अस बिचारि उर छाड़हु कोहू। सोक कलंक कोठि जनि होहू॥
भरतहि अवसि देहु जुबराजू। कानन काह राम कर काजू॥
नाहिन रामु राज के भूखे। धरम धुरीन बिषय रस रूखे॥
गुर गृह बसहुँ रामु तजि गेहू। नृप सन अस बरु दूसर लेहू॥
जौं नहिं लगिहहु कहें हमारे। नहिं लागिहि कछु हाथ तुम्हारे॥
जौं परिहास कीन्हि कछु होई। तौ कहि प्रगट जनावहु सोई॥
राम सरिस सुत कानन जोगू। काह कहिहि सुनि तुम्ह कहुँ लोगू॥
उठहु बेगि सोइ करहु उपाई। जेहि बिधि सोकु कलंकु नसाई॥

छं०—जेहि भाँति सोकु कलंकु जाइ उपाय करि कुल पालही।
हठि फेरु रामहि जात बन जनि बात दूसरि चालही॥
जिमि भानु बिनु दिनु प्रान बिनु तनु चंद बिनु जिमि जामिनी।
तिमि अवध तुलसीदास प्रभु बिनु समुझि धौं जियँ भामिनी॥

सो०—सखिन्ह सिखावनु दीन्ह सुनत मधुर परिनाम हित।
तेहिं कछु कान न कीन्ह कुटिल प्रबोधी कूबरी ॥५०॥

दो०—नव गयंदु रघुबीर मनु राजु अलान समान।
छूट जानि बन गवनु सुनि उर अनंदु अधिकान ॥५१॥

रघुकुलतिलक जोरि दोउ हाथा। मुदित मातु पद नायउ माथा ॥
दीन्हि असीस लाइ उर लीन्हे। भूषन बसन निछावरि कीन्हे ॥
बार बार मुख चुंबति माता। नयन नेह जलु पुलकित गाता ॥
गोद राखि पुनि हृदयँ लगाए। स्रवत प्रेमरस पयद सुहाए ॥
प्रेमु प्रमोदु न कछु कहि जाई। रंक धनद पदबी जनु पाई ॥
सादर सुंदर बदनु निहारी। बोली मधुर बचन महतारी ॥
कहहु तात जननी बलिहारी। कबहिं लगन मुद मंगलकारी ॥
सुकृत सील सुख सींव सुहाई। जनम लाभ कइ अवधि अघाई ॥

दो०—जेहि चाहत नर नारि सब अति आरत एहि भाँति।
जिमि चातक चातकि तृषित बृष्टि सरद रितु स्वाति ॥५२॥

तात जाउँ बलि बेगि नहाहू। जो मन भाव मधुर कछु खाहू ॥
पितु समीप तब जाएहु भैआ। भइ बड़ि बार जाइ बलि मैआ ॥
मातु बचन सुनि अति अनुकूला। जनु सनेह सुरतरु के फूला ॥
सुख मकरंद भरे श्रियमूला। निरखि राम मनु भवँरु न भूला ॥
धरम धुरीन धरम गति जानी। कहेउ मातु सन अति मृदु बानी ॥
पिताँ दीन्ह मोहि कानन राजू। जहँ सब भाँति मोर बड़ काजू ॥
आयसु देहि मुदित मन माता। जेहिं मुद मंगल कानन जाता ॥
जनि सनेह बस डरपसि भोरें। आनँदु अंब अनुग्रह तोरें ॥

दो०—बरष चारिदस बिपिन बसि करि पितु बचन प्रमान।
आइ पाय पुनि देखिहउँ मनु जनि करसि मलान ॥५३॥

बचन बिनीत मधुर रघुबर के। सर सम लगे मातु उर करके ॥
सहमि सूखि सुनि सीतलि बानी। जिमि जवास परें पावस पानी ॥

कहि न जाइ कछु हृदय बिषादू। मनहुँ मृगी सुनि केहरि नादू॥
नयन सजल तन थर थर काँपी। माजहि खाइ मीन जनु मापी॥
धरि धीरजु सुत बदनु निहारी। गदगद बचन कहति महतारी॥
तात पितहि तुम्ह प्रानपिआरे। देखि मुदित नित चरित तुम्हारे॥
राजु देन कहुँ सुभ दिन साधा। कहेउ जान बन केहिं अपराधा॥
तात सुनावहु मोहि निदानू। को दिनकर कुल भयउ कृसानू॥

दो०-निरखि राम रुख सचिवसुत कारनु कहेउ बुझाइ।
सुनि प्रसगु रहि मूक जिमि दसा बरनि नहिं जाइ॥५४॥

राखि न सकइ न कहि सक जाहू। दुहूँ भाँति उर दारुन दाहू॥
लिखत सुधाकर गा लिखि राहू। बिधि गति बाम सदा सब काहू॥
धरम सनेह उभयँ मति घेरी। भइ गति साँप छुछुंदरि केरी॥
राखउँ सुतहि करउँ अनुरोधू। धरमु जाइ अरु बंधु बिरोधू॥
कहउँ जान बन तौ बड़ि हानी। संकट सोच बिबस भइ रानी॥
बहुरि समुझि तिय धरमु सयानी। रामु भरतु दोउ सुत सम जानी॥
सरल सुभाउ राम महतारी। बोली बचन धीर धरि भारी॥
तात जाउँ बलि कीन्हेहु नीका। पितु आयसु सब धरमक टीका॥

दो०-राजु देन कहि दीन्ह बनु मोहि न सो दुख लेसु।
तुम्ह बिनु भरतहि भूपतिहि प्रजहि प्रचंड कलेसु॥५५॥

जौं केवल पितु आयसु ताता। तौ जनि जाहु जानि बड़ि माता॥
जौं पितु मातु कहेउ बन जाना। तौ कानन सत अवध समाना॥
पितु बनदेव मातु बनदेवी। खग मृग चरन सरोरुह सेवी॥
अंतहुँ उचित नृपहि बनबासू। बय बिलोकि हियँ होइ हराँसू॥
बड़भागी बनु अवध अभागी। जो रघुबंसतिलक तुम्ह त्यागी॥
जौं सुत कहौं संग मोहि लेहू। तुम्हरे हृदयँ होइ संदेहू॥

पूत परम प्रिय तुम्ह सबही के। प्रान प्रान के जीवन जी के॥
ते तुम्ह कहहु मातु बन जाऊँ। मैं सुनि बचन बैठि पछिताऊँ॥

दो०—यह बिचारि नहिं करउँ हठ झूठ सनेहु बढ़ाइ।
मानि मातु कर नात बलि सुरति बिसरि जनि जाइ॥५६॥

देव पितर सब तुम्हहि गोसाईं। राखहुँ पलक नयन की नाईं॥
अवधि अबु प्रिय परिजन मीना। तुम्ह करुनाकर धरम धुरीना॥
अस बिचारि सोइ करहु उपाई। सबहि जिअत जेहिं भेंटहु आई॥
जाहु सुखेन बनहि बलि जाऊँ। करि अनाथ जन परिजन गाऊँ॥
सब कर आज सुकृत फल बीता। भयउ कराल कालु बिपरीता॥
बहुबिधि बिलपि चरन लपटानी। परम अभागिनि आपुहि जानी॥
दारुन दुसह दाहु उर ब्यापा। बरनि न जाहिं बिलाप कलापा॥
राम उठाइ मातु उर लाई। कह मृदु बचन बहुरि समुझाई॥

दो०—समाचार तेहि समय सुनि सीय उठी अकुलाइ।
जाइ सासु पद कमल जुग बंदि बैठि सिरु नाइ॥५७॥

दीन्ह असीस सासु मृदु बानी। अति सुकुमारि देखि अकुलानी॥
बैठि नमितमुख सोचति सीता। रूप रासि पति प्रेम पुनीता॥
चलन चहत बन जीवननाथू। केहि सुकृती सन होइहि साथू॥
की तनु प्रान कि केवल प्राना। बिधि करतबु कछु जाइ न जाना॥
चारु चरन नख लेखति धरनी। नूपुर मुखर मधुर कबि बरनी॥
मनहुँ प्रेम बस बिनती करहीं। हमहि सीय पद जनि परिहरहीं॥
मंजु बिलोचन मोचति बारी। बोली देखि राम महतारी॥
तात सुनहु सिय अति सुकुमारी। सास ससुर परिजनहि पिआरी॥

दो०—पिता जनक भूपाल मनि ससुर भानुकुल भानु॥
पति रबिकुल कैरव बिपिन बिधु गुन रूप निधानु॥५८॥

मैं पुनि पुत्रबधू प्रिय पाई। रूप रासि गुन सील सुहाई॥
नयन पुतरि करि प्रीति बढ़ाई। राखेउँ प्रान जानकिहिं लाई॥
कलपबेलि जिमि बहुबिधि लाली। सींचि सनेह सलिल प्रतिपाली॥
फूलत फलत भयउ बिधि बामा। जानि न जाइ काह परिनामा॥
पलँग पीठ तजि गोद हिंडोरा। सियँ न दीन्ह पगु अवनि कठोरा॥
जिअनमूरि जिमि जोगवत रहऊँ। दीप बाति नहिं टारन कहऊँ॥
सोइ सिय चलन चहति बन साथा। आयसु काह होइ रघुनाथा॥
चंद किरन रस रसिक चकोरी। रबि रुख नयन सकइ किमि जोरी॥

दो०-करि केहरि निसिचर चरहिं दुष्ट जंतु बन भूरि।
बिष बाटिकाँ कि सोह सुत सुभग सजीवनि मूरि॥५९॥

बन हित कोल किरात किसोरी। रचीं बिरंचि बिषय सुख भोरी॥
पाहन कृमि जिमि कठिन सुभाऊ। तिन्हहि कलेसु न कानन काऊ॥
कै तापस तिय कानन जोगू। जिन्ह तप हेतु तजा सब भोगू॥
सिय बन बसिहि तात केहि भाँती। चित्रलिखित कपि देखि डेराती॥
सुरसर सुभग बनज बन चारी। डाबर जोगु कि हंसकुमारी॥
अस बिचारि जस आयसु होई। मैं सिख देउँ जानकिहि सोई॥
जौं सिय भवन रहै कह अंबा। मोहि कहँ होइ बहुत अवलंबा॥
सुनि रघुबीर मातु प्रिय बानी। सील सनेह सुधाँ जनु सानी॥

दो०-कहि प्रिय बचन बिबेकमय कीन्हि मातु परितोष।
लगे प्रबोधन जानकिहि प्रगटि बिपिन गुन दोष॥६०॥

मातु समीप कहत सकुचाहीं। बोले समउ समुझि मन माहीं।
राजकुमारि सिखावनु सुनहू। आन भाँति जियँ जनि कछु गुनहू॥
आपन मोर नीक जौं चहहू। बचन हमार मानि गृह रहहू॥
आयसु मोरि सासु सेवकाई। सब बिधि भामिनि भवन भलाई॥
एहि ते अधिक धरमु नहिं दूजा। सादर सासु ससुर पद पूजा॥

जब जब मातु करिहि सुधि मोरी। होइहि प्रेम बिकल मति भोरी ॥
तब तब तुम्ह कहि कथा पुरानी। सुंदरि समुझाएहु मृदु बानी ॥
कहउँ सुभायँ सपथ सत मोही। सुमुखि मातु हित राखउँ तोही ॥

दो०–गुर श्रुति संमत धरम फलु पाइअ बिनहिं कलेस।
हठ बस सब संकट सहे गालव नहुष नरेस ॥६१॥

मैं पुनि करि प्रवान पितु बानी। बेगि फिरब सुनु सुमुखि सयानी ॥
दिवस जात नहिं लागिहि बारा। सुंदरि सिखवनु सुनहु हमारा ॥
जौं हठ करहु प्रेम बस बामा। तौ तुम्ह दुखु पाउब परिनामा ॥
काननु कठिन भयंकरु भारी। घोर घामु हिम बारि बयारी ॥
कुस कंटक मग काँकर नाना। चलब पयादेहिं बिनु पदत्राना ॥
चरन कमल मृदु मंजु तुम्हारे। मारग अगम भूमिधर भारे ॥
कंदर खोह नदीं नद नारे। अगम अगाध न जाहिं निहारे ॥
भालु बाघ बृक केहरि नागा। करहिं नाद सुनि धीरजु भागा ॥

दो०–भूमि सयन बलकल बसन असनु कंद फल मूल।
ते कि सदा सब दिन मिलहिं सबुइ समय अनुकूल ॥६२

नर अहार रजनीचर चरहीं। कपट बेष बिधि कोटिक करहीं ॥
लागइ अति पहार कर पानी। बिपिन बिपति नहिं जाइ बखानी ॥
ब्याल कराल बिहग बन घोरा। निसिचर निकर नारि नर चोरा ॥
डरपहिं धीर गहन सुधि आएँ। मृगलोचनि तुम्ह भीरु सुभाएँ ॥
हंसगवनि तुम्ह नहि बन जोगू। सुनि अपजसु मोहि देइहि लोगू ॥
मानस सलिल सुधाँ प्रतिपाली। जिअइ कि लवन पयोधि मराली ॥
नव रसाल बन बिहरनसीला। सोह कि कोकिल बिपिन करीला ॥
रहहु भवन अस हृदयँ बिचारी। चंदबदनि दुखु कानन भारी ॥

दो०–सहज सुहृद गुर स्वामि सिख जो न करइ सिर मानि।
सो पछिताइ अघाइ उर अवसि होइ हित हानि ॥६३॥

सुनि मृदु बचन मनोहर पिय के । लोचन ललित भरे जल सिय के ॥
सीतल सिख दाहक भइ कैसें । चकइहि सरद चंद निसि जैसें ॥
उतरु न आव बिकल बैदेही । तजन चहत सुचि स्वामि सनेही ॥
बरबस रोकि बिलोचन बारी । धरि धीरजु उर अवनिकुमारी ॥
लागि सासु पग कह कर जोरी । छमबि देबि बड़ि अबिनय मोरी ॥
दीन्हि प्रानपति मोहि सिख सोई । जेहि बिधि मोर परम हित होई ॥
मैं पुनि समुझि दीखि मन माहीं । पिय बियोग सम दुखु जग नाहीं ॥

दो०—प्राननाथ करुनायतन सुंदर सुखद सुजान ।
तुम्ह बिनु रघुकुल कुमुद बिधु सुरपुर नरक समान ॥६४॥

मातु पिता भगिनी प्रिय भाई । प्रिय परिवारु सुहृद समुदाई ॥
सासु ससुर गुर सजन सहाई । सुत सुंदर सुसील सुखदाई ॥
जहँ लगि नाथ नेह अरु नाते । पिय बिनु तियहि तरनिहु ते ताते ॥
तनु धनु धामु धरनि पुर राजू । पति बिहीन सबु सोक समाजू ॥
भोग रोगसम भूषन भारू । जम जातना सरिस संसारू ॥
प्राननाथ तुम्ह बिनु जग माहीं । मो कहुँ सुखद कतहुँ कछु नाहीं ॥
जिय बिनु देह नदी बिनु बारी । तैसिअ नाथ पुरुष बिनु नारी ॥
नाथ सकल सुख साथ तुम्हारें । सरद बिमल बिधु बदनु निहारें ॥

दो०—खग मृग परिजन नगरु बनु बलकल बिमल दुकूल ।
नाथ साथ सुरसदन सम परनसाल सुख मूल ॥६५॥

बनदेबीं बनदेव उदारा । करिहहिं सासु ससुर सम सारा ॥
कुस किसलय साथरी सुहाई । प्रभु सँग मंजु मनोज तुराई ॥
कंद मूल फल अमिअ अहारू । अवध सौध सत सरिस पहारू ॥
छिनु छिनु प्रभु पद कमल बिलोकी । रहिहउँ मुदित दिवस जिमि कोकी ॥
बन दुख नाथ कहे बहुतेरे । भय बिषाद परिताप घनेरे ॥
प्रभु बियोग लवलेस समाना । सब मिलि होहिं न कृपानिधाना ॥

अस जियँ जानि सुजान सिरोमनि । लेइअ संग मोहि छाड़िअ जनि ॥
बिनती बहुत करौं का स्वामी । करुनामय उर अंतरजामी ॥

दो०–राखिअ अवध जो अवधि लगि रहत न जनिअहिं प्रान ।
दीनबंधु सुन्दर सुखद सील सनेह निधान ॥६६॥

मोहि मग चलत न होइहि हारी । छिनु छिनु चरन सरोज निहारी ॥
सबहि भाँति पिय सेवा करिहौं । मारग जनित सकल श्रम हरिहौं ॥
पाय पखारि बैठि तरु छाहीं । करिहउँ बाउ मुदित मन माहीं ॥
श्रम कन सहित स्याम तनु देखें । कहँ दुख समउ प्रानपति पेखें ॥
सम महि तृन तरुपल्लव डासी । पाय पलोटिहि सब निसि दासी ॥
बार बार मृदु मूरति जोही । लागिहि तात बयारि न मोही ॥
को प्रभु सँग मोहि चितवनिहारा । सिंघबधुहि जिमि ससक सिआरा ॥
मैं सुकुमारि नाथ बन जोगू । तुम्हहि उचित तप मो कहुँ भोगू ॥

दो०–ऐसेउ बचन कठोर सुनि जौं न हृदउ बिलगान ।
जौ प्रभु बिषम बियोग दुख सहिहहिं पाँवर प्रान ॥६७॥

अस कहि सीय बिकल भइ भारी । बचन बियोगु न सकी सँभारी ॥
देखि दसा रघुपति जियँ जाना । हठि राखें नहिं राखिहि प्राना ॥
कहेउ कृपाल भानुकुलनाथा । परिहरि सोचु चलहु बन साथा ॥
नहिं बिषाद कर अवसरु आजू । बेगि करहु बन गवन समाजू ॥
कहि प्रिय बचन प्रिया समुझाई । लगे मातु पद आसिष पाई ॥
बेगि प्रजा दुख मेटब आई । जननी निठुर बिसरि जनि जाई ॥
फिरिहि दसा बिधि बहुरि कि मोरी । देखिहउँ नयन मनोहर जोरी ॥
सुदिन सुघरी तात कब होइहि । जननी जिअत बदन बिधु जोही ॥

दो०–बहुरि बच्छ कहि लालु कहि रघुपति रघुबर तात ।
कबहिं बोलाइ लगाइ हियँ हरषि निरखिहउँ गात ॥६८॥

लखि सनेह कातरि महतारी। बचनु न आव बिकल भइ भारी॥
राम प्रबोधु कीन्ह बिधि नाना। समउ सनेहु न जाइ बखाना॥
तब जानकी सासु पग लागी। सुनिअ माय मैं परम अभागी॥
सेवा समय दैअँ बनु दीन्हा। मोर मनोरथ सफल न कीन्हा॥
तजब छोभु जनि छाड़िअ छोहू। करमु कठिन कछु दोसु न मोहू॥
सुनि सिय बचन सासु अकुलानी। दसा कवनि बिधि कहौं बखानी॥
बारहिं बार लाइ उर लीन्ही। धरि धीरजु सिख आसिष दीन्ही॥
अचल होउ अहिवातु तुम्हारा। जब लगि गंग जमुन जल धारा॥

दो०-सीतहि सासु असीस सिख दीन्हि अनेक प्रकार।
चली नाइ पद पदुम सिरु अति हित बारहिं बार॥६९॥

समाचार जब लछिमन पाए। ब्याकुल बिलख बदन उठि धाए॥
कंप पुलक तन नयन सनीरा। गहे चरन अति प्रेम अधीरा॥
कहि न सकत कछु चितवत ठाढ़े। मीनु दीन जनु जल तें काढ़े॥
सोचु हृदयँ बिधि का होनिहारा। सबु सुखु सुकृतु सिरान हमारा॥
मो कहुँ काह कहब रघुनाथा। रखिहहिं भवन कि लेहहिं साथा॥
राम बिलोकि बंधु कर जोरें। देह गेह सब सन तृन तोरें॥
बोले बचनु राम नय नागर। सील सनेह सरल सुख सागर॥
तात प्रेम बस जनि कदराहू। समुझि हृदयँ परिनाम उछाहू॥

दो०-मातु पिता गुरु स्वामि सिख सिर धरि करहिं सुभायँ।
लहेउ लाभु तिन्ह जनम कर नतरु जनमु जग जायँ॥७०॥

अस जियँ जानि सुनहु सिख भाई। करहु मातु पितु पद सेवकाई॥
भवन भरतु रिपुसूदनु नाहीं। राउ बृद्ध मम दुखु मन माहीं॥
मैं बन जाउँ तुम्हहि लेइ साथा। होइ सबहि बिधि अवध अनाथा॥
गुरु पितु मातु प्रजा परिवारू। सब कहुँ परइ दुसह दुख भारू॥

रहहु करहु सब कर परितोषू । नतरु तात होइहि बड़ दोषू ॥
जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी । सो नृप अवसि नरक अधिकारी ॥
रहहु तात असि नीति बिचारी । सुनत लखनु भए ब्याकुल भारी ॥
सिअरे बचन सूखि गए कैसें । परसत तुहिन तामरसु जैसे ॥

दो०—उतरु न आवत प्रेम बस गहे चरन अकुलाइ ।
नाथ दासु मैं स्वामि तुम्ह तजहु त काह बसाइ ॥७१॥

दीन्हि मोहि सिख नीकि गोसाईं । लागि अगम अपनी कदराईं ॥
नरबर धीर धरम धुर धारी । निगम नीति कहुँ ते अधिकारी ॥
मैं सिसु प्रभु सनेहँ प्रतिपाला । मंदर मेरु कि लेहिं मराला ॥
गुर पितु मातु न जानउँ काहू । कहउँ सुभाउ नाथ पतिआहू ॥
जहँ लगि जगत सनेह सगाई । प्रीति प्रतीत निगम निजु गाई ॥
मोरें सबइ एक तुम्ह स्वामी । दीनबंधु उर अंतरजामी ॥
धरम नीति उपदेसिअ ताही । कीरति भूति सुगति प्रिय जाही ॥
मन क्रम बचन चरन रत होई । कृपासिंधु परिहरिअ कि सोई ॥

दो०—करुनासिंधु सुबंधु के सुनि मृदु बचन बिनीत ।
समुझाए उर लाइ प्रभु जानि सनेहँ सभीत ॥७२॥

मागहु बिदा मातु सन जाई । आवहु बेगि चलहु बन भाई ॥
मुदित भए सुनि रघुबर बानी । भयउ लाभ बड़ गइ बड़ि हानी ॥
हरषित हृदयँ मातु पहिं आए । मनहुँ अंध फिरि लोचन पाए ॥
जाइ जननि पग नायउ माथा । मनु रघुनंदन जानकि साथा ॥
पूँछे मातु मलिन मन देखी । लखन कही सब कथा बिसेषी ॥
गई सहमि सुनि बचन कठोरा । मृगी देखि दव जनु चहु ओरा ॥
लखन लखेउ भा अनरथ आजू । एहिं सनेह बस करब अकाजू ॥
मागत बिदा सभय सकुचाहीं । जाइ संग बिधि कहिहि कि नाहीं ॥

दो०—समुझि सुमित्राँ राम सिय रूपु सुसील सुभाउ ।
नृप सनेह लखि धुनेउ सिरु पापिनि दीन्ह कुदाउ ॥७३॥

धीरजु धरेउ कुअवसर जानी । सहज सुहृद बोली मृदु बानी ॥
तात तुम्हारि मातु बैदेही । पिता रामु सब भाँति सनेही ॥
अवध तहाँ जहँ राम निवासू । तहँइँ दिवस जहँ भानु प्रकासू ॥
जौं पै सीय रामु बन जाहीं । अवध तुम्हार काजु कछु नाहीं ॥
गुर पितु मातु बंधु सुर साईं । सेइअहिं सकल प्रान की नाईं ॥
रामु प्रानप्रिय जीवन जी के । स्वारथ रहित सखा सबही के ॥
पूजनीय प्रिय परम जहाँ तें । सब मानिअहिं राम के नातें ॥
अस जियँ जानि संग बन जाहू । लेहु तात जग जीवन लाहू ॥

दो०—भूरि भाग भाजनु भयहु मोहि समेत बलि जाउँ ।
जौं तुम्हरें मन छाड़ि छलु कीन्ह राम पद ठाउँ ॥७४॥

पुत्रवती जुबती जग सोई । रघुपति भगतु जासु सुतु होई ॥
नतरु बाँझ भलि बादि बिआनी । राम बिमुख सुत तें हित जानी ॥
तुम्हरेहिं भाग रामु बन जाहीं । दूसर हेतु तात कछु नाहीं ॥
सकल सुकृत कर बड़ फलु एहू । राम सीय पद सहज सनेहू ॥
रागु रोषु इरिषा मदु मोहू । जनि सपनेहुँ इन्ह के बस होहू ॥
सकल प्रकार बिकार बिहाई । मन क्रम बचन करेहु सेवकाई ॥
तुम्ह कहुँ बन सब भाँति सुपासू । सँग पितु मातु रामु सिय जासू ॥
जेहिं न रामु बन लहहिं कलेसू । सुत सोइ करेहु इहइ उपदेसू ॥

छं०—उपदेसु यहु जेहिं तात तुम्हरे राम सिय सुख पावहीं ।
पितु मातु प्रिय परिवार पुर सुख सुरति बन बिसरावहीं ।
तुलसी प्रभुहि सिख देइ आयसु दीन्ह पुनि आसिष दई ।
रति होउ अबिरल अमल सिय रघुबीर पद नित नित नई ।

सो०–मातु चरन सिरु नाइ चले तुरत संकित हृदयँ।
बागुर बिषम तोराइ मनहुँ भाग मृगु भाग बस ॥७५॥

गए लखनु जहँ जानकिनाथू। भे मन मुदित पाइ प्रिय साथू ॥
बंदि राम सिय चरन सुहाए। चले संग नृपमंदिर आए ॥
कहहिं परसपर पुर नर नारी। भलि बनाइ बिधि बात बिगारी ॥
तन कृस मन दुखु बदन मलीने। बिकल मनहुँ माखी मधु छीने ॥
कर मीजहिं सिरु धुनि पछिताहीं। जनु बिनु पख बिहग अकुलाहीं ॥
भइ बड़ि भीर भूप दरबारा। बरनि न जाइ बिषादु अपारा ॥
सचिवँ उठाइ राउ बैठारे। कहि प्रिय बचन रामु पगु धारे ॥
सिय समेत दोउ तनय निहारी। ब्याकुल भयउ भूमिपति भारी ॥

दो०–सीय सहित सुत सुभग दोउ देखि देखि अकुलाइ।
बारहिं बार सनेह बस राउ लेइ उर लाइ ॥७६॥

सकइ न बोलि बिकल नरनाहू। सोक जनित उर दारुन दाहू ॥
नाइ सीसु पद अति अनुरागा। उठि रघुबीर बिदा तब मागा ॥
पितु असीस आयसु मोहि दीजै। हरष समय बिसमउ कत कीजै ॥
तात किएँ प्रिय प्रेम प्रमादू। जसु जगु जाइ होइ अपबादू ॥
सुनि सनेह बस उठि नरनाहाँ। बैठारे रघुपति गहि बाहाँ ॥
सुनहु तात तुम्ह कहुँ मुनि कहहीं। रामु चराचर नायक अहहीं ॥
सुभ अरु असुभ करम अनुहारी। ईसु देइ फलु हृदयँ बिचारी ॥
करइ जो करम पाव फल सोई। निगम नीति असि कह सबु कोई ॥

दो०–औरु करै अपराधु कोउ और पाव फल भोगु।
अति बिचित्र भगवंत गति को जग जानै जोगु ॥७७॥

रायँ राम राखन हित लागी। बहुत उपाय किए छलु त्यागी ॥
लखी राम रुख रहत न जाने। धरम धुरंधर धीर सयाने ॥

तब नृप सीय लाइ उर लीन्ही । अति हित बहुत भाँति सिख दीन्ही ॥
कहि बन के दुख दुसह सुनाए । सासु ससुर पितु सुख समुझाए ॥
सिय मनु राम चरन अनुरागा । घरु न सुगमु बनु बिषमु न लागा ॥
औरउ सबहिं सीय समुझाई । कहि कहि बिपिन बिपति अधिकाई ॥
सचिव नारि गुर नारि सयानी । सहित सनेह कहहिं मृदु बानी ॥
तुम्ह कहुँ तौ न दीन्ह बनबासू । करहु जो कहहिं ससुर गुर सासू ॥

दो०—सिख सीतलि हित मधुर मृदु सुनि सीतहि न सोहानि ।
सरद चंद चंदिनि लगत जनु चकई अकुलानि ॥७८॥

सीय सकुच बस उतरु न देई । सो सुनि तमकि उठी कैकेई ॥
मुनि पट भूषन भाजन आनी । आगें धरि बोली मृदु बानी ॥
नृपहि प्रानप्रिय तुम्ह रघुबीरा । सील सनेह न छाड़िहि भीरा ॥
सुकृत सुजसु परलोकु नसाऊ । तुम्हहि जान बन कहिहि न काऊ ॥
अस बिचारि सोइ करहु जो भावा । राम जननि सिख सुनि सुखु पावा ॥
भूपहि बचन बानसम लागे । करहिं न प्रान पयान अभागे ॥
लोग बिकल मुरुछित नरनाहू । काह करिअ कछु सूझ न काहू ॥
रामु तुरत मुनि बेषु बनाई । चले जनक जननिहि सिरु नाई ॥

दो०—सजि बन साजु समाजु सबु बनिता बंधु समेत ।
बंदि बिप्र गुर चरन प्रभु चले करि सबहि अचेत ॥७९॥

निकसि बसिष्ठ द्वार भये ठाढ़े । देखे लोग बिरह दव दाढे ॥
कहि प्रिय बचन सकल समुझाए । बिप्र बृंद रघुबीर बोलाए ॥
गुर सन कहि बरषासन दीन्हे । आदर दान बिनय बस कीन्हे ॥
जाचक दान मान संतोषे । मीत पुनीत प्रेम परितोषे ॥
दासीं दास बोलाइ बहोरी । गुरहि सौंपि बोले कर जोरी ॥
सब कै सार सँभार गोसाईं । करबि जनक जननी की नाईं ॥

बारहिं बार जोरि जुग पानी । कहत रामु सब सन मृदु बानी ॥
सोइ सब भाँति मोर हितकारी । जेहि तें रहै भुआल सुखारी ॥

दो०–मातु सकल मोरे बिरहँ जेहिं न होहिं दुख दीन ।
सोइ उपाउ तुम्ह करेहु सब पुर जन परम प्रबीन ॥८०॥

एहि बिधि राम सबहि समुझावा । गुर पद पदुम हरषि सिरु नावा ॥
गनपति गौरि गिरीसु मनाई । चले असीस पाइ रघुराई ॥
राम चलत अति भयउ बिषादू । सुनि न जाइ पुर आरत नादू ॥
कुसगुन लंक अवध अति सोकू । हरष बिषाद बिबस सुरलोकू ॥
गइ मुरुछा तब भूपति जागे । बोलि सुमंत्रु कहन अस लागे ॥
रामु चले बन प्रान न जाहीं । केहि सुख लागि रहत तन माहीं ॥
एहि तें कवन व्यथा बलवाना । जो दुखु पाइ तजहिं तनु प्राना ॥
पुनि धरि धीर कहइ नरनाहू । लै रथु संग सखा तुम्ह जाहू ॥

दो०–सुठि सुकुमार कुमार दोउ जनकसुता सुकुमारि ।
रथ चढ़ाइ देखराइ बनु फिरेहु गएँ दिन चारि ॥८१॥

जौं नहिं फिरहिं धीर दोउ भाई । सत्यसंध दृढ़ब्रत रघुराई ॥
तौ तुम्ह बिनय करेहु कर जोरी । फेरिअ प्रभु मिथिलेसकिसोरी ॥
जब सिय कानन देखि डेराई । कहेहु मोरि सिख अवसरु पाई ॥
सासु ससुर अस कहेउ सँदेसू । पुत्रि फिरिअ बन बहुत कलेसू ॥
पितुगृह कबहुँ कबहुँ ससुरारी । रहेहु जहाँ रुचि होइ तुम्हारी ॥
एहि बिधि करेहु उपाय कदंबा । फिरइ त होइ प्रान अवलंबा ॥
नाहिं त मोर मरनु परिनामा । कछु न बसाइ भएँ बिधि बामा ॥
अस कहि मुरुछि परा महि राऊ । रामु लखनु सिय आनि देखाऊ ॥

दो०–पाइ रजायसु नाइ सिरु रथु अति बेग बनाइ ।
गयउ जहाँ बाहेर नगर सीय सहित दोउ भाइ ॥८२॥

तब सुमंत्र नृप बचन सुनाए। करि बिनती रथ रामु चढ़ाए॥
चढ़ि रथ सीय सहित दोउ भाई। चले हृदयँ अवधहि सिरु नाई॥
चलत रामु लखि अवध अनाथा। बिकल लोग सब लागे साथा॥
कृपासिंधु बहुबिधि समुझावहिं। फिरहिं प्रेम बस पुनि फिरि आवहिं॥
लागति अवध भयावनि भारी। मानहुँ कालराति अँधिआरी॥
घोर जंतु सम पुर नर नारी। डरपहिं एकहि एक निहारी॥
घर मसान परिजन जनु भूता। सुत हित मीत मनहुँ जमदूता॥
बागन्ह बिटप बेलि कुम्हिलाहीं। सरित सरोवर देखि न जाहीं॥

दो०—हय गय कोटिन्ह केलिमृग पुरपसु चातक मोर।
पिक रथांग सुक सारिका सारस हंस चकोर॥८३॥

राम बियोग बिकल सब ठाढ़े। जहँ तहँ मनहुँ चित्र लिखि काढ़े॥
नगरु सफल बनु गहबर भारी। खग मृग बिपुल सकल नर नारी॥
बिधि कैकई किरातिनि कीन्ही। जेहिं दव दुसह दसहुँ दिसि दीन्ही॥
सहि न सके रघुबर बिरहागी। चले लोग सब ब्याकुल भागी॥
सबहिं बिचारु कीन्ह मन माहीं। राम लखन सिय बिनु सुखु नाहीं॥
जहाँ रामु तहँ सबुइ समाजू। बिनु रघुबीर अवध नहिं काजू॥
चले साथ अस मंत्रु दृढ़ाई। सुर दुर्लभ सुख सदन बिहाई॥
राम चरन पंकज प्रिय जिन्हही। बिषय भोग बस करहिं कि तिन्हही॥

दो०—बालक वृद्ध बिहाइ गृहँ लगे लोग सब साथ।
तमसा तीर निवासु किय प्रथम दिवस रघुनाथ॥८४॥

रघुपति प्रजा प्रेमबस देखी। सदय हृदयँ दुखु भयउ बिसेषी॥
करुनामय रघुनाथ गोसाँई। बेगि पाइअहिं पीर पराई॥
कहि सप्रेम मृदु बचन सुहाए। बहुबिधि राम लोग समुझाए॥
किए धरम उपदेस घनेरे। लोग प्रेमबस फिरहिं न फेरे॥

सीलु सनेहु छाड़ि नहिं जाई । असमंजस बस भे रघुराई ॥
लोग सोग श्रम बस गए सोई । कछुक देवमायाँ मति मोई ॥
जबहिं जाम जुग जामिनि बीती । राम सचिव सन कहेउ सप्रीती ॥
खोज मारि रथ हाँकहु ताता । आन उपायँ बनिहि नहिं बाता ॥

दो०—राम लखन सिय जान चढ़ि संभु चरन सिरु नाइ ।
सचिवँ चलायउ तुरत रथु इत उत खोज दुराइ ॥८५॥

जागे सकल लोग भएँ भोरू । गे रघुनाथ भयउ अति सोरू ॥
रथ कर खोज कतहुँ नहिं पावहिं । राम राम कहि चहु दिसि धावहिं ॥
मनहुँ बारिनिधि बूड़ जहाजू । भयउ बिकल बड बनिक समाजू ॥
एकहि एक देहिं उपदेसू । तजे राम हम जानि कलेसू ॥
निंदहिं आपु सराहहिं मीना । धिग जीवनु रघुबीर बिहीना ॥
जौं पै प्रिय बियोगु बिधि कीन्हा । तौ कस मरनु न मागें दीन्हा ॥
एहि बिधि करत प्रलाप कलापा । आए अवध भरे परितापा ॥
बिषम बियोगु न जाइ बखाना । अवधि आस सब राखहिं प्राना ॥

दो०—राम दरस हित नेम ब्रत लगे करन नर नारि ।
मनहुँ कोक कोकी कमल दीन बिहीन तमारि ॥८६॥

सीता सचिव सहित दोउ भाई । सृंगबेरपुर पहुँचे जाई ॥
उतरे राम देवसरि देखी । कीन्ह दंडवत हरषु बिसेषी ॥
लखन सचिवँ सियँ किए प्रनामा । सबहि सहित सुखु पायउ रामा ॥
गंग सकल मुद मंगल मूला । सब सुख करनि हरनि सब सूला ॥
कहि कहि कोटिक कथा प्रसंगा । रामु बिलोकहिं गंग तरंगा ॥
सचिवहि अनुजहि प्रियहि सुनाई । बिबुध नदी महिमा अधिकाई ॥
मज्जनु कीन्ह पंथ श्रम गयऊ । सुचि जलु पिअत मुदित मन भयऊ ॥
सुमिरत जाहि मिटइ श्रम भारू । तेहि श्रम यह लौकिक ब्यवहारू ॥

दो०–सुद्ध सच्चिदानंदमय कंद भानुकुल केतु।
चरित करत नर अनुहरत संसृति सागर सेतु ॥८७॥

यह सुधि गुहँ निषाद जब पाई। मुदित लिए प्रिय बंधु बोलाई ॥
लिए फल मूल भेंट भरि भारा। मिलन चलेउ हियँ हरषु अपारा ॥
करि दंडवत भेंट धरि आगें। प्रभुहि बिलोकत अति अनुरागें ॥
सहज सनेह बिबस रघुराई। पूँछी कुसल निकट बैठाई ॥
नाथ कुसल पद पंकज देखें। भयउँ भागभाजन जन लेखें ॥
देव धरनि धनु धामु तुम्हारा। मैं जनु नीचु सहित परिवारा ॥
कृपा करिअ पुर धारिअ पाऊ। थापिय जनु सबु लोगु सिहाऊ ॥
कहेउ सत्य सबु सखा सुजाना। मोहि दीन्ह पितु आयसु आना ॥

दो०–बरष चारिदस बासु बन मुनि ब्रत बेषु अहारु।
ग्राम बासु नहिं उचित सुनि गुहहि भयउ दुखु भारु ॥८८॥

राम लखन सिय रूप निहारी। कहहिं सप्रेम ग्राम नर नारी ॥
ते पितु मातु कहहु सखि कैसे। जिन्ह पठए बन बालक ऐसे ॥
एक कहहिं भल भूपति कीन्हा। लोयन लाहु हमहि बिधि दीन्हा ॥
तब निषादपति उर अनुमाना। तरु सिंसुपा मनोहर जाना ॥
लै रघुनाथहि ठाउँ देखावा। कहेउ राम सब भाँति सुहावा ॥
पुरजन करि जोहारु घर आए। रघुबर संध्या करन सिधाए ॥
गुहँ सँवारि साँथरी डसाई। कुस किसलयमय मृदुल सुहाई ॥
सुचि फल मूल मधुर मृदु जानी। दोना भरि भरि राखेसि पानी ॥

दो०–सिय सुमंत्र भ्राता सहित कंद मूल फल खाइ।
सयन कीन्ह रघुबंसमनि पाय पलोटत भाइ ॥८९॥

उठे लखनु प्रभु सोवत जानी। कहि सचिवहि सोवन मृदु बानी ॥
कछुक दूरि सजि बान सरासन। जागन लगे बैठि बीरासन ॥

गुहँ बोलाइ पाहरू प्रतीती। ठावँ ठावँ राखे अति प्रीती॥
आपु लखन पहिं बैठेउ जाई। कटि भाथी सर चाप चढाई॥
सोवत प्रभुहि निहारि निषादू। भयउ प्रेम बस हृदयँ बिषादू॥
तनु पुलकित जलु लोचन बहई। बचन सप्रेम लखन सन कहई॥
भूपति भवन सुभायँ सुहावा। सुरपति सदनु न पटतर पावा॥
मनिमय रचित चारु चौबारे। जनु रति पति निज हाथ सँवारे॥

दो०–सुचि सुबिचित्र सुभोगमय सुमन सुगंध सुबास।
पलँग मंजु मनिदीप जहँ सब बिधि सकल सुपास॥९०॥

बिबिध बसन उपधान तुराईं। छीर फेनु मृदु बिसद सुहाईं॥
तहँ सिय रामु सयन निसि करहीं। निज छबि रति मनोज मदु हरहीं॥
ते सिय रामु साथरीं सोए। श्रमित बसन बिनु जाहिं न जोए॥
मातु पिता परिजन पुरबासी। सखा सुसील दास अरु दासी॥
जोगवहिं जिन्हहि प्रान की नाईं। महि सोवत तेइ राम गोसाईं॥
पिता जनक जग बिदित प्रभाऊ। ससुर सुरेस सखा रघुराऊ॥
रामचंदु पति सो बैदेही। सोवत महि बिधि बाम न केही॥
सिय रघुबीर कि कानन जोगू। करम प्रधान सत्य कह लोगू॥

दो०–कैकयनंदिनि मंदमति कठिन कुटिलपनु कीन्ह।
जेहिं रघुनंदन जानकिहि सुख अवसर दुखु दीन्ह॥९१॥

भइ दिनकर कुल बिटप कुठारी। कुमति कीन्ह सब बिस्व दुखारी॥
भयउ बिषादु निषादहि भारी। राम सीय महि सयन निहारी॥
बोले लखन मधुर मृदु बानी। ग्यान बिराग भगति रस सानी॥
काहु न कोउ सुख दुख कर दाता। निज कृत करम भोग सबु भ्राता॥
जोग बियोग भोग भल मंदा। हित अनहित मध्यम भ्रम फंदा॥
जनमु मरनु जहँ लगि जग जालू। संपति बिपति करमु अरु कालू॥
धरनि धामु धनु पुर परिवारू। सरगु नरकु जहँ लगि ब्यवहारू॥
देखिअ सुनिअ गुनिअ मन माहीं। मोह मूल परमारथु नाहीं॥

दो०—सपनें होइ भिखारि नृपु रंकु नाकपति होइ।
जागें लाभु न हानि कछु तिमि प्रपंच जियँ जोइ ॥९२॥

अस बिचारि नहिं कीजिअ रोसू। काहुहि बादि न देइअ दोसू ॥
मोह निसाँ सबु सोवनिहारा। देखिअ सपन अनेक प्रकारा ॥
एहिं जग जामिनि जागहिं जोगी। परमारथी प्रपंच बियोगी ॥
जानिअ तबहिं जीव जग जागा। जब सब बिषय बिलास बिरागा ॥
होइ बिबेकु मोह भ्रम भागा। तब रघुनाथ चरन अनुरागा ॥
सखा परम परमारथु एहू। मन क्रम बचन राम पद नेहू ॥
राम ब्रह्म परमारथ रूपा। अबिगत अलख अनादि अनूपा ॥
सकल बिकार रहित गतभेदा। कहि नित नेति निरूपहिं बेदा ॥

दो०—भगत भूमि भूसुर सुरभि सुर हित लागि कृपाल।
करत चरित धरि मनुज तनु सुनत मिटहिं जग जाल ॥९३॥

सखा समुझि अस परिहरि मोहू। सिय रघुबीर चरन रत होहू ॥
कहत राम गुन भा भिनुसारा। जागे जग मंगल सुखदारा ॥
सकल सौच करि राम नहावा। सुचि सुजान बट छीर मगावा ॥
अनुज सहित सिर जटा बनाए। देखि सुमंत्र नयन जल छाए ॥
हृदयँ दाहु अति बदन मलीना। कह कर जोरि बचन अति दीना ॥
नाथ कहेउ अस कोसलनाथा। लै रथु जाहु राम कें साथा ॥
बनु देखाइ सुरसरि अन्हवाई। आनेहु फेरि बेगि दोउ भाई ॥
लखनु रामु सिय आनेहु फेरी। संसय सकल सँकोच निबेरी ॥

दो०—नृप अस कहेउ गोसाइँ जस कहइ करौं बलि सोइ।
करि बिनती पायन्ह परेउ दीन्ह बाल जिमि रोइ ॥९४॥

तात कृपा करि कीजिअ सोई। जातें अवध अनाथ न होई ॥
मंत्रिहि राम उठाइ प्रबोधा। तात धरम मतु तुम्ह सबु सोधा ॥

सिबि दधीच हरिचंद नरेसा। सहे धरम हित कोटि कलेसा॥
रंतिदेव बलि भूप सुजाना। धरमु धरेउ सहि संकट नाना॥
धरमु न दूसर सत्य समाना। आगम निगम पुरान बखाना॥
मैं सोइ धरमु सुलभ करि पावा। तजे तिहूँ पुर अपजसु छावा॥
संभावित कहुँ अपजस लाहू। मरन कोटि सम दारुन दाहू॥
तुम्ह सन तात बहुत का कहउँ। दिएँ उतरु फिरि पातकु लहऊँ॥

दो०—पितु पद गहि कहि कोटि नति विनय करब कर जोरि।
चिंता कवनिहु बात कै तात करिअ जनि मोरि॥९५॥

तुम्ह पुनि पितु सम अति हित मोरें। बिनती करउँ तात कर जोरें॥
सब बिधि सोइ करतव्य तुम्हारें। दुख न पाव पितु सोच हमारें॥
सुनि रघुनाथ सचिव संबादू। भयउ सपरिजन बिकल निषादू॥
पुनि कछु लखन कही कटु बानी। प्रभु बरजे बड़ अनुचित जानी॥
सकुचि राम निज सपथ देवाई। लखन सँदेसु कहिअ जनि जाई॥
कह सुमंत्रु पुनि भूप सँदेसू। सहि न सकिहि सिय बिपिन कलेसू॥
जेहि बिधि अवध आव फिरि सीया। सोइ रघुबरहि तुम्हहि करनीया॥
नतरु निपट अवलंब बिहीना। मैं न जिअब जिमि जल बिनु मीना॥

दो०—मइकें ससुरें सकल सुख जबहिं जहाँ मनु मान।
तहँ तब रहिहि सुखेन सिय जब लगि बिपति बिहान॥९६॥

बिनती भूप कीन्ह जेहि भाँती। आरति प्रीति न सो कहि जाती॥
पितु सँदेसु सुनि कृपानिधाना। सियहि दीन्ह सिख कोटि बिधाना॥
सासु ससुर गुर प्रिय परिवारू। फिरहु त सब कर मिटै खभारू॥
सुनि पति बचन कहति बैदेही। सुनहु प्रानपति परम सनेही॥
प्रभु करुनामय परम बिबेकी। तनु तजि रहति छाँह किमि छेंकी॥
प्रभा जाइ कहँ भानु बिहाई। कहँ चंद्रिका चंदु तजि जाई॥

पतिहि प्रेममय बिनय सुनाई। कहति सचिव सन गिरा सुहाई॥
तुम्ह पितु ससुर सरिस हितकारी। उतरु देउँ फिरि अनुचित भारी॥

दो०-आरति बस सनमुख भइउँ बिलगु न मानब तात।
आरजसुत पद कमल बिनु बादि जहाँ लगि नात॥९७॥

पितु बैभव बिलास मैं डीठा। नृप मनि मुकुट मिलित पद पीठा॥
सुखनिधान अस पितु गृह मोरें। पिय बिहीन मन भाव न भोरें॥
ससुर चक्कवइ कोसलराऊ। भुवन चारिदस प्रगट प्रभाऊ॥
आगें होइ जेहि सुरपति लेई। अरध सिंघासन आसनु देई॥
ससुरु एतादृस अवध निवासू। प्रिय परिवारु मातु सम सासू॥
बिनु रघुपति पद पदुम परागा। मोहि केउ सपनेहुँ सुखद न लागा॥
अगम पंथ बनभूमि पहारा। करि केहरि सर सरित अपारा॥
कोल किरात कुरंग बिहंगा। मोहि सब सुखद प्रानपति संगा॥

दो०-सासु ससुर सन मोरि हुँति बिनय करबि परि पायें।
मोर सोचु जनि करिअ कछु मैं बन सुखी सुभायें॥९८॥

प्राननाथ प्रिय देवर साथा। बीर धुरीन धरें धनु भाथा॥
नहि मग श्रमु भ्रमु दुख मन मोरें। मोहि लगि सोचु करिअ जनि भोरें॥
सुनि सुमंत्रु सिय सीतलि बानी। भयउ बिकल जनु फनि मनि हानी॥
नयन सूझ नहिं सुनइ न काना। कहि न सकइ कछु अति अकुलाना॥
राम प्रबोधु कीन्ह बहु भाँती। तदपि होति नहिं सीतलि छाती॥
जतन अनेक साथ हित कीन्हे। उचित उतर रघुनंदन दीन्हे॥
मेटि जाइ नहिं राम रजाई। कठिन करम गति कछु न बसाई॥
राम लखन सिय पद सिरु नाई। फिरेउ बनिक जिमि मूर गवाँई॥

दो०-रथु हाँकेउ हय राम तन हेरि हेरि हिहिनाहिं।
देखि निषाद बिषादबस धुनहिं सीस पछिताहिं॥९९॥

जासु बियोग बिकल पसु ऐसें। प्रजा मातु पितु जिइहहिं कैसे ॥
बरबस राम सुमंत्रु पठाए। सुरसरि तीर आपु तब आए ॥
मागी नाव न केवटु आना। कहइ तुम्हार मरमु मैं जाना ॥
चरन कमल रज कहुँ सबु कहई। मानुष करनि मूरि कछु अहई ॥
छुअत सिला भइ नारि सुहाई। पाहन तें न काठ कठिनाई ॥
तरनिउ मुनि घरिनी होइ जाई। बाट परइ मोरि नाव उड़ाई ॥
एहिं प्रतिपालउँ सबु परिवारू। नहिं जानउँ कछु अउर कबारू ॥
जौं प्रभु पार अवसि गा चहहू। मोहि पद पदुम पखारन कहहू ॥

छं०—पद कमल धोइ चढ़ाइ नाव न नाथ उतराई चहौं।
मोहि राम राउरि आन दसरथ सपथ सब साची कहौं ॥
बरु तीर मारहुँ लखन पै जब लगि न पाय पखारिहौं।
तब लगि न तुलसीदास नाथ कृपाल पारु उतारिहौं ॥

सो०—सुनि केवट के बैन प्रेम लपेटे अटपटे।
बिहसे करुनाऐन चितइ जानकी लखन तन ॥१००॥

कृपासिंधु बोले मुसुकाई। सोइ करु जेहिं तव नाव न जाई ॥
बेगि आनु जल पाय पखारू। होत बिलंबु उतारहि पारू ॥
जासु नाम सुमिरत एक बारा। उतरहिं नर भवसिंधु अपारा ॥
सोइ कृपालु केवटहि निहोरा। जेहिं जगु किय तिहु पगहु ते थोरा ॥
पद नख निरखि देवसरि हरषी। सुनि प्रभु बचन मोहँ मति करषी ॥
केवट राम रजायसु पावा। पानि कठवता भरि लेइ आवा ॥
अति आनंद उमगि अनुरागा। चरन सरोज पखारन लागा ॥
बरषि सुमन सुर सकल सिहाहीं। एहि सम पुन्यपुंज कोउ नाहीं ॥

दो०—पद पखारि जलु पान करि आपु सहित परिवार।
पितर पारु करि प्रभुहि पुनि मुदित गयउ लेइ पार ॥१०१॥

उतरि ठाढ भए सुरसरि रेता। सीय रामु गुह लखन समेता॥
केवट उतरि दंडवत कीन्हा। प्रभुहि सकुच एहि नहिं कछु दीन्हा॥
पिय हिय की सिय जाननिहारी। मनि मुदरी मन मुदित उतारी॥
कहेउ कृपाल लेहि उतराई। केवट चरन गहे अकुलाई॥
नाथ आजु मैं काह न पावा। मिटे दोष दुख दारिद दावा॥
बहुत काल मैं कीन्हि मजूरी। आजु दीन्ह विधि बनि भलि भूरी॥
अब कछु नाथ न चाहिअ मोरें। दीनदयाल अनुग्रह तोरें॥
फिरती बार मोहि जो देबा। सो प्रसादु मैं सिर धरि लेबा॥

दो०–बहुत कीन्ह प्रभु लखन सियँ नहिं कछु केवटु लेइ।
बिदा कीन्ह करुनायतन भगति बिमल बरु देइ॥१०२॥

तब मज्जनु करि रघुकुलनाथा। पूजि पारथिव नायउ माथा॥
सियँ सुरसरिहि कहेउ कर जोरी। मातु मनोरथ पुरउबि मोरी॥
पति देवर सँग कुसल बहोरी। आइ करौं जेहिं पूजा तोरी॥
सुनि सिय बिनय प्रेम रस सानी। भइ तब बिमल बारि बर बानी॥
सुनु रघुबीर प्रिया बैदेही। तव प्रभाउ जग बिदित न केही॥
लोकप होहिं बिलोकत तोरें। तोहि सेवहिं सब सिधि कर जोरें॥
तुम्ह जो हमहि बड़ि बिनय सुनाई। कृपा कीन्हि मोहि दीन्हि बड़ाई॥
तदपि देबि मैं देबि असीसा। सफल होन हित निज बागीसा॥

दो०–प्राननाथ देवर सहित कुसल कोसला आइ।
पूजिहि सब मनकामना सुजसु रहिहि जग छाइ॥१०३॥

गंग बचन सुनि मंगल मूला। मुदित सीय सुरसरि अनुकूला॥
तब प्रभु गुहहि कहेउ घर जाहू। सुनत सूख मुखु भा उर दाहू॥
दीन बचन गुह कह कर जोरी। बिनय सुनहु रघुकुलमनि मोरी॥
नाथ साथ रहि पंथु देखाई। करि दिन चारि चरन सेवकाई॥

जेहिं बन जाइ रहब रघुराई। परनकुटी मैं करबि सुहाई॥
तब मोहि कहँ जसि देब रजाई। सोइ करिहउँ रघुबीर दोहाई॥
सहज सनेह राम लखि तासू। संग लीन्ह गुह हृदयँ हुलासू॥
पुनि गुहँ ग्याति बोलि सब लीन्हे। करि परितोषु बिदा तब कीन्हे॥

दो०–तब गनपति सिव सुमिरि प्रभु नाइ सुरसरिहि माथ।
सखा अनुज सिय सहित बन गवनु कीन्ह रघुनाथ॥१०४॥

तेहि दिन भयउ बिटप तर बासू। लखन सखाँ सब कीन्ह सुपासू॥
प्रात प्रातकृत करि रघुराई। तीरथराजु दीख प्रभु जाई॥
सचिव सत्य श्रद्धा प्रिय नारी। माधव सरिस मीतु हितकारी॥
चारि पदारथ भरा भँडारू। पुन्य प्रदेस देस अति चारू॥
छेत्रु अगम गढ़ु गाढ़ सुहावा। सपनेहुँ नहिं प्रतिपच्छिन्ह पावा॥
सेन सकल तीरथ बर बीरा। कलुष अनीक दलन रनधीरा॥
संगमु सिंहासनु सुठि सोहा। छत्रु अखयबटु मुनि मनु मोहा॥
चवँर जमुन अरु गंग तरंगा। देखि होहिं दुख दारिद भंगा॥

दो०–सेवहिं सुकृती साधु सुचि पावहिं सब मनकाम।
बंदी बेद पुरान गन कहहिं बिमल गुन ग्राम॥१०५॥

को कहि सकइ प्रयाग प्रभाऊ। कलुष पुंज कुंजर मृगराऊ॥
अस तीरथपति देखि सुहावा। सुख सागर रघुबर सुखु पावा॥
कहि सिय लखनहि सखहि सुनाई। श्रीमुख तीरथराज बड़ाई॥
करि प्रनामु देखत बन बागा। कहत महातम अति अनुरागा॥
एहि बिधि आइ बिलोकी बेनी। सुमिरत सकल सुमंगल देनी॥
मुदित नहाइ कीन्हि सिव सेवा। पूजि जथाबिधि तीरथ देवा॥
तब प्रभु भरद्वाज पहिं आए। करत दंडवत मुनि उर लाए॥
मुनि मन मोद न कछु कहि जाई। ब्रह्मानंद रासि जनु पाई॥

साथ लागि मुनि सिष्य बोलाए । सुनि मन मुदित पचासक आए ॥
सबन्हि राम पर प्रेम अपारा । सकल कहहिं मगु दीख हमारा ॥
मुनि बटु चारि संग तब दीन्हे । जिन्ह बहु जनम सुकृत सब कीन्हे ॥
करि प्रनामु रिषि आयसु पाई । प्रमुदित हृदयँ चले रघुराई ॥
ग्राम निकट जब निकसहिं जाई । देखहिं दरस नारि नर धाई ॥
होहिं सनाथ जनम फलु पाई । फिरहिं दुखित मनु संग पठाई ॥

दो०–बिदा किए बटु बिनय करि फिरे पाइ मन काम ।
उतरि नहाए जमुन जल जो सरीर सम स्याम ॥१०९॥

सुनत तीरबासी नर नारी । धाए निज निज काज बिसारी ॥
लखन राम सिय सुंदरताई । देखि करहिं निज भाग्य बड़ाई ॥
अति लालसा बसहिं मन माहीं । नाउँ गाउँ बूझत सकुचाहीं ॥
जे तिन्ह महुँ बयबिरिध सयाने । तिन्ह करि जुगुति रामु पहिचाने ॥
सकल कथा तिन्ह सबहि सुनाई । बनहि चले पितु आयसु पाई ॥
सुनि सबिषाद सकल पछिताहीं । रानी रायँ कीन्ह भल नाहीं ॥
तेहि अवसर एक तापसु आवा । तेजपुंज लघुबयस सुहावा ॥
कबि अलखित गति बेषु बिरागी । मन क्रम बचन राम अनुरागी ॥

दो०-सजल नयन तन पुलकि निज इष्टदेउ पहिचानि ।
परेउ दंड जिमि धरनितल दसा न जाइ बखानि ॥११०॥

राम सप्रेम पुलकि उर लावा । परम रंक जनु पारसु पावा ॥
मनहुँ प्रेमु परमारथु दोउ । मिलत धरें तन कह सबु कोउ ॥
बहुरि लखन पायन्ह सोइ लागा । लीन्ह उठाइ उमगि अनुरागा ॥
पुनि सिय चरन धूरि धरि सीसा । जननि जानि सिसु दीन्हि असीसा ॥
कीन्ह निषाद दंडवत तेही । मिलेउ मुदित लखि राम सनेही ॥
पिअत नयन पुट रूपु पियूषा । मुदित सुअसनु पाइ जिमि भूखा ॥

ते पितु मातु कहहु सखि कैसे। जिन्ह पठए वन बालक ऐसे॥
राम लखन सिय रूपु निहारी। होहिं सनेह विकल नर नारी॥

दो०-तब रघुबीर अनेक विधि सखहि सिखावनु दीन्ह।
राम रजायसु सीस धरि भवन गवनु तेइँ कीन्ह॥१११॥

पुनि सियँ राम लखन कर जोरी। जमुनहि कीन्ह प्रनामु बहोरी॥
चले ससीय मुदित दोउ भाई। रबितनुजा कइ करत बड़ाई॥
पथिक अनेक मिलहिं मग जाता। कहहिं सप्रेम देखि दोउ भ्राता॥
राज लखन सब अंग तुम्हारें। देखि सोचु अति हृदय हमारें॥
मारग चलहु पयादेहि पाएँ। ज्योतिषु झूठ हमारें भाएँ॥
अगमु पंथु गिरि कानन भारी। तेहि महँ साथ नारि सुकुमारी॥
करि केहरि बन जाइ न जोई। हम सँग चलहिं जो आयसु होई॥
जाब जहाँ लगि तहँ पहुँचाई। फिरब बहोरि तुम्हहि सिरु नाई॥

दो०-एहि विधि पूँछहिं प्रेम बस पुलक गात जलु नैन।
कृपासिंधु फेरहिं तिन्हहि कहि विनीत मृदु बैन॥११२॥

जे पुर गाँव बसहिं मग माहीं। तिन्हहि नाग सुर नगर सिहाहीं॥
केहि सुकृतीं केहि घरीं बसाए। धन्य पुन्यमय परम सुहाए॥
जहँ तहँ राम चरन चलि जाहीं। तिन्ह समान अमरावति नाहीं॥
पुन्य पुंज मग निकट निवासी। तिन्हहि सराहहिं सुरपुरबासी॥
जे भरि नयन विलोकहिं रामहि। सीता लखन सहित घनस्यामहि॥
जे सर सरित राम अवगाहहिं। तिन्हहि देव सर सरित सराहहिं॥
जेहि तरु तर प्रभु बैठहिं जाई। करहिं कलपतरु तासु बड़ाई॥
परसि राम पद पदुम परागा। मानति भूमि भूरि निज भागा॥

दो०-छाँह करहिं घन विबुधगन वरषहिं सुमन सिहाहिं।
देखत गिरि बन बिहग मृग रामु चले मग जाहिं॥११३॥

सीता लखन सहित रघुराई। गाँव निकट जब निकसहिं जाई ॥
सुनि सब बाल बृद्ध नर नारी। चलहिं तुरत गृहकाजु बिसारी ॥
राम लखन सिय रूप निहारी। पाइ नयनफलु होहिं सुखारी ॥
सजल बिलोचन पुलक सरीरा। सब भए मगन देखि दोउ बीरा ॥
बरनि न जाइ दसा तिन्ह केरी। लहि जनु रंकन्ह सुरमनि ढेरी ॥
एकन्ह एक बोलि सिख देहीं। लोचन लाहु लेहु छन एहीं ॥
रामहि देखि एक अनुरागे। चितवत चले जाहिं सँग लागे ॥
एक नयन मग छबि उर आनी। होहिं सिथिल तन मन बर बानी ॥

दो०-एक देखि बट छाँह भलि डासि मृदुल तृन पात।
कहहिं गवाँइअ छिनुकु श्रमु गवनब अबहिं कि प्रात ॥११४॥

एक कलस भरि आनहिं पानी। अँचइअ नाथ कहहिं मृदु बानी ॥
सुनि प्रिय बचन प्रीति अति देखी। राम कृपाल सुसील बिसेषी ॥
जानी श्रमित सीय मन माहीं। घरिक बिलंबु कीन्ह बट छाहीं ॥
मुदित नारि नर देखहिं सोभा। रूप अनूप नयन मनु लोभा ॥
एकटक सब सोहहिं चहुँ ओरा। रामचंद्र मुख चंद चकोरा ॥
तरुन तमाल बरन तनु सोहा। देखत कोटि मदन मनु मोहा ॥
दामिनि बरन लखन सुठि नीके। नख सिख सुभग भावते जी के ॥
मुनिपट कटिन्ह कसे तूनीरा। सोहहिं कर कमलनि धनु तीरा ॥

दो०-जटा मुकुट सीसनि सुभग उर भुज नयन बिसाल।
सरद परब बिधु बदन बर लसत स्वेद कन जाल ॥११५॥

बरनि न जाइ मनोहर जोरी। सोभा बहुत थोरि मति मोरी ॥
राम लखन सिय सुंदरताई। सब चितवहिं चित मन मति लाई ॥
थके नारि नर प्रेम पिआसे। मनहुँ मृगी मृग देखि दिआ से ॥
सीय समीप ग्रामतिय जाहीं। पूँछत अति सनेहँ सकुचाहीं ॥
बार बार सब लागहिं पाएँ। कहहिं बचन मृदु सरल सुभाएँ ॥

राजकुमारि बिनय हम करहीं। तिय सुभायँ कछु पूँछत डरहीं॥
स्वामिनि अबिनय छमबि हमारी। बिलगु न मानब जानि गवाँरी॥
राजकुअँर दोउ सहज सलोने। इन्ह तें लही दुति मरकत सोने॥

दो०-स्यामल गौर किसोर बर सुंदर सुषमा ऐन।
सरद सर्बरीनाथ मुखु सरद सरोरुह नैन॥११६॥

कोटि मनोज लजावनिहारे। सुमुखि कहहु को आहिं तुम्हारे॥
सुनि सनेहमय मंजुल बानी। सकुची सिय मन महुँ मुसुकानी॥
तिन्हहि बिलोकि बिलोकति धरनी। दुहुँ सकोच सकुचति बरबरनी॥
सकुचि सप्रेम बाल मृग नयनी। बोली मधुर बचन पिकबयनी॥
सहज सुभाय सुभग तन गोरे। नामु लखनु लघु देवर मोरे॥
बहुरि बदनु बिधु अंचल ढाँकी। पिय तन चितइ भौंह करि बाँकी॥
खंजन मंजु तिरीछे नयननि। निज पति कहेउ तिन्हहि सियँ सयननि॥
भईं मुदित सब ग्रामबधूटीं। रंकन्ह राय रासि जनु लूटीं॥

दो०-अति सप्रेम सिय पायँ परि बहुबिधि देहिं असीस।
सदा सोहागिनि होहु तुम्ह जब लगि महि अहि सीस॥११७॥

पारबती सम पतिप्रिय होहू। देबि न हम पर छाड़ब छोहू॥
पुनि पुनि बिनय करिअ कर जोरी। जौं एहि मारग फिरिअ बहोरी॥
दरसनु देब जानि निज दासी। लखीं सीयँ सब प्रेम पिआसी॥
मधुर बचन कहि कहि परितोषीं। जनु कुमुदिनीं कौमुदीं पोषीं॥
तबहिं लखन रघुबर रुख जानी। पूँछेउ मगु लोगन्हि मृदु बानी॥
सुनत नारि नर भए दुखारी। पुलकित गात बिलोचन बारी॥
मिटा मोदु मन भए मलीने। बिधि निधि दीन्ह लेत जनु छीने॥
समुझि करम गति धीरजु कीन्हा। सोधि सुगम मगु तिन्ह कहि दीन्हा॥

दो०-लखन जानकी सहित तब गवनु कीन्ह रघुनाथ।
फेरे सब प्रिय बचन कहि लिए लाइ मन साथ॥११८॥

फिरत नारि नर अति पछिताहीं। दैअहि दोषु देहिं मन माहीं ॥
सहित बिषाद परसपर कहही। बिधि करतब उलटे सब अहहीं ॥
निपट निरंकुस निठुर निसकू। जेहिं ससि कीन्ह सरुज सकलकू ॥
रूख कलपतरु सागरु खारा। तेहिं पठए बन राजकुमारा ॥
जौं पै इन्हहि दीन्ह बनबासू। कीन्ह बादि बिधि भोग बिलासू ॥
ए बिचरहिं मग बिनु पदत्राना। रचे बादि बिधि बाहन नाना ॥
ए महि परहिं डासि कुस पाता। सुभग सेज कत सृजत बिधाता ॥
तरुबर बास इन्हहि बिधि दीन्हा। धवलधाम रचि रचि श्रमु कीन्हा ॥

दो०—जौं ए मुनि पट धर जटिल सुंदर सुठि सुकुमार।
बिबिध भाँति भूषन बसन बादि किए करतार ॥११९॥

जौं ए कंद मूल फल खाहीं। बादि सुधादि असन जग माहीं ॥
एक कहहिं ए सहज सुहाए। आपु प्रगट भए बिधि न बनाए ॥
जहँ लगि बेद कही बिधि करनी। श्रवन नयन मन गोचर बरनी ॥
देखहु खोजि भुअन दस चारी। कहँ अस पुरुष कहाँ असि नारी ॥
इन्हहि देखि बिधि मनु अनुरागा। पटतर जोग बनावै लागा ॥
कीन्ह बहुत श्रम ऐक न आए। तेहिं इरिषा बन आनि दुराए ॥
एक कहहिं हम बहुत न जानहिं। आपुहि परम धंन्य करि मानहिं ॥
ते पुनि पुन्यपुंज हम लेखे। जे देखहिं देखिहहि जिन्ह देखे ॥

दो०—एहि बिधि कहि कहि बचन प्रिय लेहिं नयन भरि नीर।
किमि चलिहहिं मारग अगम सुठि सुकुमार सरीर ॥१२०॥

नारि सनेह बिकल बस होहीं। चकई साँझ समय जनु सोहीं ॥
मृदु पद कमल कठिन मगु जानी। गहबरि हृदयँ कहहिं बर बानी ॥
परसत मृदुल चरन अरुनारे। सकुचति महि जिमि हृदय हमारे ॥
जौं जगदीस इन्हहि बनु दीन्हा। कस न सुमनमय मारगु कीन्हा ॥

जौं मागा पाइअ बिधि पाहीं । ए रखिअहिं सखि आँखिन्ह माहीं ॥
जे नर नारि न अवसर आए । तिन्ह सिय रामु न देखन पाए ॥
सुनि सुरूपु बूझहिं अकुलाई । अब लगि गए कहाँ लगि भाई ॥
समरथ धाइ बिलोकहिं जाई । प्रमुदित फिरहिं जनमफलु पाई ॥

दो०–अबला बालक बृद्धजन कर मीजहिं पछिताहिं ।
होहिं प्रेमबस लोग इमि रामु जहाँ जहँ जाहिं ॥१२१॥

गाँव गाँव अस होइ अनंदू । देखि भानुकुल कैरव चंदू ॥
जे कछु समाचार सुनि पावहिं । ते नृप रानिहि दोसु लगावहिं ॥
कहहिं एक अति भल नरनाहू । दीन्ह हमहि जोइ लोचन लाहू ॥
कहहिं परसपर लोग लोगाईं । बातें सरल सनेह सुहाईं ॥
ते पितु मातु धन्य जिन्ह जाए । धन्य सो नगरु जहाँ तें आए ॥
धन्य सो देसु सैलु बन गाऊँ । जहँ जहँ जाहिं धन्य सोइ ठाऊँ ॥
सुखु पायउ बिरंचि रचि तेही । ए जेहि के सब भाँति सनेही ॥
राम लखन पथि कथा सुहाई । रही सकल मग कानन छाई ॥

दो०–एहि बिधि रघुकुल कमल रबि मग लोगन्ह सुख देत ।
जाहिं चले देखत बिपिन सिय सौमित्रि समेत ॥१२२॥

आगें रामु लखनु बने पाछें । तापस बेष बिराजत काछें ॥
उभय बीच सिय सोहति कैसें । ब्रह्म जीव बिच माया जैसें ॥
बहुरि कहउँ छबि जसि मन बसई । जनु मधु मदन मध्य रति लसई ॥
उपमा बहुरि कहउँ जियँ जोही । जनु बुध बिधु बिच रोहिनि सोही ॥
प्रभु पद रेख बीच बिच सीता । धरति चरन मग चलति सभीता ॥
सीय राम पद अंक बराएँ । लखन चलहिं मगु दाहिन लाएँ ॥
राम लखन सियप्रीति सुहाई । बचन अगोचर किमि कहि जाई ॥
खग मृग मगन देखि छबि होहीं । लिए चोरि चित राम बटोहीं ॥

दो०-जिन्ह जिन्ह देखे पथिक प्रिय सिय समेत दोउ भाइ ।
भव मगु अगमु अनंदु तेइ बिनु श्रम रहे सिराइ ॥१२३॥

अजहुँ जासु उर सपनेहुँ काऊ । बसहुँ लखनु सिय रामु बटाऊ ॥
राम धाम पथ पाइहि सोई । जो पथ पाव कबहुँ मुनि कोई ॥
तब रघुबीर श्रमित सिय जानी । देखि निकट बटु सीतल पानी ॥
तहँ बसि कंद मूल फल खाई । प्रात नहाइ चले रघुराई ॥
देखत बन सर सैल सुहाए । बालमीकि आश्रम प्रभु आए ॥
राम दीख मुनि बासु सुहावन । सुंदर गिरि काननु जलु पावन ॥
सरनि सरोज बिटप बन फूले । गुंजत मंजु मधुप रस भूले ॥
खग मृग बिपुल कोलाहल करहीं । बिरहित बैर मुदित मन चरहीं ॥

दो०-सुचि सुंदर आश्रमु निरखि हरषे राजिवनेन ।
सुनि रघुबर आगमनु मुनि आगें आयउ लेन ॥१२४॥

मुनि कहुँ राम दंडवत कीन्हा । आसिरबादु बिप्रबर दीन्हा ॥
देखि राम छबि नयन जुड़ाने । करि सनमानु आश्रमहिं आने ॥
मुनिबर अतिथि प्रानप्रिय पाए । कंद मूल फल मधुर मगाए ॥
सिय सौमित्रि राम फल खाए । तब मुनि आश्रम दिए सुहाए ॥
बालमीकि मन आनँदु भारी । मंगल मूरति नयन निहारी ॥
तब कर कमल जोरि रघुराई । बोले बचन श्रवन सुखदाई ॥
तुम्ह त्रिकाल दरसी मुनिनाथा । बिस्व बदर जिमि तुम्हरें हाथा ॥
अस कहि प्रभु सब कथा बखानी । जेहि जेहि भाँति दीन्ह बनु रानी ॥

दो०-तात बचन पुनि मातु हित भाइ भरत अस राउ ।
मो कहुँ दरस तुम्हार प्रभु सबु मम पुन्य प्रभाउ ॥१२५॥

देखि पाय मुनिराय तुम्हारे । भए सुकृत सब सुफल हमारे ॥
अब जहँ राउर आयसु होई । मुनि उदबेगु न पावै कोई ॥

मुनि तापस जिन्ह तें दुखु लहहीं। ते नरेस बिनु पावक दहहीं॥
मंगल मूल बिप्र परितोषू। दहइ कोटि कुल भूसुर रोषू॥
अस जियँ जानि कहिअ सोइ ठाऊँ। सिय सौमित्रि सहित जहँ जाऊँ॥
तहँ रचि रुचिर परन तृन साला। बासु करौं कछु काल कृपाला॥
सहज सरल सुनि रघुबर बानी। साधु साधु बोले मुनि ग्यानी॥
कस न कहहु अस रघुकुलकेतू। तुम्ह पालक संतत श्रुति सेतू॥

छं०-श्रुति सेतु पालक राम तुम्ह जगदीस माया जानकी॥
जो सृजति जगु पालति हरति रुख पाइ कृपानिधान की॥
जो सहससीसु अहीसु महिधरु लखनु सचराचर धनी॥
सुर काज धरि नरराज तनु चले दलन खल निसिचर अनी॥

सो०-राम सरूप तुम्हार बचन अगोचर बुद्धिपर।
अबिगत अकथ अपार नेति नेति नित निगम कह॥१२६॥

जगु पेखन तुम्ह देखनिहारे। बिधि हरि संभु नचावनिहारे॥
तेउ न जानहिं मरमु तुम्हारा। और तुम्हहि को जाननिहारा॥
सोइ जानइ जेहि देहु जनाई। जानत तुम्हहि तुम्हइ होइ जाई॥
तुम्हरिहि कृपाँ तुम्हहि रघुनंदन। जानहिं भगत भगत उर चंदन॥
चिदानंदमय देह तुम्हारी। बिगत बिकार जान अधिकारी॥
नर तनु धरेहु संत सुर काजा। कहहु करहु जस प्राकृत राजा॥
राम देखि सुनि चरित तुम्हारे। जड़ मोहहिं बुध होहिं सुखारे॥
तुम्ह जो कहहु करहु सबु साँचा। जस काछिअ तस चाहिअ नाचा॥

दो०-पूँछेहु मोहि कि रहौं कहँ मैं पूँछत सकुचाउँ।
जहँ न होहु तहँ देहु कहि तुम्हहि देखावौं ठाउँ॥१२७॥

सुनि मुनि बचन प्रेम रस साने। सकुचि राम मन महुँ मुसुकाने॥
बालमीकि हँसि कहहिं बहोरी। बानी मधुर अमिअ रस बोरी॥

सुनहु राम अब कहउँ निकेता। जहाँ बसहु सिय लखन समेता॥
जिन्ह के श्रवन समुद्र समाना। कथा तुम्हारि सुभग सरि नाना॥
भरहिं निरंतर होहिं न पूरे। तिन्ह के हिय तुम्ह कहुँ गृह रूरे॥
लोचन चातक जिन्ह करि राखे। रहहिं दरस जलधर अभिलाषे॥
निदरहिं सरित सिंधु सर भारी। रूप बिंदु जल होहिं सुखारी॥
तिन्ह के हृदय सदन सुखदायक। बसहु बंधु सिय सह रघुनायक॥

दो०-जसु तुम्हार मानस बिमल हंसिनि जीहा जासु।
मुकताहल गुन गन चुनइ राम बसहु हियँ तासु॥१२८॥

प्रभु प्रसाद सुचि सुभग सुबासा। सादर जासु लहइ नित नासा॥
तुम्हहि निवेदित भोजन करहीं। प्रभु प्रसाद पट भूषन धरहीं॥
सीस नवहिं सुर गुरु द्विज देखी। प्रीति सहित करि बिनय बिसेषी॥
कर नित करहिं राम पद पूजा। राम भरोस हृदयँ नहिं दूजा॥
चरन राम तीरथ चलि जाहीं। राम बसहु तिन्ह के मन माहीं॥
मंत्रराजु नित जपहिं तुहारा। पूजहिं तुम्हहि सहित परिवारा॥
तरपन होम करहिं बिधि नाना। बिप्र जेवाँइ देहिं बहु दाना॥
तुम्ह तें अधिक गुरहि जियँ जानी। सकल भायँ सेवहिं सनमानी॥

दो०-सबु करि मागहिं एक फलु राम चरन रति होउ।
तिन्ह के मन मंदिर बसहु सिय रघुनंदन दोउ॥१२९॥

काम कोह मद मान न मोहा। लोभ न छोभ न राग न द्रोहा॥
जिन्ह के कपट दंभ नहिं माया। तिन्ह के हृदय बसहु रघुराया॥
सब के प्रिय सब के हितकारी। दुख सुख सरिस प्रसंसा गारी॥
कहहिं सत्य प्रिय बचन बिचारी। जागत सोवत सरन तुम्हारी॥
तुम्हहि छाड़ि गति दूसरि नाहीं। राम बसहु तिन्ह के मन माहीं॥
जननी सम जानहिं परनारी। धनु पराव बिष तें बिष भारी॥

जे हरषहिं पर संपति देखी। दुखित होहिं पर बिपति बिसेषी॥
जिन्हहि राम तुम्ह प्रानपिआरे। तिन्ह के मन सुभ सदन तुम्हारे॥

दो०-स्वामि सखा पितु मातु गुर जिन्ह के सब तुम्ह तात।
मन मंदिर तिन्ह कें बसहु सीय सहित दोउ भ्रात॥१३०॥

अवगुन तजि सब के गुन गहहीं। बिप्र धेनु हित संकट सहहीं॥
नीति निपुन जिन्ह कइ जग लीका। घर तुम्हार तिन्ह कर मनु नीका॥
गुन तुम्हार समुझइ निज दोसा। जेहि सब भाँति तुम्हार भरोसा॥
राम भगत प्रिय लागहिं जेही। तेहि उर बसहु सहित बैदेही॥
जाति पाँति धनु धरमु बड़ाई। प्रिय परिवार सदन सुखदाई॥
सब तजि तुम्हहि रहइ उर लाई। तेहि के हृदयँ रहहु रघुराई॥
सरगु नरकु अपबरगु समाना। जहँ तहँ देख धरें धनु बाना॥
करम बचन मन राउर चेरा। राम करहु तेहि कें उर डेरा॥

दो०-जाहि न चाहिअ कबहुँ कछु तुम्ह सन सहज सनेहु।
बसहु निरंतर तासु मन सो राउर निज गेहु॥१३१॥

एहि बिधि मुनिबर भवन देखाए। बचन सप्रेम राम मन भाए॥
कह मुनि सुनहु भानुकुलनायक। आश्रम कहउँ समय सुखदायक॥
चित्रकूट गिरि करहु निवासू। तहँ तुम्हार सब भाँति सुपासू॥
सैलु सुहावन कानन चारू। करि केहरि मृग बिहग बिहारू॥
नदी पुनीत पुरान बखानी। अत्रिप्रिया निज तपबल आनी॥
सुरसरि धार नाउँ मंदाकिनि। जो सब पातक पोतक डाकिनि॥
अत्रि आदि मुनिबर बहु बसहीं। करहिं जोग जप तप तन कसहीं॥
चलहु सफल श्रम सबकर करहू। राम देहु गौरव गिरिबरहू॥

दो०-चित्रकूट महिमा अमित कही महामुनि गाइ।
आइ नहाए सरित बर सिय समेत दोउ भाइ॥१३२॥

रघुबर कहेउ लखन भल घाटू। करहु कतहुँ अब ठाहर ठाटू॥
लखन दीख पय उतर करारा। चहुँ दिसि फिरेउ धनुष जिमि नारा॥
नदी पनच सर सम दम दाना। सकल कलुष कलि साउज नाना॥
चित्रकूट जनु अचल अहेरी। चुकइ न घात मार मुठभेरी॥
अस कहि लखन ठाउँ देखरावा। थलु बिलोकि रघुबर सुखु पावा॥
रमेउ राम मनु देवन्ह जाना। चले सहित सुर थपति प्रधाना॥
कोल किरात बेष सब आए। रचे परन तृन सदन सुहाए॥
बरनि न जाहिं मंजु दुइ साला। एक ललित लघु एक बिसाला॥

दो०-लखन जानकी सहित प्रभु राजत रुचिर निकेत।
सोह मदनु मुनि बेष जनु रति रितुराज समेत॥१३३॥

अमर नाग किंनर दिसिपाला। चित्रकूट आए तेहि काला॥
राम प्रनामु कीन्ह सब काहू। मुदित देव लहि लोचन लाहू॥
बरषि सुमन कह देव समाजू। नाथ सनाथ भए हम आजू॥
करि बिनती दुख दुसह सुनाए। हरषित निज निज सदन सिधाए॥
चित्रकूट रघुनंदनु छाए। समाचार सुनि सुनि मुनि आए॥
आवत देखि मुदित मुनिबृंदा। कीन्ह दंडबत रघुकुल चंदा॥
मुनि रघुबरहि लाइ उर लेहीं। सुफल होन हित आसिष देहीं॥
सिय सौमित्रि राम छबि देखहिं। साधन सकल सफल करि लेखहिं॥

दो०-जथाजोग सनमानि प्रभु बिदा किए मुनिबृंद।
करहिं जोग जप जाग तप निज आश्रमन्हि सुछंद॥१३४॥

यह सुधि कोल किरातन्ह पाई। हरषे जनु नव निधि घर आई॥
कंद मूल फल भरि भरि दोना। चले रंक जनु लूटन सोना॥
तिन्ह महँ जिन्ह देखे दोउ भ्राता। अपर तिन्हहि पूँछहिं मगु जाता॥
कहत सुनत रघुबीर निकाई। आइ सबन्हि देखे रघुराई॥

करहिं जोहारु भेंट धरि आगे। प्रभुहि बिलोकहिं अति अनुरागे॥
चित्र लिखे जनु जहँ तहँ ठाढ़े। पुलक सरीर नयन जल बाढ़े॥
राम सनेह मगन सब जाने। कहि प्रिय बचन सकल सनमाने॥
प्रभुहि जोहारि बहोरि बहोरी। बचन बिनीत कहहिं कर जोरी॥

दो०—अब हम नाथ सनाथ सब भए देखि प्रभु पाय।
भाग हमारे आगमनु राउर कोसलराय॥१३५॥

धन्य भूमि बन पथ पहारा। जहँ जहँ नाथ पाउ तुम्ह धारा॥
धन्य बिहग मृग काननचारी। सफल जनम भए तुम्हहि निहारी॥
हम सब धन्य सहित परिवारा। दीख दरसु भरि नयन तुम्हारा॥
कीन्ह बासु भल ठाउँ बिचारी। इहाँ सकल रितु रहब सुखारी॥
हम सब भाँति करब सेवकाई। करि केहरि अहि बाघ बराई॥
बन बेहड़ गिरि कंदर खोहा। सब हमार प्रभु पग पग जोहा॥
तहँ तहँ तुम्हहि अहेर खेलाउब। सर निरझर जलठाउँ देखाउब॥
हम सेवक परिवार समेता। नाथ न सकुचब आयसु देता॥

दो०—बेद बचन मुनि मन अगम ते प्रभु करुना ऐन।
बचन किरातन्ह के सुनत जिमि पितु बालक बैन॥१३६॥

दो०—नीलकंठ कलकंठ सुक चातक चक्क चकोर।
भाँति भाँति बोलहिं बिहग श्रवन सुखद चित चोर॥१३७॥

करि केहरि कपि कोल कुरंगा। बिगतबैर बिचरहिं सब संगा॥
फिरत अहेर राम छबि देखी। होहिं मुदित मृगबृंद बिसेषी॥
बिबुध बिपिन जहँ लगि जग माहीं। देखि रामबनु सकल सिहाहीं॥
सुरसरि सरसइ दिनकर कन्या। मेकलसुत गोदावरि धन्या॥
सब सर सिंधु नदीं नद नाना। मंदाकिनि कर करहिं बखाना॥
उदय अस्त गिरि अरु कैलासू। मंदर मेरु सकल सुरबासू॥
सैल हिमाचल आदिक जेते। चित्रकूट जसु गावहिं तेते॥
बिंधि मुदित मन सुखु न समाई। श्रम बिनु बिपुल बड़ाई पाई॥

दो०—चित्रकूट के बिहग मृग बेलि बिटप तृन जाति।
पुन्य पुंज सब धन्य अस कहहिं देव दिन राति॥१३८॥

नयनवंत रघुबरहि बिलोकी। पाइ जनम फल होहिं बिसोकी॥
परसि चरन रज अचर सुखारी। भए परम पद के अधिकारी॥
सो बनु सैलु सुभायँ सुहावन। मंगलमय अति पावन पावन॥
महिमा कहिअ कवनि बिधि तासू। सुखसागर जहँ कीन्ह निवासू॥
पय पयोधि तजि अवध बिहाई। जहँ सिय लखनु रामु रहे आई॥
कहि न सकहिं सुषमा जसि कानन। जौं सत सहस होहिं सहसानन॥
सो मैं बरनि कहौं बिधि केहीं। डाबर कमठ कि मंदर लेहीं॥
सेवहिं लखनु करम मन बानी। जाइ न सीलु सनेहु बखानी॥

दो०—छिनु छिनु लखि सिय राम पद जानि आपु पर नेहु।
करत न सपनेहुँ लखनु चितु बंधु मातु पितु गेहु॥१३९॥

राम संग सिय रहति सुखारी। पुर परिजन गृह सुरति बिसारी॥
छिनु छिनु पिय बिधु बदनु निहारी। प्रमुदित मनहुँ चकोरकुमारी॥

नाह नेहु नित बढ़त बिलोकी। हरषित रहति दिवस जिमि कोकी॥
सिय मनु राम चरन अनुरागा। अवध सहस सम बनु प्रिय लागा॥
परनकुटी प्रिय प्रियतम संगा। प्रिय परिवारु कुरंग बिहंगा॥
सासु ससुर सम मुनितिय मुनिवर। असनु अमिअ सम कंद मूल फर॥
नाथ साथ साँथरी सुहाई। मयन सयन सय सम सुखदाई॥
लोकप होहिं बिलोकत जासू। तेहि कि मोहि सक बिषय बिलासू॥

दो०—सुमिरत रामहि तजहिं जन तृन सम बिषय बिलासु।
रामप्रिया जग जननि सिय कछु न आचरजु तासु॥१४०॥

सीय लखन जेहि बिधि सुखु लहहीं। सोइ रघुनाथ करहिं सोइ कहहीं॥
कहहिं पुरातन कथा कहानी। सुनहिं लखनु सिय अति सुखु मानी॥
जब जब रामु अवध सुधि करहीं। तब तब बारि बिलोचन भरहीं॥
सुमिरि मातु पितु परिजन भाई। भरत सनेहु सीलु सेवकाई॥
कृपासिंधु प्रभु होहिं दुखारी। धीरजु धरहिं कुसमउ बिचारी॥
लखि सिय लखनु बिकल होइ जाहीं। जिमि पुरुषहि अनुसर परिछाहीं॥
प्रिया बंधु गति लखि रघुनंदनु। धीर कृपाल भगत उर चंदनु॥
लगे कहन कछु कथा पुनीता। सुनि सुखु लहहिं लखनु अरु सीता॥

दो०—रामु लखन सीता सहित सोहत परन निकेत।
जिमि बासव बस अमरपुर सची जयंत समेत॥१४१॥

जोगवहिं प्रभु सिय लखनहि कैसें। पलक बिलोचन गोलक जैसें॥
सेवहिं लखनु सीय रघुबीरहि। जिमि अबिबेकी पुरुष सरीरहि॥
एहि बिधि प्रभु बन बसहिं सुखारी। खग मृग सुर तापस हितकारी॥
कहेउँ राम बन गवनु सुहावा। सुनहु सुमंत्र अवध जिमि आवा॥
फिरेउ निषादु प्रभुहि पहुँचाई। सचिव सहित रथ देखेसि आई॥
मंत्री बिकल बिलोकि निषादू। कहि न जाइ जस भयउ बिषादू॥

राम राम सिय लखन पुकारी । परेउ धरनितल व्याकुल भारी ॥
देखि दखिन दिसि हय हिहिनाहीं । जनु बिनु पख बिहग अकुलाहीं ॥

दो०-नहिं तृन चरहिं न पिअहिं जलु मोचहिं लोचन बारि ।
व्याकुल भए निषाद सब रघुवर बाजि निहारि ॥१४२॥

धरि धीरजु तब कहइ निषादू । अब सुमन्त्र परिहरहु विषादू ॥
तुम्ह पंडित परमारथ ग्याता । धरहु धीर लखि बिमुख बिधाता ॥
बिबिधि कथा कहि कहि मृदु बानी । रथ बैठारेउ बरबस आनी ॥
सोक सिथिल रथु सकइ न हाँकी । रघुबर बिरह पीर उर बाँकी ॥
चरफराहिं मग चलहिं न घोरे । बन मृग मनहुँ आनि रथ जोरे ॥
अढुकि परहिं फिरि हेरहि पीछे । राम बियोगि बिकल दुख तीछें ॥
जौ कह रामु लखनु बैदेही । हिंकरि हिकरि हित हेरहिं तेही ॥
बाजि बिरह गति कहि किमि जाती । बिनु मनि फनिक बिकल जेहि भाँती ॥

दो०-भयउ निषादु बिषादबस देखत सचिव तुरंग ।
बोलि सेवक सुचारि तब दिए सारथी संग ॥१४३॥

गुह सारथिहि फिरेउ पहुँचाई । बिरहु बिषादु बरनि नहिं जाई ॥
चले अवध लेइ रथहि निषादा । होहिं छनहिं छन मगन बिषादा ॥
सोच सुमन्त्र बिकल दुख दीना । धिग जीवन रघुबीर बिहीना ॥
रहिहि न अंतहुँ अधम सरीरू । जसु न लहेउ बिछुरत रघुबीरू ॥
भए अजस अघ भाजन प्राना । कवन हेतु नहिं करत पयाना ॥
अहह मंद मनु अवसर चूका । अजहुँ न हृदय होत दुइ टूका ॥
मीजि हाथ सिरु धुनि पछिताई । मनहुँ कृपन धन रासि गवाँई ॥
बिरिद बाँधि बर बीरु कहाई । चलेउ समर जनु सुभट पराई ॥

दो०-बिप्र बिबेकी बेदबिद संमत साधु सुजाति ।
जिमि धोखें मदपान कर सचिव सोच तेहि भाँति ॥१४४॥

जिमि कुलीन तिय साधु सयानी । पतिदेवता करम मन बानी ॥
रहै करम बस परिहरि नाहू । सचिव हृदयँ तिमि दारुन दाहू ॥
लोचन सजल डीठि भइ थोरी । सुनइ न श्रवन बिकल मति भोरी ॥
सूखहिं अधर लागि मुँह लाटी । जिउ न जाइ उर अवधि कपाटी ॥
बिबरन भयउ न जाइ निहारी । मारेसि मनहुँ पिता महतारी ॥
हानि गलानि बिपुल मन ब्यापी । जमपुर पंथ सोच जिमि पापी ॥
बचनु न आव हृदयँ पछिताई । अवध काह मैं देखब जाई ॥
राम रहित रथ देखिहि जोई । सकुचिहि मोहि बिलोकत सोई ॥

दो०–धाइ पूँछिहहिं मोहि जब बिकल नगर नर नारि ।
उतरु देब मैं सबहि तब हृदयँ बज्रु बैठारि ॥१४५॥

पुछिहहि दीन दुखित सब माता । कहब काह मैं तिन्हहि बिधाता ॥
पूछिहि जबहिं लखन महतारी । कहिहउँ कवन सँदेस सुखारी ॥
राम जननि जब आइहि धाई । सुमिरि बच्छु जिमि धेनु लवाई ॥
पूँछत उतरु देब मैं तेही । गे बनु राम लखनु बैदेही ॥
जोइ पूँछिहि तेहि ऊतरु देबा । जाइ अवध अब यहु सुखु लेबा ॥
पूँछिहि जबहिं राउ दुख दीना । जिवनु जासु रघुनाथ अधीना ॥
देहउँ उतरु कौनु मुहु लाई । आयउँ कुसल कुअँर पहुँचाई ॥
सुनत लखन सिय राम सँदेसू । तृन जिमि तनु परिहरिहि नरेसू ॥

दो०–हृदउ न बिदरेउ पंक जिमि बिछुरत प्रीतमु नीरु ।
जानत हौं मोहि दीन्ह बिधि यहु जातना सरीरु ॥१४६॥

एहि बिधि करत पंथ पछितावा । तमसा तीर तुरत रथु आवा ॥
बिदा किए करि बिनय निषादा । फिरे पायँ परि बिकल बिषादा ॥
पैठत नगर सचिव सकुचाई । जनु मारेसि गुर बाँभन गाई ॥
बैठि बिटप तर दिवसु गवाँवा । साँझ समय तब अवसरु पावा ॥

अवध प्रबेसु कीन्ह अँधियारें । पैठ भवन रथु राखि दुआरें ॥
जिन्ह जिन्ह समाचार सुनि पाए । भूप द्वार रथु देखन आए ॥
रथु पहिचानि बिकल लखि घोरे । गरहिं गात जिमि आतप ओरे ॥
नगर नारि नर व्याकुल कैसें । निघटत नीर मीनगन जैसें ॥

दो०—सचिव आगमनु सुनत सबु बिकल भयउ रनिवासु ।
भवनु भयंकरु लाग तेहि मानहुँ प्रेत निवासु ॥१४७॥

अति आरति सब पूँछहिं रानी । उतरु न आव बिकल भइ बानी ॥
सुनइ न श्रवन नयन नहिं सूझा । कहहु कहाँ नृपु तेहि तेहि बूझा ॥
दासिन्ह दीख सचिव बिकलाई । कौसल्या गृहँ गईं लवाई ॥
जाइ सुमंत्र दीख कस राजा । अमिय रहित जनु चंदु बिराजा ॥
आसन सयन बिभूषन हीना । परेउ भूमितल निपट मलीना ॥
लेइ उसासु सोच एहि भाँती । सुरपुर तें जनु खँसेउ जजाती ॥
लेत सोच भरि छिनु छिनु छाती । जनु जरि पंख परेउ संपाती ॥
राम राम कह राम सनेही । पुनि कह राम लखन बैदेही ॥

दो०—देखि सचिवँ जय जीव कहि कीन्हेउ दंड प्रनामु ।
सुनत उठेउ ब्याकुल नृपति कहु सुमंत्र कहँ रामु ॥१४८॥

भूप सुमंत्रु लीन्ह उर लाई । बूड़त कछु अधार जनु पाई ॥
सहित सनेह निकट बैठारी । पूँछत राउ नयन भरि बारी ॥
राम कुसल कहु सखा सनेही । कहँ रघुनाथु लखनु बैदेही ॥
आने फेरि कि बनहि सिधाए । सुनत सचिव लोचन जल छाए ॥
सोक बिकल पुनि पूँछ नरेसू । कहु सिय राम लखन संदेसू ॥
राम रूप गुन सील सुभाऊ । सुमिरि सुमिरि उर सोचत राऊ ॥
राउ सुनाइ दीन्ह बनबासू । सुनि मन भयउ न हरषु हराँसू ॥
सो सुत बिछुरत गए न प्राना । को पापी बड़ मोहि समाना ॥

दो०—सखा रामु सिय लखनु जहँ तहाँ मोहि पहुँचाउ।
नाहिं त चाहत चलन अब प्रान कहउँ सतिभाउ ॥१४९॥

पुनि पुनि पूँछत मंत्रिहि राऊ। प्रियतम सुअन सँदेस सुनाऊ ॥
करहि सखा सोइ बेगि उपाऊ। रामु लखनु सिय नयन देखाऊ ॥
सचिव धीर धरि कह मृदु बानी। महाराज तुम्ह पंडित ग्यानी ॥
बीर सुधीर धुरंधर देवा। साधु समाजु सदा तुम्ह सेवा ॥
जनम मरन सब दुख सुख भोगा। हानि लाभु प्रिय मिलन बियोगा ॥
काल करम बस होहिं गोसाईं। बरबस राति दिवस की नाईं ॥
सुख हरषहिं जड़ दुख बिलखाहीं। दोउ सम धीर धरहिं मन माहीं ॥
धीरज धरहु बिबेकु बिचारी। छाड़िअ सोच सकल हितकारी ॥

दो०—प्रथम बासु तमसा भयउ दूसर सुरसरि तीर।
न्हाइ रहे जलपानु करि सिय समेत दोउ बीर ॥१५०॥

केवट कीन्हि बहुत सेवकाई। सो जामिनि सिंगरौर गवाँई ॥
होत प्रात बट छीरु मगावा। जटा मुकुट निज सीस बनावा ॥
राम सखाँ तब नाव मगाई। प्रिया चढ़ाइ चढ़े रघुराई ॥
लखन बान धनु धरे बनाई। आपु चढ़े प्रभु आयसु पाई ॥
बिकल बिलोकि मोहि रघुबीरा। बोले मधुर बचन धरि धीरा ॥
तात प्रनामु तात सन कहेहू। बार बार पद पंकज गहेहू ॥
करबि पायँ परि बिनय बहोरी। तात करिअ जनि चिंता मोरी ॥
बन मग मंगल कुसल हमारें। कृपा अनुग्रह पुन्य तुम्हारें ॥

छं०—तुम्हरें अनुग्रह तात कानन जात सब सुखु पाइहौं ॥
प्रतिपालि आयसु कुसल देखन पाय पुनि फिरि आइहौं ॥
जननीं सकल परितोषि परि परि पायँ करि बिनती घनी ॥
तुलसी करेहु सोइ जतनु जेहिं कुसली रहहिं कोसल धनी ॥

सो०-गुर सन कहब सँदेसु बार बार पद पदुम गहि ।
करब सोइ उपदेसु जेहिं न सोच मोहि अवधपति ॥१५१॥

पुरजन परिजन सकल निहोरी । तात सुनाएहु बिनती मोरी ॥
सोइ सब भाँति मोर हितकारी । जाते रह नरनाहु सुखारी ॥
कहब सँदेसु भरत के आएँ । नीति न तजिअ राजपदु पाएँ ॥
पालेहु प्रजहि करम मन बानी । सेएहु मातु सकल सम जानी ॥
और निबाहेहु भायप भाई । करि पितु मातु सुजन सेवकाई ॥
तात भाँति तेहि राखब राऊ । सोच मोर जेहिं करै न काऊ ॥
लखन कहे कछु बचन कठोरा । बरजि राम पुनि मोहि निहोरा ॥
बार बार निज सपथ देवाई । कहबि न तात लखन लरिकाई ॥

दो०-कहि प्रनामु कछु कहन लिय सिय भइ सिथिल सनेह ।
थकित बचन लोचन सजल पुलक पल्लवित देह ॥१५२॥

तेहि अवसर रघुबर रुख पाई । केवट पारहि नाव चलाई ॥
रघुकुलतिलक चले एहि भाँती । देखउँ ठाढ़ कुलिस धरि छाती ॥
मैं आपन किमि कहौं कलेसू । जिअत फिरेउँ लेइ राम सँदेसू ॥
अस कहि सचिव बचन रहि गयऊ । हानि गलानि सोच बस भयऊ ॥
सूत बचन सुनतहिं नरनाहू । परेउ धरनि उर दारुन दाहू ॥
तलफत बिषम मोह मन मापा । माजा मनहुँ मीन कहुँ ब्यापा ॥
करि बिलाप सब रोवहिं रानी । महा बिपति किमि जाइ बखानी ॥
सुनि बिलाप दुखहू दुखु लागा । धीरजहू कर धीरजु भागा ॥

दो०-भयउ कोलाहलु अवध अति सुनि नृप राउर सोरु ।
बिपुल बिहग बन परेउ निसि मानहुँ कुलिस कठोरु ॥१५३॥

प्रान कंठगत भयउ भुआलू । मनि बिहीन जनु ब्याकुल ब्यालू ॥
इंद्रीं सकल बिकल भइँ भारी । जनु सर सरसिज बनु बिनु बारी ॥

कौसल्याँ नृपु दीख मलीना । रबिकुल रबि अँथयउ जियँ जाना ॥
उर धरि धीर राम महतारी । बोली बचन समय अनुसारी ॥
नाथ समुझि मन करिअ बिचारू । राम बियोग पयोधि अपारू ॥
करनधार तुम्ह अवध जहाजू । चढ़ेउ सकल प्रिय पथिक समाजू ॥
धीरजु धरिअ त पाइअ पारू । नाहिं त बूड़िहि सबु परिवारू ॥
जौं जियँ धरिअ बिनय पिय मोरी । रामु लखनु सिय मिलहिं बहोरी ॥

दो०-प्रिया बचन मृदु सुनत नृपु चितयउ आँखि उघारि ।
तलफत मीन मलीन जनु सींचत सीतल बारि ॥१५४॥

धरि धीरजु उठि बैठ भुआलू । कहु सुमंत्र कहँ राम कृपालू ॥
कहाँ लखनु कहँ रामु सनेही । कहँ प्रिय पुत्रबधू बैदेही ॥
बिलपत राउ बिकल बहु भाँती । भइ जुग सरिस सिराति न राती ॥
तापस अंध साप सुधि आई । कौसल्यहि सब कथा सुनाई ॥
भयउ बिकल बरनत इतिहासा । राम रहित धिग जीवन आसा ॥
सो तनु राखि करब मैं काहा । जेहिं न प्रेम पनु मोर निबाहा ॥
हा रघुनंदन प्रान पिरीते । तुम्ह बिनु जिअत बहुत दिन बीते ॥
हा जानकी लखन हा रघुबर । हा पितु हित चित चातक जलधर ॥

दो०-राम राम कहि राम कहि राम राम कहि राम ।
तनु परिहरि रघुबर बिरहँ राउ गयउ सुरधाम ॥१५५॥

जिअन मरन फलु दसरथ पावा । अंड अनेक अमल जसु छावा ॥
जिअत राम बिधु बदनु निहारा । राम बिरह करि मरनु सँवारा ॥
सोक बिकल सब रोवहिं रानी । रूपु सीलु बलु तेजु बखानी ॥
करहिं बिलाप अनेक प्रकारा । परहिं भूमितल बारहिं बारा ॥
बिलपहिं बिकल दास अरु दासी । घर घर रुदनु करहिं पुरबासी ॥
अँथयउ आजु भानुकुल भानू । धरम अवधि गुन रूप निधानू ॥

गारीं सकल कैकइहि देहीं । नयन बिहीन कीन्ह जग जेहीं ॥
एहि बिधि बिलपत रैनि बिहानी । आए सकल महामुनि ग्यानी ॥

दो०-तब बसिष्ठ मुनि समय सम कहि अनेक इतिहास ।
सोक नेवारेउ सबहि कर निज बिग्यान प्रकास ॥१५६॥

तेल नावँ भरि नृप तनु राखा । दूत बोलाइ बहुरि अस भाषा ॥
धावहु बेगि भरत पहिं जाहू । नृप सुधि कतहुँ कहहु जनि काहू ॥
एतनेइ कहेहु भरत सन जाई । गुर बोलाइ पठयउ दोउ भाई ॥
सुनि मुनि आयसु धावन धाए । चले बेग बर बाजि लजाए ॥
अनरथु अवध अरभेउ जब ते । कुसगुन होहिं भरत कहुँ तब ते ॥
देखहि राति भयानक सपना । जागि करहिं कटु कोटि कलपना ॥
बिप्र जेवाँइ देहिं दिन दाना । सिव अभिषेक करहिं बिधि नाना ॥
मागहिं हृदयँ महेस मनाई । कुसल मातु पितु परिजन भाई ॥

दो०-एहि बिधि सोचत भरत मन धावन पहुँचे आइ ।
गुर अनुसासन श्रवन सुनि चले गनेसु मनाइ ॥१५७॥

चले समीर बेग हय हाँके । नाघत सरित सैल बन बाँके ॥
हृदयँ सोचु बड़ कछु न सोहाई । अस जानहिं जियँ जाउँ उड़ाई ॥
एक निमेष बरष सम जाई । एहि बिधि भरत नगर निअराई ॥
असगुन होहिं नगर पैठारा । रटहिं कुभाँति कुखेत करारा ॥
खर सिआर बोलहिं प्रतिकूला । सुनि सुनि होइ भरत मन सूला ॥
श्रीहत सर सरिता बन बागा । नगरु बिसेषि भयावनु लागा ॥
खग मृग हय गय जाहिं न जोए । राम बियोग कुरोग बिगोए ॥
नगर नारि नर निपट दुखारी । मनहुँ सबन्हि सब संपति हारी ॥

दो०-पुरजन मिलहिं न कहहिं कछु गवँहिं जोहारहिं जाहिं ।
भरत कुसल पूँछि न सकहिं भय बिषाद मन माहिं ॥१५८

हाट बाट नहिं जाइ निहारी। जनु पुर दहँ दिसि लागि दवारी॥
आवत सुत सुनि कैकयनंदिनि। हरषी रबिकुल जलरुह चंदिनि॥
सजि आरती मुदित उठि धाई। द्वारेहिं भेंटि भवन लेइ आई॥
भरत दुखित परिवारु निहारा। मानहुँ तुहिन बनज बनु मारा॥
कैकेई हरषित एहि भाँती। मनहुँ मुदित दव लाइ किराती॥
सुतहि ससोच देखि मनु मारे। पूँछति नैहर कुसल हमारे॥
सकल कुसल कहि भरत सुनाई। पूँछी निज कुल कुसल भलाई॥
कहु कहँ तात कहाँ सब माता। कहँ सिय राम लखन प्रिय भ्राता॥

दो०-सुनि सुत बचन सनेहमय कपट नीर भरि नैन।
भरत श्रवन मन सूल सम पापिनि बोली बैन॥१५९॥

तात बात मैं सकल सँवारी। भै मंथरा सहाय बिचारी॥
कछुक काज बिधि बीच बिगारेउ। भूपति सुरपति पुर पगु धारेउ॥
सुनत भरतु भए बिबस बिषादा। जनु सहमेउ करि केहरि नादा॥
तात तात हा तात पुकारी। परे भूमितल ब्याकुल भारी॥
चलत न देखन पायउँ तोही। तात न रामहि सौंपेहु मोही॥
बहुरि धीर धरि उठे सँभारी। कहु पितु मरन हेतु महतारी॥
सुनि सुत बचन कहति कैकेई। मरमु पाँछि जनु माहुर देई॥
आदिहु तें सब आपनि करनी। कुटिल कठोर मुदित मन बरनी॥

दो०-भरतहि बिसरेउ पितु मरन सुनत राम बन गौनु।
हेतु अपनपउ जानि जियँ थकित रहे धरि मौनु॥१६०॥

बिकल बिलोकि सुतहि समुझावति। मनहुँ जरे पर लोनु लगावति॥
तात राउ नहिं सोचै जोगू। बिढइ सुकृत जसु कीन्हेउ भोगू॥
जीवत सकल जनम फल पाए। अंत अमरपति सदन सिधाए॥
अस अनुमानि सोच परिहरहू। सहित समाज राज पुर करहू॥

सुनि सुठि सहमेउ राजकुमारू। पाके छत जनु लाग अँगारू॥
धीरज धरि भरि लेहिं उसासा। पापिनि सबहिं भाँति कुल नासा॥
जौं पै कुरुचि रही अति तोही। जनमत काहे न मारे मोही॥
पेड़ काटि तैं पालउ सींचा। मीन जिअन निति बारि उलीचा॥

दो०—हंसबंसु दसरथु जनकु राम लखन से भाइ।
जननी तूँ जननी भई बिधि सन कछु न बसाइ॥१६१॥

जब तै कुमति कुमत जियँ ठयऊ। खंड खंड होइ हृदउ न गयऊ॥
बर मागत मन भइ नहिं पीरा। गरि न जीह मुहँ परेउ न कीरा॥
भूपँ प्रतीति तोरि किमि कीन्ही। मरन काल बिधि मति हरि लीन्ही॥
बिधिहुँ न नारि हृदय गति जानी। सकल कपट अघ अवगुन खानी॥
सरल सुसील धरम रत राऊ। सो किमि जानै तीय सुभाऊ॥
अस को जीव जंतु जग माहीं। जेहि रघुनाथ प्रानप्रिय नाहीं॥
भे अति अहित रामु तेउ तोही। को तू अहसि सत्य कहु मोही॥
जो हसि सो हसि मुहँ मसि लाई। आँखि ओट उठि बैठहि जाई॥

दो०—राम बिरोधी हृदय ते प्रगट कीन्ह बिधि मोहि।
मो समान को पातकी बादि कहउँ कछु तोहि॥१६२॥

सुनि सत्रुघुन मातु कुटिलाई। जरहिं गात रिस कछु न बसाई॥
तेहि अवसर कुबरी तहँ आई। बसन बिभूषन बिबिध बनाई॥
लखि रिस भरेउ लखन लघु भाई। बरत अनल घृत आहुति पाई॥
हुमगि लात तकि कूबर मारा। परि मुह भर महि करत पुकारा॥
कूबर टूटेउ फूट कपारू। दलित दसन मुख रुधिर प्रचारू॥
आह दइअ मैं काह नसावा। करत नीक फलु अनइस पावा॥
सुनि रिपुहन लखि नख सिख खोटी। लगे घसीटन धरि धरि झोंटी॥
भरत दयानिधि दीन्हि छुड़ाई। कौसल्या पहिं गे दोउ भाई॥

दो०—मलिन बसन बिबरन बिकल कृस सरीर दुख भार।
कनक कलप बर बेलि बन मानहुँ हनी तुसार ॥१६३॥

भरतहि देखि मातु उठि धाई। मुरुछित अवनि परी झइँ आई ॥
देखत भरतु बिकल भए भारी। परे चरन तन दसा बिसारी ॥
मातु तात कहँ देहि देखाई। कहँ सिय रामु लखनु दोउ भाई ॥
कैकइ कत जनमी जग माझा। जौं जनमि त भइ काहे न बाँझा ॥
कुल कलंकु जेहिं जनमेउ मोही। अपजस भाजन प्रियजन द्रोही ॥
को तिभुवन मोहि सरिस अभागी। गति असि तोरि मातु जेहि लागी ॥
पितु सुरपुर बन रघुबर केतू। मैं केवल सब अनरथ हेतू ॥
धिग मोहि भयउँ बेनु बन आगी। दुसह दाह दुख दूषन भागी ॥

दो०—मातु भरत के बचन मृदु सुनि पुनि उठी सँभारि।
लिए उठाइ लगाइ उर लोचन मोचति बारि ॥१६४॥

सरल सुभाय मायँ हियँ लाए। अति हित मनहुँ राम फिरि आए ॥
भेंटेउ बहुरि लखन लघु भाई। सोकु सनेहु न हृदयँ समाई ॥
देखि सुभाउ कहत सबु कोई। राम मातु अस काहे न होई ॥
माताँ भरतु गोद बैठारे। आँसु पोंछि मृदु बचन उचारे ॥
अजहुँ बच्छ बलि धीरज धरहू। कुसमउ समुझि सोक परिहरहू ॥
जनि मानहुँ हियँ हानि गलानी। काल करम गति अघटित जानीं ॥
काहुहि दोसु देहु जनि ताता। भा मोहि सब बिधि बाम बिधाता ॥
जो एतेहुँ दुख मोहि जिआवा। अजहुँ को जानइ का तेहि भावा ॥

दो०—पितु आयस भूषन बसन तात तजे रघुबीर।
बिसमउ हरषु न हृदयँ कछु पहिरे बलकल चीर ॥१६५॥

मुख प्रसन्न मन रंग न रोषू। सब कर सब बिधि करि परितोषू ॥
चले बिपिन सुनि सिय सँग लागी। रहइ न राम चरन अनुरागी ॥

सुनतहिं लखनु चले उठि साथा । रहहिं न जतन किए रघुनाथा ॥
तब रघुपति सबही सिरु नाई । चले संग सिय अरु लघु भाई ॥
रामु लखनु सिय बनहि सिधाए । गइउँ न संग न प्रान पठाए ॥
यहु सबु भा इन्ह आँखिन्ह आगे । तउ न तजा तनु जीव अभागे ॥
मोहि न लाज निज नेहु निहारी । राम सरिस सुत मैं महतारी ॥
जिऐ मरै भल भूपति जाना । मोर हृदय सत कुलिस समाना ॥

दो०–कौसल्या के बचन सुनि भरत सहित रनिवासु ।
ब्याकुल बिलपत राजगृह मानहुँ सोक नेवासु ॥१६६॥

बिलपहिं बिकल भरत दोउ भाई । कौसल्याँ लिए हृदयँ लगाई ॥
भाँति अनेक भरतु समुझाए । कहि बिबेकमय बचन सुनाए ॥
भरतहुँ मातु सकल समुझाई । कहि पुरान श्रुति कथा सुहाई ॥
छल बिहीन सुचि सरल सुबानी । बोले भरत जोरि जुग पानी ॥
जे अघ मातु पिता सुत मारे । गाइ गोठ महिसुर पुर जारे ॥
जे अघ तिय बालक बध कीन्हे । मीत महीपति माहुर दीन्हे ॥
जे पातक उपपातक अहहीं । करम बचन मन भव कबि कहहीं ॥
ते पातक मोहि होहुँ बिधाता । जौं यहु होइ मोर मत माता ॥

दो०–जे परिहरि हरि हर चरन भजहिं भूतगन घोर ।
तेहि कइ गति मोहि देउ बिधि जौं जननी मत मोर ॥१६७॥

बेचहिं बेदु धरमु दुहि लेहीं । पिसुन पराय पाप कहि देहीं ॥
कपटी कुटिल कलहप्रिय क्रोधी । बेद बिदूषक बिस्व बिरोधी ॥
लोभी लंपट लोलुपचारा । जे ताकहिं परधनु परदारा ॥
पावौं मैं तिन्ह कै गति घोरा । जौं जननी यहु संमत मोरा ॥
जे नहिं साधुसंग अनुरागे । परमारथ पथ बिमुख अभागे ॥
जे न भजहिं हरि नरतनु पाई । जिन्हहि न हरि हर सुजसु सोहाई ॥

तजि श्रुतिपथु बाम पथ चलहीं। बञ्चक बिरचि बेष जगु छलहीं॥
तिन्ह के गति मोहि संकर देऊ। जननी जौं यहु जानौं भेऊ॥

दो०—मातु भरत के बचन सुनि साँचे सरल सुभायँ।
कहति राम प्रिय तात तुम्ह सदा बचन मन कायँ॥१६८॥

राम प्रानहु तें प्रान तुम्हारे। तुम्ह रघुपतिहि प्रानहु तें प्यारे॥
बिधु बिष चवै स्रवै हिमु आगी। होइ बारिचर बारि बिरागी॥
भएँ ग्यानु बरु मिटै न मोहू। तुम्ह रामहि प्रतिकूल न होहू॥
मत तुम्हार यहु जो जग कहहीं। सो सपनेहुँ सुख सुगति न लहहीं॥
अस कहि मातु भरतु हियँ लाए। थन पय स्रवहिं नयन जल छाए॥
करत बिलाप बहुत एहि भाँती। बैठेहिं बीति गई सब राती॥
बामदेउ बसिष्ठ तब आए। सचिव महाजन सकल बोलाए॥
मुनि बहु भाँति भरत उपदेसे। कहि परमारथ बचन सुदेसे॥

दो०—तात हृदयँ धीरजु धरहु करहु जो अवसर आजु।
उठे भरत गुर बचन सुनि करन कहेउ सबु साजु॥१६९॥

नृपतनु बेद बिदित अन्हवावा। परम बिचित्र बिमानु बनावा॥
गहि पद भरत मातु सब राखी। रहीं रानि दरसन अभिलाषी॥
चंदन अगर भार बहु आए। अमित अनेक सुगंध सुहाए॥
सरजु तीर रचि चिता बनाई। जनु सुरपुर सोपान सुहाई॥
एहि बिधि दाह क्रिया सब कीन्ही। बिधिवत न्हाइ तिलांजुलि दीन्ही॥
सोधि सुमृति सब बेद पुराना। कीन्ह भरत दसगात बिधाना॥
जहँ जस मुनिबर आयसु दीन्हा। तहँ तस सहस भाँति सबु कीन्हा॥
भए बिसुद्ध दिए सब दाना। धेनु बाजि गज बाहन नाना॥

दो०—सिंघासन भूषन बसन अन्न धरनि धन धाम।
दिए भरत लहि भूमिसु भे परिपूरन काम॥१७०॥

पितु हित भरतकीन्हि जसि करनी । सो मुख लाख ज़ाइ नहिं बरनी ॥
सुदिनु सोधि मुनिबर तब आए । सचिव महाजन सकल बोलाए ॥
बैठे राजसभाँ सब जाई । पठए बोलि भरत दोउ भाई ॥
भरतु बसिष्ठ निकट बैठारे । नीति धरममय बचन उचारे ॥
प्रथम कथा सब मुनिबर बरनी । कैकइ कुटिल कीन्हि जसि करनी ॥
भूप धरमब्रतु सत्य सराहा । जेहि तनु परिहरि प्रेमु निबाहा ॥
कहत राम गुन सील सुभाऊ । सजल नयन पुलकेउ मुनिराऊ ॥
बहुरि लखन सिय प्रीति बखानी । सोक सनेह मगन मुनि ग्यानी ॥

दो०—सुनहु भरत भावी प्रबल बिलखि कहेउ मुनिनाथ ।
हानि लाभु जीवनु मरनु जसु अपजसु बिधि हाथ ॥१७१॥

अस बिचारि केहि देइअ दोसू । ब्यरथ काहि पर कीजिअ रोसू ॥
तात बिचारु करहु मन माहीं । सोच जोगु दसरथु नृपु नाहीं ॥
सोचिअ बिप्र जो बेद बिहीना । तजि निज धरमु बिषय लयलीना ॥
सोचिअ नृपति जो नीति न जाना । जेहि न प्रजा प्रिय प्रान समाना ॥
सोचिअ बयसु कृपन धनवानू । जो न अतिथि सिव भगति सुजानू ॥
सोचिअ सूद्रु बिप्र अवमानी । मुखर मानप्रिय ग्यान गुमानी ॥
सोचिअ पुनि पति बंचक नारी । कुटिल कलहप्रिय इच्छाचारी ॥
सोचिअ बटु निज ब्रतु परिहरई । जो नहिं गुर आयसु अनुसरई ॥

दो०—सोचिअ गृही जो मोह बस करइ करम पथ त्याग ।
सोचिअ जती प्रपंच रत बिगत बिबेक बिराग ॥१७२॥

बैखानस सोइ सोचै जोगू । तपु बिहाइ जेहि भावइ भोगू ॥
सोचिअ पिसुन अकारन क्रोधी । जननि जनक गुर बंधु बिरोधी ॥
सब बिधि सोचिअ पर अपकारी । निज तनु पोषक निरदय भारी ॥
सोचनीय सबहीं बिधि सोई । जो न छाड़ि छलु हरिजन होई ॥
सोचनीय नहिं कोसलराऊ । भुवन चारिदस प्रगट प्रभाऊ ॥

भयउ न अहइ न अब होनिहारा। भूप भरत जस पिता तुम्हारा ॥
बिधि हरि हरु सुर पति दिसिनाथा। बरनहिं सब दसरथ गुन गाथा ॥

दो०—कहहु तात केहि भाँति कोउ करिहि बड़ाई तासु।
राम लखन तुम्ह सत्रुहन सरिस सुअन सुचि जासु ॥१७३॥

सब प्रकार भूपति बड़भागी। बादि बिषादु करिअ तेहि लागी ॥
यहु सुनि समुझि सोचु परिहरहू। सिर धरि राज रजायसु करहू ॥
रायँ राजपदु तुम्ह कहुँ दीन्हा। पिता बचनु फुर चाहिअ कीन्हा ॥
तजे रामु जेहिं बचनहि लागी। तनु परिहरेउ राम बिरहागी ॥
नृपहि बचन प्रिय नहिं प्रिय प्राना। करहु तात पितु बचन प्रवाना ॥
करहु सीस धरि भूप रजाई। हइ तुम्ह कहँ सब भाँति भलाई ॥
परसुराम पितु अग्या राखी। मारी मातु लोक सब साखी ॥
तनय जजातिहि जौबनु दयऊ। पितु अग्याँ अघ अजसु न भयऊ ॥

दो०—अनुचित उचित बिचारु तजि जे पालहिं पितु बैन।
ते भाजन सुख सुजस के बसहिं अमरपति ऐन ॥१७४॥

अवसि नरेस बचन फुर करहू। पालहु प्रजा सोकु परिहरहू ॥
सुरपुर नृपु पाइहि परितोषू। तुम्ह कहुँ सुकृतु सुजसु नहिं दोषू ॥
बेद बिदित संमत सबही का। जेहि पितु देइ सो पावइ टीका ॥
करहु राजु परिहरहु गलानी। मानहु मोर बचन हित जानी ॥
सुनि सुखु लहब राम बैदेहीं। अनुचित कहब न पंडित केहीं ॥
कौसल्यादि सकल महतारीं। तेउ प्रजा सुख होहिं सुखारीं ॥
परम तुम्हार राम कर जानिहि। सो सब बिधि तुम्ह सन भल मानिहि ॥
सौंपेहु राजु राम के आएँ। सेवा करहु सनेह सुहाएँ ॥

दो०—कीजिअ गुर आयसु अवसि कहहिं सचिव कर जोरि।
रघुपति आएँ उचित जस तस तब करब बहोरि ॥१७५॥

कौसल्या धरि धीरजु कहई। पूत पथ्य गुर आयसु अहई॥
सो आदरिअ करिअ हित मानी। तजिअ बिषादु काल गति जानी॥
बन रघुपति सुरपुर नरनाहू। तुम्ह एहि भाँति तात कदराहू॥
परिजन प्रजा सचिव सब अंबा। तुम्हही सुत सब कहँ अवलंबा॥
लखि बिधि बाम कालु कठिनाई। धीरजु धरहु मातु बलि जाई॥
सिर धरि गुर आयसु अनुसरहू। प्रजा पालि परिजन दुखु हरहू॥
गुर के बचन सचिव अभिनंदनु। सुने भरत हिय हित जनु चंदनु॥
सुनी बहोरि मातु मृदु बानी। सील सनेह सरल रस सानी॥

छं०—सानी सरल रस मातु बानी सुनि भरतु ब्याकुल भए।
लोचन सरोरुह स्रवत सींचत बिरह उर अंकुर नए॥
सो दसा देखत समय तेहि बिसरी सबहि सुधि देह की।
तुलसी सराहत सकल सादर सीवँ सहज सनेह की॥

सो०—भरतु कमल कर जोरि धीर धुरंधर धीर धरि।
बचन अमिअँ जनु बोरि देत उचित उत्तर सबहि॥१७६॥

मोहि उपदेसु दीन्ह गुर नीका। प्रजा सचिव संमत सबही का॥
मातु उचित धरि आयसु दीन्हा। अवसि सीस धरि चाहउँ कीन्हा॥
गुर पितु मातु स्वामि हित बानी। सुनि मन मुदित करिअ भलि जानी॥
उचित कि अनुचित किएँ बिचारू। धरमु जाइ सिर पातक भारू॥
तुम्ह तौ देहु सरल सिख सोई। जो आचरत मोर भल होई॥
जद्यपि यह समुझत हौं नीकें। तदपि होत परितोषु न जी कें॥
अब तुम्ह बिनय मोरि सुनि लेहू। मोहि अनुहरत सिखावनु देहू॥
ऊतरु देउँ छमब अपराधू। दुखित दोष गुन गनहिं न साधू॥

दो०—पितु सुरपुर सिय रामु बन करन कहहु मोहि राजु।
एहि तें जानहु मोर हित कै आपन बड़ काजु॥१७७॥

हित हमार सियपति सेवकाईं । सो हरि लीन्ह मातु कुटिलाईं ॥
मैं अनुमानि दीख मन माहीं । आन उपायँ मोर हित नाहीं ॥
सोक समाजु राजु केहि लेखें । लखन राम सिय बिनु पद देखें ॥
बादि बसन बिनु भूषन भारू । बादि बिरति बिनु ब्रह्मबिचारू ॥
सरुज सरीर बादि बहु भोगा । बिनु हरिभगति जायँ जप जोगा ॥
जायँ जीव बिनु देह सुहाई । बादि मोर सबु बिनु रघुराई ॥
जाउँ राम पहिं आयसु देहू । एकहिं आँक मोर हित एहू ॥
मोहि नृप करि भल आपन चहहू । सोउ सनेह जड़ता बस कहहू ॥

दो०—कैकेई सुअ कुटिलमति राम बिमुख गतलाज ।
तुम्ह चाहत सुखु मोहबस मोहि से अधम के राज ॥१७८॥

कहउँ साँचु सब सुनि पतिआहू । चाहिअ धरमसील नरनाहू ॥
मोहि राजु हठि देइहहु जबहीं । रसा रसातल जाइहि तबहीं ॥
मोहि समान को पाप निवासू । जेहि लगि सीय राम बनबासू ॥
रायँ राम कहुँ काननु दीन्हा । बिछुरत गमनु अमरपुर कीन्हा ॥
मैं सठु सब अनरथ कर हेतू । बैठ बात सब सुनउँ सचेतू ॥
बिनु रघुबीर बिलोकि अबासू । रहे प्रान सहि जग उपहासू ॥
राम पुनीत बिषय रस रूखे । लोलुप भूमि भोग के भूखे ॥
कहँ लगि कहौं हृदय कठिनाई । निदरि कुलिसु जेहिं लही बड़ाई ॥

दो०—कारन ते कारजु कठिन होइ दोसु नहिं मोर ।
कुलिस अस्थि ते उपल तें लोह कराल कठोर ॥१७९॥

कैकेई भव तनु अनुरागे । पावँर प्रान अघाइ अभागे ॥
जौं प्रिय बिरहँ प्रान प्रिय लागे । देखब सुनब बहुत अब आगे ॥
लखन राम सिय कहुँ बनु दीन्हा । पठइ अमरपुर पति हित कीन्हा ॥
लीन्ह बिधवपन अपजसु आपू । दीन्हेउ प्रजहि सोकु सतापू ॥

मोहि दीन्ह सुखु सुजसु सुराजू। कीन्ह कैकईं सब कर काजू॥
एहि तें मोर काह अब नीका। तेहि पर देन कहहु तुम्ह टीका॥
कैकइ जठर जनमि जग माहीं। यह मोहि कहँ कछु अनुचित नाहीं॥
मोर बात सब बिधिहिं बनाई। प्रजा पाँच कत करहु सहाई॥

दो०-ग्रह ग्रहीत पुनि बात बस तेहि पुनि बीछी मार।
तेहि पिआइअ बारुनी कहहु काह उपचार॥१८०॥

कैकइ सुअन जोगु जग जोई। चतुर बिरंचि दीन्ह मोहि सोई॥
दसरथ तनय राम लघु भाई। दीन्हि मोहि बिधि बादि बड़ाई॥
तुम्ह सब कहहु कढ़ावन टीका। राय रजायसु सब कहँ नीका॥
उतरु देउँ केहि बिधि केहि केही। कहहु सुखेन जथा रुचि जेही॥
मोहि कुमातु समेत बिहाई। कहहु कहिहि के कीन्ह भलाई॥
मो बिनु को सचराचर माहीं। जेहि सिय रामु प्रानप्रिय नाहीं॥
परम हानि सब कहँ बड लाहू। अदिनु मोर नहिं दूषन काहू॥
संसय सील प्रेम बस अहहू। सबुइ उचित सब जो कछु कहहू॥

दो०-राम मातु सुठि सरलचित मो पर प्रेमु बिसेषि।
कहइ सुभाय सनेह बस मोरि दीनता देखि॥१८१॥

गुर बिबेक सागर जगु जाना। जिन्हहि बिस्व कर बदर समाना॥
मो कहँ तिलक साज सज सोऊ। भएँ बिधि बिमुख बिमुख सबु कोऊ॥
परिहरि रामु सीय जग माहीं। कोउ न कहिहि मोर मत नाहीं॥
सो मैं सुनब सहब सुखु मानी। अतहुँ कीच तहाँ जहँ पानी॥
डरु न मोहि जग कहिहि कि पोचू। परलोकहु कर नाहिन सोचू॥
एकइ उर बस दुसह दवारी। मोहि लगि भे सिय रामु दुखारी॥
जीवन लाहु लखन भल पावा। सबु तजि राम चरन मनु लावा॥
मोर जनम रघुबर बन लागी। झूठ काह पछिताउँ अभागी॥

दो०—आपनि दारुन दीनता कहउँ सबहि सिरु नाइ।
देखें बिनु रघुनाथ पद जिय कै जरनि न जाइ॥१८२॥

आन उपाउ मोहि नहिं सूझा। को जिय कै रघुबर बिनु बूझा॥
एकहिं आँक इहइ मन माहीं। प्रातकाल चलिहउँ प्रभु पाहीं॥
जद्यपि मैं अनभल अपराधी। भै मोहि कारन सकल उपाधी॥
तदपि सरन सनमुख मोहि देखी। छमि सब करिहहिं कृपा बिसेषी॥
सील सकुच सुठि सरल सुभाऊ। कृपा सनेह सदन रघुराऊ॥
अरिहुक अनभल कीन्ह न रामा। मैं सिसु सेवक जद्यपि बामा॥
तुम्ह पै पाँच मोर भल मानी। आयसु आसिष देहु सुबानी॥
जेहिं सुनि बिनय मोहि जनु जानी। आवहिं बहुरि राम रजधानी॥

दो०—जद्यपि जनमु कुमातु तें मैं सठु सदा सदोस।
आपन जानि न त्यागिहहिं मोहि रघुबीर भरोस॥१८३॥

भरत बचन सब कहँ प्रिय लागे। राम सनेह सुधाँ जनु पागे॥
लोग बियोग बिषम बिष दागे। मंत्र सबीज सुनत जनु जागे॥
मातु सचिव गुर पुर नर नारी। सकल सनेहँ बिकल भए भारी॥
भरतहि कहहिं सराहि सराही। राम प्रेम मूरति तनु आही॥
तात भरत अस काहे न कहहू। प्रान समान राम प्रिय अहहू॥
जो पावँर अपनी जड़ताईं। तुम्हहि सुगाइ मातु कुटिलाईं॥
सो सठु कोटिक पुरुष समेता। बसिहि कलप सत नरक निकेता।
अहि अघ अवगुन नहिं मनि गहई। हरइ गरल दुख दारिद दहई॥

दो०—अवसि चलिअ बन रामु जहँ भरत मंत्रु भल कीन्ह।
सोक सिंधु बूड़त सबहि तुम्ह अवलंबनु दीन्ह॥१८४

भा सब कें मन मोदु न थोरा। जनु घन धुनि सुनि चातक मोरा॥
चलत प्रात लखि निरनउ नीके। भरतु प्रानप्रिय भे सबही के॥

मुनिहि बंदि भरतहि सिरु नाई। चले सकल घर बिदा कराई॥
धन्य भरत जीवनु जग माहीं। सीलु सनेह सराहत जाहीं॥
कहहिं परसपर भा बड़ काजू। सकल चलै कर साजहिं साजू॥
जेहि राखहिं रहु घर रखवारी। सो जानइ जनु गरदनि मारी॥
कोउ कह रहन कहिअ नहिं काहू। को न चहइ जग जीवन लाहू॥

दो०—जरउ सो संपति सदन सुखु सुहृद मातु पितु भाइ।
सनमुख होत जो राम पद करै न सहस सहाइ॥१८५॥

घर घर साजहिं बाहन नाना। हरषु हृदयँ परभात पयाना॥
भरत जाइ घर कीन्ह बिचारू। नगरु बाजि गज भवन भँडारू॥
संपति सब रघुपति कै आही। जौं बिनु जतन चलौं तजि ताही॥
तौ परिनाम न मोरि भलाई। पाप सिरोमनि साइँ दोहाई॥
करइ स्वामि हित सेवकु सोई। दूषन कोटि देइ किन कोई॥
अस बिचारि सुचि सेवक बोले। जे सपनेहुँ निज धरम न डोले॥
कहि सबु मरमु धरमु भल भाषा। जो जेहि लायक सो तेहिं राखा॥
करि सबु जतनु राखि रखवारे। राम मातु पहिं भरतु सिधारे॥

दो०—आरत जननी जान सब भरत सनेह सुजान।
कहेउ बनावन पालकीं सजन सुखासन जान॥१८६॥

चक्क चक्कि जिमि पुर नर नारी। चहत प्रात उर आरत भारी॥
जागत सब निसि भयउ बिहाना। भरत बोलाए सचिव सुजाना॥
कहेउ लेहु सबु तिलक समाजू। बनहिं देब मुनि रामहि राजू॥
बेगि चलहु सुनि सचिव जोहारे। तुरत तुरग रथ नाग सँवारे॥
अरुंधती अरु अगिनि समाऊ। रथ चढ़ि चले प्रथम मुनिराऊ॥
बिप्र बृंद चढ़ि बाहन नाना। चले सकल तप तेज निधाना॥
नगर लोग सब सजि सजि जाना। चित्रकूट कहँ कीन्ह पयाना॥
सिबिका सुभग न जाहिं बखानी। चढ़ि चढ़ि चलत भई सब रानी॥

दो०–सौंपि नगर सुचि सेवकनि सादर सकल चलाइ।
सुमिरि राम सिय चरन तब चले भरत दोउ भाइ॥१८७॥

राम दरस बस नर नारी। जनु करि करिनि चले तकि बारी॥
बन सिय रामु समुझि मन माहीं। सानुज भरत पयादेहि जाहीं॥
देखि सनेहु लोग अनुरागे। उतरि चले हय गय रथ त्यागे॥
जाइ समीप राखि निज डोली। राम मातु मृदु बानी बोली॥
तात चढ़हु रथ बलि महतारी। होइहि प्रिय परिवारु दुखारी॥
तुम्हरें चलत चलिहि सबु लोगू। सकल सोक कृस नहिं मग जोगू॥
सिर धरि बचन चरन सिरु नाई। रथ चढ़ि चलत भए दोउ भाई॥
तमसा प्रथम दिवस करि बासू। दूसर गोमति तीर निवासू॥

दो०–पय अहार फल असन एक निसि भोजन एक लोग।
करत राम हित नेम ब्रत परिहरि भूषन भोग॥१८८॥

सई तीर बसि चले बिहाने। सृंगबेरपुर सब निअराने॥
समाचार सब सुने निषादा। हृदयँ बिचार करइ सबिषादा॥
कारन कवन भरतु बन जाहीं। है कछु कपट भाउ मन माहीं॥
जौं पै जियँ न होत कुटिलाई। तौ कत लीन्ह संग कटकाई॥
जानहिं सानुज रामहि मारी। करउँ अकंटक राजु सुखारी॥
भरत न राजनीति उर आनी। तब कलंकु अब जीवन हानी॥
सकल सुरासुर जुरहिं जुझारा। रामहि समर न जीतनिहारा॥
का आचरजु भरतु अस करहीं। नहिं बिष बेलि अमिअ फल फरहीं॥

दो०–अस बिचारि गुहँ ग्याति सन कहेउ सजग सब होहु।
हथवाँसहु बोरहु तरनि कीजिअ घाटारोहु॥१८९॥

होहु सँजोइल रोकहु घाटा। ठाटहु सकल मरै के ठाटा॥
सनमुख लोह भरत सन लेऊँ। जिअत न सुरसरि उतरन देऊँ॥

समर मरनु पुनि सुरसरि तीरा। राम काजु छनभंगु सरीरा॥
भरत भाइ नृपु मैं जन नीचू। बड़ें भाग असि पाइअ मीचू॥
स्वामि काज करिहउँ रन रारी। जस धवलिहउँ भुअन दस चारी॥
तजउँ प्रान रघुनाथ निहोरें। दुहूँ हाथ मुद मोदक मोरें॥
साधु समाज न जाकर लेखा। राम भगत महुँ जासु न रेखा॥
जायँ जिअत जग सो महि भारु। जननी जौबन बिटप कुठारू॥

दो०—विगत बिषाद निषादपति सबहि बढ़ाइ उछाहु।
सुमिरि राम मागेउ तुरत तरकस धनुष सनाहु॥१६०॥

बेगहु भाइहु सजहु सँजोऊ। सुनि रजाइ कदराइ न कोऊ॥
भलेहिं नाथ सब कहहिं सहरषा। एकहिं एक बढ़ावइ करषा॥
चले निषाद जोहारि जोहारी। सूर सकल रन रूचइ रारी॥
सुमिरि राम पद पंकज पनही। भाथीं बाँधि चढाइन्हि धनहीं॥
अँगरी पहिरि कूँडि सिर धरहीं। फरसा बाँस सेस सम करहीं॥
एक कुसल अति ओड़न खाँडे। कूदहिं गगन मनहुँ छिति छाँड़े॥
निज निज साजु समाजु बनाई। गुह राउतहि जोहारे जाई॥
देखि सुभट सब लायक जाने। लै लै नाम सकल सनमाने॥

दो०—भाइहु लावहु धोख जनि आजु काज बड़ मोहि।
सुनि सरोष बोले सुभट वीर अधीर न होहि॥१६१॥

राम प्रताप नाथ बल तोरे। करहिं कटकु बिनु भट बिनु घोरे॥
जीवत पाँव न पाछें धरहीं। रुंड मुंडमय मेदिनि करहीं॥
दीख निषादनाथ भल टोलू। कहेउ बजाउ जुझाऊ ढोलू॥
एतना कहत छींक भइ बाँए। कहेउ सगुनिअन्ह खेत सुहाए॥
बूढ़ एकु कह सगुन बिचारी। भरतहि मिलिअ न होइहि रारी॥
रामहि भरतु मनावन जाहीं। सगुन कहइ अस बिग्रहु नाहीं॥

सुनि गुह कहइ नीक कह बूढ़ा। सहसा करि पछिताहिं बिमूढ़ा॥
भरत सुभाउ सीलु बिनु बूझें। बड़ि हित हानि जानि बिनु जूझें॥

दो०-गहहु घाट भट समिटि सब लेउँ मरम मिलि जाइ।
बूझि मित्र अरि मध्य गति तस तब करिहउँ आइ॥१९२॥

लखब सनेहु सुभायँ सुहाएँ। बैरु प्रीति नहिं दुरइँ दुराएँ॥
अस कहि भेंट सँजोवन लागे। कंद मूल फल खग मृग मागे॥
मीन पीन पाठीन पुराने। भरि भरि भार कहारन्ह आने॥
मिलन साजु सजि मिलन सिधाए। मंगल मूल सगुन सुभ पाए॥
देखि दूरि तें कहि निज नामू। कीन्ह मुनीसहि दंड प्रनामू॥
जानि रामप्रिय दीन्हि असीसा। भरतहि कहेउ बुझाइ मुनीसा॥
राम सखा सुनि संदनु त्यागा। चले उतरि उमगत अनुरागा॥
गाउँ जाति गुहँ नाउँ सुनाई। कीन्ह जोहारु माथ महि लाई॥

दो०-करत दंडवत देखि तेहि भरत लीन्ह उर लाइ।
मनहुँ लखन सन भेंट भइ प्रेमु न हृदयँ समाइ॥१९३॥

भेंटत भरतु ताहि अति प्रीती। लोग सिहाहिं प्रेम कै रीती॥
धन्य धन्य धुनि मंगल मूला। सुर सराहि तेहि बरिसहिं फूला॥
लोक बेद सब भाँतिहि नीचा। जासु छाँह छुइ लेइअ सींचा॥
तेहि भरि अंक राम लघु भ्राता। मिलत पुलक परिपूरित गाता॥
राम राम कहि जे जमुहाहीं। तिन्हहि न पाप पुंज समुहाहीं॥
यह तौ राम लाइ उर लीन्हा। कुल समेत जगु पावन कीन्हा॥
करमनास जलु सुरसरि परई। तेहि को कहहु सीस नहिं धरई॥
उलटा नामु जपत जगु जाना। बालमीकि भए ब्रह्म समाना॥

दो०-स्वपच सबर खस जमन जड़ पावँर कोल किरात।
रामु कहत पावन परम होत भुवन बिख्यात॥१९४॥

नहिं अचिरिजु जुग जुग चलि आई। केहि न दीन्हि रघुबीर बड़ाई ॥
राम नाम महिमा सुर कहहीं। सुनि सुनि अवधलोग सुखु लहहीं ॥
रामसखहि मिलि भरत सप्रेमा। पूँछी कुसल सुमंगल खेमा ॥
देखि भरत कर सीलु सनेहू। भा निषाद तेहि समय बिदेहू ॥
सकुच सनेहु मोदु मन बाढ़ा। भरतहि चितवत एकटक ठाढ़ा ॥
धरि धीरजु पद बंदि बहोरी। बिनय सप्रेम करत कर जोरी ॥
कुसल मूल पद पंकज पेखी। मैं तिहुँ काल कुसल निज लेखी ॥
अब प्रभु परम अनुग्रह तोरे। सहित कोटि कुल मंगल मोरे ॥

दो०—समुझि मोरि करतूति कुलु प्रभु महिमा जियँ जोइ।
जो न भजइ रघुबीर पद जग बिधि बंचित सोइ ॥१९५॥

कपटी कायर कुमति कुजाती। लोक बेद बाहेर सब भाँती ॥
राम कीन्ह आपन जबही तें। भयउँ भुवन भूषन तबही तें ॥
देखि प्रीति सुनि बिनय सुहाई। मिलेउ बहोरि भरत लघु भाई ॥
कहि निषाद निज नाम सुबानी। सादर सकल जोहारीं रानीं ॥
जानि लखन सम देहिं असीसा। जिअहु सुखी सय लाख बरीसा ॥
निरखि निषादु नगर नर नारी। भए सुखी जनु लखनु निहारी ॥
कहहिं लहेउ एहि जीवन लाहू। भेंटेउ रामभद्र भरि बाहू ॥
सुनि निषादु निज भाग बड़ाई। प्रमुदित मन लइ चलेउ लेवाई ॥

दो०—सनकारे सेवक सकल चले स्वामि रुख पाइ।
घर तरु तर सर बाग बन बास बनाएन्हि जाइ ॥१९६॥

सृंगबेरपुर भरत दीख जब। भे सनेहँ सब अंग सिथिल तब ॥
सोहत दिएँ निषादहि लागू। जनु तनु धरें बिनय अनुरागू ॥
एहि बिधि भरत सेनु सबु संगा। दीखि जाइ जग पावनि गंगा ॥
रामघाट कहँ कीन्ह प्रनामू। भा मनु मगनु मिले जनु रामू ॥

करहिं प्रनाम नगर नर नारी। मुदित ब्रह्ममय बारि निहारी॥
करि मज्जनु मागहिं कर जोरी। रामचंद्र पद प्रीति न थोरी॥
भरत कहेउ सुरसरि तव रेनू। सकल सुखद सेवक सुरधेनू॥
जोरि पानि बर मागउँ एहू। सीय राम पद सहज सनेहू॥

दो०–एहि बिधि मज्जनु भरतु करि गुर अनुसासन पाइ।
मातु नहानीं जानि सब डेरा चले लवाइ॥१९७॥

जहँ तहँ लोगन्ह डेरा कीन्हा। भरत सोधु सबही कर लीन्हा॥
सुर सेवा करि आयसु पाई। राम मातु पहिं गे दोउ भाई॥
चरन चाँपि कहि कहि मृदु बानी। जननीं सकल भरत सनमानी॥
भाइहि सौंपि मातु सेवकाई। आपु निषादहि लीन्ह बोलाई॥
चले सखा कर सों कर जोरें। सिथिल सरीरु सनेह न थोरें॥
पूँछत सखहि सो ठाउँ देखाऊ। नेकु नयन मन जरनि जुड़ाऊ॥
जहँ सिय रामु लखनु निसि सोए। कहत भरे जल लोचन कोए॥
भरत बचन सुनि भयउ बिषादू। तुरत तहाँ लइ गयउ निषादू॥

दो०-जहँ सिंसुपा पुनीत तर रघुबर किय बिश्रामु।
अति सनेहँ सादर भरत कीन्हेउ दंड प्रनामु॥१९८॥

कुस साँथरी निहारि सुहाई। कीन्ह प्रनामु प्रदच्छिन जाई॥
चरन रेख रज आँखिन्ह लाई। बनइ न कहत प्रीति अधिकाई॥
कनक बिंदु दुइ चारिक देखे। राखे सीस सीय सम लेखे॥
सजल बिलोचन हृदयँ गलानी। कहत सखा सन बचन सुबानी॥
श्रीहत सीय बिरहँ दुतिहीना। जथा अवध नर नारि बिलीना॥
पिता जनक देउँ पटतर केही। करतल भोगु जोगु जग जेही॥
ससुर भानुकुल भानु भुआलू। जेहि सिहात अमरावति पालू॥
प्राननाथु रघुनाथ गोसाईं। जो बड़ होत सो राम बड़ाईं॥

दो०-पति देवता सुतीय मनि सीय साँथरी देखि।
बिहरत हृदउ न हहरि हर पबि ते कठिन बिसेषि ॥१९९॥

लालन जोगु लखन लघु लोने। भे न भाइ अस अहहिं न होने ॥
पुरजन प्रिय पितु मातु दुलारे। सिय रघुबीरहि प्रानपिआरे ॥
मृदु मूरति सुकुमार सुभाऊ। तात बाउ तन लाग न काऊ ॥
ते बन सहहिं बिपति सब भाँती। निदरे कोटि कुलिस एहि छाती ॥
राम जनमि जगु कीन्ह उजागर। रूप सील सुख सब गुन सागर ॥
पुरजन परिजन गुर पितु माता। राम सुभाउ सबहि सुख दाता ॥
बैरिउ राम बड़ाई करहीं। बोलनि मिलनि बिनय मन हरहीं ॥
सारद कोटि कोटि सत सेषा। करि न सकहिं प्रभु गुन गन लेखा ॥

दो०-सुखस्वरूप रघुबसमनि मंगल मोद निधान।
ते सोवत कुस डासि महि बिधि गति अति बलवान ॥२००॥

राम सुना दुखु कान न काऊ। जीवनतरु जिमि जोगवइ राऊ ॥
पलक नयन फनि मनि जेहि भाँती। जोगवहिं जननि सकल दिन राती ॥
ते अब फिरत बिपिन पदचारी। कंद मूल फल फूल अहारी ॥
धिग कैकई अमंगल मूला। भइसि प्रानप्रियतम प्रतिकूला ॥
मैं धिग धिग अघ उदधि अभागी। सबु उतपातु भयउ जेहि लागी ॥
कुल कलंकु करि सृजेउ बिधाताँ। साइँदोह मोहि कीन्ह कुमाताँ ॥
सुनि सप्रेम समुझाव निषादू। नाथ करिअ कत बादि बिषादू ॥
राम तुम्हहि प्रिय तुम्ह प्रिय रामहि। यह निर जोसु दोसु बिधि बामहि ॥

छं०-बिधि बाम की करनी कठिन जेहिं मातु कीन्ही बावरी।
तेहि राति पुनि पुनि करहिं प्रभु सादर सरहना रावरी ॥
तुलसी न तुम्ह सो राम प्रीतमु कहतु हौं सौंहे किएँ।
परिनाम मंगल जानि अपने आनिए धीरजु हिएँ ॥

सो०—अंतरजामी रामु सकुच सप्रेम कृपायतन।
चलिअ करिअ बिश्रामु यह बिचारि दृढ़ आनि मन ॥२०१॥

सखा वचन सुनि उर धरि धीरा। बास चले सुमिरत रघुबीरा ॥
यह सुधि पाइ नगर नर नारी। चले बिलोकन आरत भारी ॥
परदखिना करि करहिं प्रनामा। देहिं कैकइहि खोरि निकामा ॥
भरि भरि बारि बिलोचन लेहीं। बाम बिधातहि दूषन देहीं ॥
एक सराहहिं भरत सनेहू। कोउ कह नृपति निबाहेउ नेहू ॥
निंदहिं आपु सराहि निषादहि। को कहि सकइ बिमोह बिषादहि ॥
एहि बिधि राति लोगु सबु जागा। भा भिनुसार गुदारा लागा ॥
गुरहि सुनावँ चढ़ाइ सुहाईं। नईं नाव सब मातु चढ़ाईं ॥
दंड चारि महँ भा सबु पारा। उतरि भरत तब सबहि सँभारा ॥

दो०—प्रातक्रिया करि मातु पद बंदि गुरहि सिरु नाइ।
आगें किए निषाद गन दीन्हेउ कटकु चलाइ ॥२०२॥

कियउ निषादनाथु अगुआईं। मातु पालकीं सकल चलाईं ॥
साथ बोलाइ भाइ लघु दीन्हा। बिप्रन्ह सहित गवनु गुर कीन्हा ॥
आपु सुरसरिहि कीन्ह प्रनामू। सुमिरे लखन सहित सिय रामू ॥
गवने भरत पयादेहिं पाए। कोतल संग जाहिं डोरिआए ॥
कहहिं सुसेवक बारहिं बारा। होइअ नाथ अस्व असवारा ॥
रामु पयादेहि पाय सिधाए। हम कहँ रथ गज बाजि बनाए ॥
सिर भर जाउँ उचित अस मोरा। सब तें सेवक धरमु कठोरा ॥
देखि भरत गति सुनि मृदु बानी। सब सेवक गन गरहिं गलानी ॥

दो०—भरत तीसरं पहर कहँ कीन्ह प्रबेसु प्रयाग।
कहत राम सिय राम सिय उमगि उमगि अनुराग ॥२०३॥

झलका झलकत पायन्ह कैसे । पंकज कोस ओस कन जैसे ॥
भरत पयादेहि आए आजू । भयउ दुखित सुनि सकल समाजू ॥
खबरि लीन्ह सब लोग नहाए । कीन्ह प्रनामु त्रिबेनिहिं आए ॥
सबिधि सितासित नीर नहाने । दिए दान महिसुर सनमाने ॥
देखत स्यामल धवल हलोरे । पुलकि सरीर भरत कर जोरे ॥
सकल काम प्रद तीरथराऊ । बेद बिदित जग प्रगट प्रभाऊ ॥
मागउँ भीख त्यागि निज धरमू । आरत काह न करइ कुकरमू ॥
अस जियँ जानि सुजान सुदानी । सफल करहि जग जाचक बानी ॥

दो०--अरथ न धरम न काम रुचि गति न चहउ निरबान ।
जनम जनम रति राम पद यह बरदानु न आन ॥२०४॥

जानहुँ राम कुटिल करि मोही । लोग कहउ गुर साहिब द्रोही ॥
सीता राम चरन रति मोरें । अनुदिन बढ़उ अनुग्रह तोरें ॥
जलदु जनम भरि सुरति बिसारउ । जाचत जलु पबि पाहन डारउ ॥
चातकु रटनि घटें घटि जाई । बढे प्रेमु सब भाँति भलाई ॥
कनकहिं बान चढ़इ जिमि दाहे । तिमि प्रियतम पद नेम निबाहे ॥
भरत बचन सुनि माझ त्रिबेनी । भइ मृदु बानि सुमंगल देनी ॥
तात भरत तुम्ह सब बिधि साधू । राम चरन अनुराग अगाधू ॥
बादि गलानि करहु मन माहीं । तुम्ह सम रामहि कोउ प्रिय नाहीं ॥

दो०--तनु पुलकेउ हियँ हरषु सुनि बेनि बचन अनुकूल ।
भरत धन्य कहि धन्य सुर हरषित बरषहिं फूल ॥२०५॥

प्रमुदित तीरथराज निवासी । बैखानस बटु गृही उदासी ॥
कहहिं परसपर मिलि दस पाँचा । भरत सनेहु सीलु सुचि साँचा ॥
सुनत राम गुन ग्राम सुहाए । भरद्वाज मुनिबर पहिं आए ॥
दंड प्रनामु करत मुनि देखे । मूरतिमंत भाग्य निज लेखे ॥

धाइ उठाइ लाइ उर लीन्हे। दीन्हि असीस कृतारथ कीन्हे॥
आसनु दीन्ह नाइ सिरु बैठे। चहत सकुच गृहँ जनु भजि पैठे॥
मुनि पूँछब कछु यह बड़ सोचू। बोले रिषि लखि सीलु सँकोचू॥
सुनहु भरत हम सब सुधि पाई। बिधि करतब पर किछु न बसाई॥

दो०–तुम्ह गलानि जियँ जनि करहु समुझि मातु करतूति।
तात कैकइहि दोसु नहिं गई गिरा मति धूति॥२०६॥

यहउ कहत भल कहिहि न कोऊ। लोकु बेदु बुध संमत दोऊ॥
तात तुम्हार बिमल जसु गाई। पाइहि लोकउ बेदु बड़ाई॥
लोक बेद संमत सबु कहई। जेहि पितु देइ राजु सो लहई॥
राउ सत्यब्रत तुम्हहि बोलाई। देत राजु सुखु धरमु बड़ाई॥
राम गवनु बन अनरथ मूला। जो सुनि सकल बिस्व भइ सूला॥
सो भावी बस रानि अयानी। करि कुचालि अंतहु पछितानी॥
तहँउँ तुम्हार अलप अपराधू। कहै सो अधम अयान असाधू॥
करतेहु राजु त तुम्हहि न दोषू। रामहि होत सुनत संतोषू॥

दो०–अब अति कीन्हेहु भरत भल तुम्हहि उचित मत एहु।
सकल सुमंगल मूल जग रघुबर चरन सनेहु॥२०७॥

सो तुम्हार धनु जीवनु प्राना। भूरिभाग को तुम्हहि समाना॥
यह तुम्हार आचरजु न ताता। दसरथ सुअन राम प्रिय भ्राता॥
सुनहु भरत रघुबर मन माहीं। पेम पात्रु तुम्ह सम कोउ नाहीं॥
लखन राम सीतहि अति प्रीती। निसि सब तुम्हहि सराहत बीती॥
जाना मरमु नहात प्रयागा। मगन होहिं तुम्हरें अनुरागा॥
तुम्ह पर अस सनेहु रघुबर कें। सुख जीवन जग जस जड़ नर कें॥
यह न अधिक रघुबीर बड़ाई। प्रनत कुटुंब पाल रघुराई॥
तुम्ह तौ भरत मोर मत एहू। धरें देह जनु राम सनेहू॥

दो०—तुम्ह कहँ भरत कलंक यह हम सब कहँ उपदेस ।
राम भगति रस सिद्धि हित भा यह समउ गनेसु ॥२०८॥

नव बिधु बिमल तात जसु तोरा । रघुबर किंकर कुमुद चकोरा ॥
उदित सदा अँथइहि कबहूँ ना । घटिहि न जग नभ दिन दिन दूना॥
कोक तिलोक प्रीति अति करिही । प्रभु प्रताप रबि छबिहि न हरिही ॥
निसि दिन सुखद सदा सब काहू । ग्रसिहि न कैकइ करतबु राहू ॥
पूरन राम सुपेम पियूषा । गुर अवमान दोष नहिं दूषा ॥
राम भगत अब अमिअँ अघाहूँ । कीन्हेहु सुलभ सुधा बसुधाहूँ ॥
भूप भगीरथ सुरसरि आनी । सुमिरत सकल सुमंगल खानी ॥
दसरथ गुन गन बरनि न जाहीं । अधिकु कहा जेहि सम जग नाहीं॥

दो०—जासु सनेह सकोच बस राम प्रगट भए आइ ।
जे हर हिय नयननि कबहुँ निरखे नहीं अघाइ ॥२०९॥

कीरति बिधु तुम्ह कीन्ह अनूपा । जहँ बस राम पेम मृगरूपा ॥
तात गलानि करहु जियँ जाएँ । डरहु दरिद्रहि पारसु पाएँ ॥
सुनहु भरत हम झूठ न कहहीं । उदासीन तापस बन रहहीं ॥
सब साधन कर सुफल सुहावा । लखन राम सिय दरसनु पावा ॥
तेहि फल कर फलु दरस तुम्हारा । सहित पयाग सुभाग हमारा ॥
भरत धन्य तुम्ह जसु जगु जयऊ । कहि अस पेम मगन मुनि भयऊ॥
सुनि मुनि बचन सभासद हरषे । साधु सराहि सुमन सुर बरषे ॥
धन्य धन्य धुनि गगन पयागा । सुनि सुनि भरत मगन अनुरागा ॥

दो०—पुलक गात हियँ रामु सिय सजल सरोरुह नैन ।
करि प्रनामु मुनि मंडलिहि बोले गदगद बैन ॥२१०॥

मुनि समाजु अरु तीरथराजू । साँचिहुँ सपथ अघाइ अकाजू ॥
एहिं थल जौं किछु कहिअ बनाई । एहि सम अधिक न अघ अधमाई

तुम्ह सर्बग्य कहउँ सतिभाऊ । उर अंतरजामी रघुराऊ ॥
मोहि न मातु करतब कर सोचू । नहिं दुखु जियँ जगु जानिहि पोचू ॥
नाहिन डरु बिगरिहि परलोकू । पितहु मरन कर मोहि न सोकू ॥
सुकृत सुजस भरि भुअन सुहाए । लछिमन राम सरिस सुत पाए ॥
राम बिरहँ तजि तनु छनभंगू । भूप सोच कर कवन प्रसंगू ॥
राम लखन सिय बिनु पग पनहीं । करि मुनि बेष फिरहिं बन बनहीं ॥

दो०-अजिन बसन फल असन महि सयन डासि कुस पात ।
बसि तरु तर नित सहत हिम आतप बरषा बात ॥२११॥

एहि दुख दाहँ दहइ दिन छाती । भूख न बासर नीद न राती ॥
एहि कुरोग कर औषधु नाहीं । सोधेउँ सकल बिस्व मन माहीं ॥
मातु कुमत बढ़ई अघ मूला । तेहिं हमार हित कीन्ह बँसूला ॥
कलि कुकाठ कर कीन्ह कुजन्त्रू । गाड़ि अवधि पढ़ि कठिन कुमन्त्रू ॥
मोहि लगि यहु कुठाटु तेहिं ठाटा । घालेसि सब जगु बारहबाटा ॥
मिटइ कुजोगु राम फिरि आएँ । बसइ अवध नहिं आन उपाएँ ॥
भरत बचन सुनि मुनि सुखु पाई । सबहिं कीन्हि बहु भाँति बड़ाई ॥
तात करहु जनि सोचु बिसेषी । सब दुखु मिटिहि राम पग देखी ॥

दो०-करि प्रबोधु मुनिबर कहेउ अतिथि पेमप्रिय होहु ।
कंद मूल फल फूल हम देहिं लेहु करि छोहु ॥२१२॥

सुनि मुनि बचन भरत हियँ सोचू । भयउ कुअवसर कठिन सँकोचू ॥
जानि गरुइ गुर गिरा बहोरी । चरन बंदि बोले कर जोरी ॥
सिर धरि आयसु करिअ तुम्हारा । परम धरम यहु नाथ हमारा ॥
भरत बचन मुनिबर मन भाए । सुचि सेवक सिष निकट बोलाए ॥
चाहिअ कीन्हि भरत पहुनाई । कंद मूल फल आनहु जाई ॥
भलेहिं नाथ कहि तिन्ह सिर नाए । प्रमुदित निज निज काज सिधाए ॥

मुनिहि सोच पाहुन बड़ नेवता । तसि पूजा चाहिअ जस देवता ॥
सुनि रिधि सिधि अनिमादिक आईं । आयसु होइ सो करहिं गोसाईं ॥

दो०-राम बिरह ब्याकुल भरतु सानुज सहित समाज ।
पहुनाई करि हरहु श्रम कहा मुदित मुनिराज ॥२१३॥

रिधि सिधि सिर धरि मुनिबर बानी । बड़भागिनि आपुहि अनुमानी ॥
कहहिं परसपर सिधि समुदाई । अतुलित अतिथि राम लघु भाई ॥
मुनि पद बंदि करिअ सोइ आजू । होइ सुखी सब राज समाजू ॥
अस कहि रचेउ रुचिर गृह नाना । जेहि बिलोकि बिलखाहिं बिमाना ॥
भोग बिभूति भूरि भरि राखे । देखत जिन्हहिं अमर अभिलाषे ॥
दासीं दास साजु सब लीन्हें । जोगवत रहहिं मनहि मनु दीन्हें ॥
सब समाजु सजि सिधि पल माहीं । जे सुख सुरपुर सपनेहुँ नाहीं ॥
प्रथमहिं बास दिए सब केही । सुंदर सुखद जथा रुचि जेही ॥

दो०-बहुरि सपरिजन भरत कहुँ रिषि अस आयसु दीन्ह ।
बिधि बिसमय दायकु बिभव मुनिबर तपबल कीन्ह ॥२१४॥

मुनिप्रभाउ जब भरत बिलोका । सब लघु लगे लोकपति लोका ॥
सुख समाजु नहिं जाइ बखानी । देखत बिरति बिसारहिं ग्यानी ॥
आसन सयन सुबसन बिताना । बन बाटिका बिहग मृगनाना ॥
सुरभि फूल फल अमिअ समाना । बिमल जलासय बिबिध बिधाना ॥
असन पान सुचि अमिअ अमी से । देखि लोग सकुचात जमी से ॥
सुर सुरभी सुरतरु सबही के । लखि अभिलाषु सुरेस सची कें ॥
रितु बसंत बह त्रिबिध बयारी । सब कहँ सुलभ पदारथ चारी ॥
स्रक चंदन बनितादिक भोगा । देखि हरष बिसमय बस लोगा ॥

दो०-संपति चकई भरतु चक मुनि आयस खेलवार ।
तेहि निसि आश्रम पिंजरों राखे भा भिनुसार ॥२१५॥

कीन्ह निमज्जनु तीरथराजा। नाइ मुनिहि सिरु सहित समाजा॥
रिषि आयसु असीस सिर राखी। करि दंडवत बिनय बहु भाषी॥
पथ गति कुसल साथ सब लीन्हें। चले चित्रकूटहिं चित दीन्हें॥
रामसखा कर दीन्हें लागू। चलत देह धरि जनु अनुरागू॥
नहिं पद त्रान सीस नहिं छाया। पेमु नेमु ब्रतु धरमु अमाया॥
लखन राम सिय पथ कहानी। पूँछत सखहि कहत मृदु बानी॥
राम बास थल बिटप बिलोके। उर अनुराग रहत नहिं रोके॥
देखि दसा सुर बरसहिं फूला। भइ मृदु महि मगु मंगल मूला॥

दो०-किएँ जाहिं छाया जलद सुखद बहइ बर बात।
तस मगु भयउ न राम कहँ जस भा भरतहि जात॥२१६॥

जड़ चेतन मग जीव घनेरे। जे चितए प्रभु जिन्ह प्रभु हेरे॥
ते सब भए परम पद जोगू। भरत दरस मेटा भव रोगू॥
यह बड़ि बात भरत कइ नाहीं। सुमिरत जिनहि रामु मन माहीं॥
बारक राम कहत जग जेऊ। होत तरन तारन नर तेऊ॥
भरतु राम प्रिय पुनि लघु भ्राता। कस न होइ मगु मंगलदाता॥
सिद्ध साधु मुनिबर अस कहहीं। भरतहिं निरखि हरषु हियँ लहहीं॥
देखि प्रभाउ सुरेसहि सोचू। जगु भल भलेहिं पोच कहुँ पोचू॥
गुर सन कहेउ करिअ प्रभु सोई। रामहि भरतहि भेट न होई॥

दो०-रामु सँकोची प्रेम बस भरत सपेम पयोधि।
बनी बात बेगरन चहति करिअ जतनु छलु सोधि॥२१७॥

बचन सुनत सुरगुर मुसुकाने। सहसनयन बिनु लोचन जाने॥
मायापति सेवक सन माया। करइ त उलटि परइ सुरराया॥
तब किछु कीन्ह राम रुख जानी। अब कुचालि करि होइहि हानी॥
सुनु सुरेस रघुनाथ सुभाऊ। निज अपराध रिसाहिं न काऊ॥
जो अपराधु भगत कर करई। राम रोष पावक सो जरई॥

लोकहुँ बेद बिदित इतिहासा। यह महिमा जानहिं दुरबासा ॥
भरत सरिस को राम सनेही। जगु जप राम रामु जप जेही ॥

दो०-मनहुँ न आनिअ अमरपति रघुबर भगत अकाजु।
अजसु लोक परलोक दुख दिन दिन सोक समाजु ॥२१८॥

सुनु सुरेस उपदेसु हमारा। रामहि सेवक परम पिआरा ॥
मानत सुखु सेवक सेवकाई। सेवक बैर बैरु अधिकाई ॥
जद्यपि सम नहिं राग न रोषू। गहहिं न पाप पूनु गुन दोषू ॥
करम प्रधान बिस्व करि राखा। जो जस करइ सो तस फलु चाखा ॥
तदपि करहिं सम बिषम बिहारा। भगत अभगत हृदय अनुसारा ॥
अगुन अलेप अमान एकरस। रामु सगुन भए भगत पेम बस ॥
राम सदा सेवक रुचि राखी। बेद पुरान साधु सुर साखी ॥
अस जियँ जानि तजहु कुटिलाई। करहु भरत पद प्रीति सुहाई ॥

दो०-राम भगत परहित निरत पर दुख दुखी दयाल।
भगत सिरोमनि भरत तें जनि डरपहु सुरपाल ॥२१९॥

सत्यसंध प्रभु सुर हितकारी। भरत राम आयस अनुसारी ॥
स्वारथ बिबस बिकल तुम्ह होहू। भरत दोसु नहि राउर मोहू ॥
सुनि सुरबर सुरगुर बर बानी। भा प्रमोदु मन मिटी गलानी ॥
बरषि प्रसून हरषि सुरराऊ। लगे सराहन भरत सुभाऊ ॥
एहि बिधि भरत चले मग जाहीं। दसा देखि मुनि सिद्ध सिहाहीं ॥
जबहिं रामु कहि लेहिं उसासा। उमगत पेमु मनहुँ चहु पासा ॥
द्रवहिं बचन सुनि कुलिस पषाना। पुरजन पेमु न जाइ बखाना ॥
बीच बास करि जमुनहिं आए। निरखि नीरु लोचन जल छाए ॥

दो०-रघुबर बरन बिलोकि बर बारि समेत समाज।
होत मगन बारिधि बिरह चढ़े बिबेक जहाज ॥२२०॥

जमुन तीर तेहि दिन करि बासू। भयउ समय सम सबहि सुपासू॥
रातिहिं घाट घाट की तरनी। आईं अगनित जाहिं न बरनी॥
प्रात पार भए एकहि खेवाँ। तोषे रामसखा की सेवाँ॥
चले नहाइ नदिहि सिर नाई। साथ निषादनाथ दोउ भाई॥
आगें मुनिबर बाहन आछें। राजसमाज जाइ सबु पाछें॥
तेहि पाछें दोउ बंधु पयादें। भूषन बसन बेष सुठि सादें॥
सेवक सुहृद सचिवसुत साथा। सुमिरत लखनु सीय रघुनाथा॥
जहँ जहँ राम बास बिश्रामा। तहँ तहँ करहिं सप्रेम प्रनामा॥

दो०-मगबासी नर नारि सुनि धाम काम तजि धाइ।
देखि सरूप सनेह सब मुदित जनम फलु पाइ॥२२१॥

कहहिं सपेम एक एक पाहीं। रामु लखनु सखि होहिं कि नाहीं॥
बय बपु बरन रूपु सोइ आली। सीलु सनेहु सरिस सम चाली॥
बेषु न सो सखि सीय न संगा। आगें अनी चली चतुरंगा॥
नहिं प्रसन्न मुख मानस खेदा। सखि संदेहु होइ एहिं भेदा॥
तासु तरक तियगन मन मानी। कहहिं सकल तेहि सम न सयानी॥
तेहि सराहि बानी फुरि पूजी। बोली मधुर बचन तिय दूजी॥
कहि सपेम सब कथाप्रसंगू। जेहि बिधि राम राज रस भंगू॥
भरतहि बहुरि सराहन लागी। सील सनेह सुभाय सुभागी॥

दो०-चलत पयादें खात फल पिता दीन्ह तजि राजु।
जात मनावन रघुबरहि भरत सरिस को आजु॥२२२॥

भायप भगति भरत आचरनू। कहत सुनत दुख दूषन हरनू॥
जो किछु कहब थोर सखि सोई। राम बंधु अस काहे न होई॥
हम सब सानुज भरतहि देखें। भइन्ह धन्य जुबती जन लेखें॥
सुनि गुन देखि दसा पछिताहीं। कैकइ जननि जोगु सुतु नाहीं॥

कोउ कह दूषन रानिहि नाहिन । बिधि सबु कीन्ह हमहि जो दाहिन ॥
कहँ हम लोक बेद बिधि हीनी । लघु तिय कुल करतूति मलीनी ॥
बसहिं कुदेस कुगाँव कुबामा । कहँ यह दरसु पुन्य परिनामा ॥
अस अनदु अचिरिजु प्रति ग्रामा । जनु मरुभूमि कलपतरु जामा ॥

दो०-भरत दरसु देखत खुलेउ मग लोगन्ह कर भागु ।
जनु सिंघल बासिन्ह भयउ बिधि बस सुलभ प्रयागु ॥२२३॥

निजगुन सहित राम गुन गाथा । सुनत जाहिं सुमिरत रघुनाथा ॥
तीरथ मुनि आश्रम सुरधामा । निरखि निमज्जहिं करहिं प्रनामा ॥
मनहीं मन मागहिं बरु एहू । सीय राम पद पदुम सनेहू ॥
मिलहिं किरात कोल बनबासी । बैखानस बटु जती उदासी ॥
करि प्रनामु पूँछहिं जेहि तेही । केहि बन लखनु रामु बैदेही ॥
ते प्रभु समाचार सब कहहीं । भरतहि देखि जनम फलु लहहीं ॥
जे जन कहहिं कुसल हम देखे । ते प्रिय राम लखन सम लेखे ॥
एहि बिधि बूझत सबहि सुबानी । सुनत राम बनबास कहानी ॥

दो०-तेहि बासर बसि प्रातहीं चले सुमिरि रघुनाथ ।
राम दरस की लालसा भरत सरिस सब साथ ॥२२४॥

मंगल सगुन होहिं सब काहू । फरकहिं सुखद बिलोचन बाहू ॥
भरतहि सहित समाज उछाहू । मिलिहहिं रामु मिटिहि दुख दाहू ॥
करत मनोरथ जस जियँ जाके । जाहिं सनेह सुराँ सब छाके ॥
सिथिल अंग पग मग डगि डोलहिं । बिहबल बचन पेम बस बोलहिं ॥
रामसखाँ तेहि समय देखावा । सैल सिरोमनि सहज सुहावा ॥
जासु समीप सरित पय तीरा । सीय समेत बसहिं दोउ बीरा ॥
देखि करहिं सब दंड प्रनामा । कहि जय जानकि जीवन रामा ॥
प्रेम मगन अस राजसमाजू । जनु फिरि अवध चले रघुराजू ॥

दो०–भरत प्रेमु तेहि समय जस तस कहि सकइ न सेषु।
कबिहि अगम जिमि ब्रह्मसुखु अह मम मलिन जनेषु ॥२२५॥

सकल सनेह सिथिल रघुबर कें। गए कोस दुइ दिनकर ढरकें॥
जलु थलु देखि बसे निसि बीतें। कीन्ह गवन रघुनाथ पिरीतें॥
उहाँ रामु रजनी अवसेषा। जागे सीयँ सपन अस देखा॥
सहित समाज भरत जनु आए। नाथ बियोग ताप तन ताए॥
सकल मलिन मन दीन दुखारी। देखीं सासु आन अनुहारी॥
सुनि सिय सपन भरे जल लोचन। भए सोचबस सोच बिमोचन॥
लखन सपन यह नीक न होई। कठिन कुचाह सुनाइहि कोई॥
अस कहि बंधु समेत नहाने। पूजि पुरारि साधु सनमाने॥

छं०–सनमानि सुरि मुनि बंदि बैठे उतर दिसि देखत भए।
नभ धूरि खग मृग भूरि भागे बिकल प्रभु आश्रम गए॥
तुलसी उठे अवलोकि कारनु काह चित सचकित रहे।
सब समाचार किरात कोलन्हि आइ तेहि अवसर कहे॥

सो०–सुनत सुमंगल बैन मन प्रमोद तन पुलक भर।
सरद सरोरुह नैन तुलसी भरे सनेह जल ॥२२६॥

बहुरि सोचबस भे सियरवनू। कारन कवन भरत आगवनू॥
एक आइ अस कहा बहोरी। सेन संग चतुरंग न थोरी॥
सो सुनि रामहि भा अति सोचू। उत पितु बच इत बंधु सकोचू॥
भरत सुभाउ समुझि मन माहीं। प्रभु चित हित थिति पावत नाहीं॥
समाधान तब भा यह जाने। भरतु कहे महुँ साधु सयाने॥
लखन लखेउ प्रभु हृदयँ खभारू। कहत समय सम नीति बिचारू॥
बिनु पूछें कछु कहउँ गोसाईं। सेवकु समयँ न ढीठ ढिठाईं॥
तुम्ह सर्बग्य सिरोमनि स्वामी। आपनि समुझि कहउँ अनुगामी॥

दो०—नाथ सुहृद सुठि सरल चित सील सनेह निधान।
सब पर प्रीति प्रतीति जियँ जानिअ आपु समान ॥२२७॥

बिषई जीव पाइ प्रभुताई। मूढ़ मोह बस होहिं जनाई ॥
भरतु नीति रत साधु सुजाना। प्रभु पद प्रेमु सकल जगु जाना ॥
तेऊ आजु राम पदु पाई। चले धरम मरजाद मेटाई ॥
कुटिल कुबंधु कुअवसरु ताकी। जानि राम बनवास एकाकी ॥
करि कुमन्त्रु मन साजि समाजू। आए करै अकटक राजू ॥
कोटि प्रकार कलपि कुटिलाई। आए दल बटोरि दोउ भाई ॥
जौं जियँ होति न कपट कुचाली। केहि सोहाति रथ बाजि गजाली ॥
भरतहि दोसु देइ को जाएँ। जग बौराइ राज पदु पाएँ ॥

दो०—ससि गुर तिय गामी नहुषु चढ़ेउ भूमिसुर जान।
लोक बेद ते बिमुख भा अधम न बेन समान ॥२२८॥

सहसबाहु सुरनाथ त्रिसकू। केहि न राजमद दीन्ह कलंकू ॥
भरत कीन्ह यह उचित उपाऊ। रिपु रिन रंच न राखब काऊ ॥
एक कीन्हि नहि भरत भलाई। निदरे रामु जानि असहाई ॥
समुझि परिहि सोउ आजु बिसेषी। समर सरोष राम मुखु पेखी ॥
एतना कहत नीति रस भूला। रन रस बिटपु पुलक मिस फूला ॥
प्रभु पद बंदि सीस रज राखी। बोले सत्य सहज बलु भाषी ॥
अनुचित नाथ-न मानब मोरा। भरत हमहि उपचार न थोरा ॥
कहँ लगि सहिअ रहिअ मनु मारे। नाथ साथ धनु हाथ हमारे ॥

दो०—छत्रि जाति रघुकुल जनमु राम अनुग जगु जान।
लातहुँ मारें चढ़ति सिर नीच को धूरि समान ॥२२९॥

उठि कर जोरि रजायसु मागा। मनहुँ बीर रस सोवत जागा ॥
बाँधि जटा सिर कसि कटि भाथा। साजि सरासनु सायकु हाथा ॥

आजु राम सेवक जसु लेऊँ। भरतहि समर सिखावन देऊँ॥
राम निरादर कर फलु पाई। सोवहुँ समर सेज दोउ भाई॥
आइ बना भल सकल समाजू। प्रगट करउँ रिस पाछिल आजू॥
जिमि करि निकर दलइ मृगराजू। लेइ लपेटि लवा जिमि बाजू॥
तैसेहिं भरतहि सेन समेता। सानुज निदरि निपातउँ खेता॥
जौं सहाय कर संकरु आई। तौ मारउँ रन राम दोहाई॥

दो०—अति सरोष माखे लखनु लखि सुनि सपथ प्रवान।
सभय लोक सब लोकपति चाहत भभरि भगान॥२३०॥

जगु भय मगन गगन भइ बानी। लखन बाहुबल बिपुल बखानी॥
तात प्रताप प्रभाउ तुम्हारा। को कहि सकइ को जाननिहारा॥
अनुचित उचित काजु किछु होऊ। समुझि करिअ भल कह सबु कोऊ॥
सहसा करि पाछें पछिताहीं। कहहिं बेद बुध ते बुध नाहीं॥
सुनि सुर बचन लखन सकुचाने। राम सीयँ सादर सनमाने॥
कही तात तुम्ह नीति सुहाई। सब तें कठिन राजमदु भाई॥
जो अचवँत नृप मातहिं तेई। नाहिन साधुसभा जेहिं सेई॥
सुनहु लखन भल भरत सरीसा। बिधि प्रपंच महँ सुना न दीसा॥

दो०—भरतहि होइ न राजमदु बिधि हरि हर पद पाइ।
कबहुँ कि काँजी सीकरनि छीरसिंधु बिनसाइ॥२३१॥

तिमिरु तरुन तरनिहि मकु गिलई। गगनु मगन मकु मेघहि मिलई॥
गोपद जल बूड़हिं घटजोनी। सहज छमा बरु छाड़ै छोनी॥
मसक फूँक मकु मेरु उड़ाई। होइ न नृपमदु भरतहि भाई॥
लखन तुम्हार सपथ पितु आना। सुचि सुबंधु नहिं भरत समाना॥
सगुनु खीरु अवगुन जलु ताता। मिलइ रचइ परपंचु बिधाता॥
भरतु हंस रबिबंस तड़ागा। जनमि कीन्ह गुन दोष बिभागा॥

गहि गुन पय तजि अवगुन बारी। निज जस जगत कीन्हि उजिआरी॥
कहत भरत गुन सीलु सुभाऊ। पेम पयोधि मगन रघुराऊ॥

दो०—सुनि रघुबर बानी बिबुध देखि भरत पर हेतु।
सकल सराहत राम सो प्रभु को कृपानिकेतु॥२३२॥

जौं न होत जग जनम भरत को। सकल धरम धुर धरनि धरत को॥
कबि कुल अगम भरत गुन गाथा। को जानइ तुम्ह बिनु रघुनाथा॥
लखन राम सियँ सुनि सुर बानी। अति सुखु लहेउ न जाइ बखानी॥
इहाँ भरतु सब सहित सहाए। मंदाकिनीं पुनीत नहाए॥
सरित समीप राखि सब लोगा। मागि मातु गुर सचिव नियोगा॥
चले भरत जहँ सिय रघुराई। साथ निषादनाथु लघु भाई॥
समुझि मातु करतब सकुचाहीं। करत कुतरक कोटि मन माहीं॥
रामु लखनु सिय सुनि मम नाऊँ। उठि जनि अनत जाहिं तजि ठाऊँ॥

दो०—मातु मते महुँ मानि मोहि जो कछु करहिं सो थोर।
अघ अवगुन छमि आदरहिं समुझि आपनी ओर॥२३३॥

जौं परिहरहिं मलिन मनु जानी। जौं सनमानहिं सेवकु मानी।
मोरें सरन रामहि की पनही। राम सुस्वामि दोसु सब जनही॥
जग जस भाजन चातक मीना। नेम पेम निज निपुन नबीना॥
अस मन गुनत चले मग जाता। सकुच सनेहँ सिथिल सब गाता॥
फेरति मनहुँ मातु कृत खोरी। चलत भगति बल धीरज धोरी॥
जब समुझत रघुनाथ सुभाऊ। तब पथ परत उताइल पाऊ॥
भरत दसा तेहि अवसर कैसी। जल प्रबाहँ जल अलि गति जैसी॥
देखि भरत कर सोचु सनेहू। भा निषाद तेहि समय बिदेहू॥

दो०—लगे होन मंगल सगुन सुनि गुनि कहत निषादु।
मिटिहि सोचु होइहि हरषु पुनि परिनाम बिषादु॥२३४॥

सेवक बचन सत्य सब जाने। आश्रम निकट जाइ निअराने॥
भरत दीख बन सैल समाजू। मुदित छुधित जनु पाइ सुनाजू॥
ईति भीति जनु प्रजा दुखारी। त्रिबिध ताप पीड़ित ग्रह मारी॥
जाइ सुराज सुदेस सुखारी। होहिं भरत गति तेहि अनुहारी॥
राम बास बन संपति भ्राजा। सुखी प्रजा जनु पाइ सुराजा॥
सचिव बिरागु बिबेकु नरेसू। बिपिन सुहावन पावन देसू॥
भट जम नियम सैल रजधानी। साँति सुमति सुचि सुंदर रानी॥
सकल अंग संपन्न सुराऊ। राम चरन आश्रित चित चाऊ॥

दो०—जीति मोह महिपालु दल सहित बिबेक भुआलु।
करत अकंटक राजु पुरँ सुख संपदा सुकालु॥२३५॥

बन प्रदेस मुनि बास घनेरे। जनु पुर नगर गाउँ गन खेरे॥
बिपुल बिचित्र बिहग मृग नाना। प्रजा समाजु न जाइ बखाना॥
खगहा करि हरि बाघ बराहा। देखि महिष बृष साजु सराहा॥
बयरु बिहाइ चरहिं एक संगा। जहँ तहँ मनहुँ सेन चतुरंगा॥
झरना झरहिं मत्त गज गाजहिं। मनहुँ निसान बिबिधि बिधि बाजहिं॥
चक चकोर चातक सुक पिक गन। कूजत मंजु मराल मुदित मन॥
अलिगन गावत नाचत मोरा। जनु सुराज मंगल चहुँ ओरा॥
बेलि बिटप तृन सफल सफूला। सब समाजु मुद मंगल मूला॥

दो०—राम सैल सोभा निरखि भरत हृदयँ अति पेमु।
तापस तप फलु पाइ जिमि सुखी सिराने नेमु॥२३६॥

तब केवट ऊँचें चढ़ि धाई। कहेउ भरत सन भुजा उठाई॥
नाथ देखिअहिं बिटप बिसाला। पाकरि जंबु रसाल तमाला॥
जिन्ह तरुबरन्ह मध्य बटु सोहा। मंजु बिसाल देखि मनु मोहा॥
नील सघन पल्लव फल लाला। अबिरल छाहँ सुखद सब काला॥

मानहुँ तिमिर अरुनमय रासी। बिरची बिधि सँकेलि सुषमा सी॥
ए तरु सरित समीप गोसाँई। रघुबर परनकुटी जहँ छाई॥
तुलसी तरुबर बिबिध सुहाए। कहुँ कहुँ सियँ कहुँ लखन लगाए॥
बट छायाँ बेदिका बनाई। सियँ निज पानि सरोज सुहाई॥

दो०-जहाँ बैठि मुनिगन सहित नित सिय रामु सुजान।
सुनहिं कथा इतिहास सब आगम निगम पुरान॥२३७॥

सखा बचन सुनि बिटप निहारी। उमगे भरत बिलोचन बारी॥
करत प्रनाम चले दोउ भाई। कहत प्रीति सारद सकुचाई॥
हरषहिं निरखि राम पद अंका। मानहुँ पारसु पायउ रंका॥
रज सिर धरि हियँ नयनन्हि लावहिं। रघुबर मिलन सरिस सुख पावहिं॥
देखि भरत गति अकथ अतीवा। प्रेम मगन मृग खग जड़ जीवा॥
सखहि सनेह बिबस मग भूला। कहि सुपथ सुर बरषहिं फूला॥
निरखि सिद्ध साधक अनुरागे। सहज सनेहु सराहन लागे॥
होत न भूतल भाउ भरत को। अचर सचर चर अचर करत को॥

दो०-पेम अमिअ मंदरु बिरहु भरतु पयोधि गँभीर।
मथि प्रगटेउ सुर साधु हित कृपासिंधु रघुबीर॥२३८॥

सखा समेत मनोहर जोटा। लखेउ न लखन सघन बन ओटा॥
भरत दीख प्रभु आश्रमु पावन। सकल सुमंगल सदनु सुहावन॥
करत प्रवेस मिटे दुख दावा। जनु जोगीं परमारथु पावा॥
देखे भरत लखन प्रभु आगे। पूँछे बचन कहत अनुरागे॥
सीस जटा कटि मुनि पट बाँधे। तून कसें कर सरु धनु काँधे॥
बेदी पर मुनि साधु समाजू। सीय सहित राजत रघुराजू॥
बलकल बसन जटिल तनु स्यामा। जनु मुनि बेष कीन्ह रति कामा॥
कर कमलनि धनु सायकु फेरत। जिय की जरनि हरत हँसि हेरत॥

दो०—लसत मंजु मुनि मंडली मध्य सीय रघुचंदु।
ग्यान सभाँ जनु तनु धरे भगति सच्चिदानंदु ॥२३९॥

सानुज सखा समेत मगन मन। बिसरे हरष सोक सुख दुख गन ॥
पाहि नाथ कहि पाहि गोसाईं। भूतल परे लकुट की नाईं ॥
बचन सपेम लखन पहिचाने। करत प्रनामु भरत जियँ जाने ॥
बंधु सनेह सरस एहि ओरा। उत साहिब सेवा बस जोरा ॥
मिलि न जाइ नहिं गुदरत बनई। सुकबि लखन मन की गति भनई ॥
रहे राखि सेवा पर भारू। चढ़ी चग जनु खैंच खेलारू ॥
कहत सप्रेम नाइ महि माथा। भरत प्रनाम करत रघुनाथा ॥
उठे रामु सुनि पेम अधीरा। कहुँ पट कहुँ निषंग धनु तीरा ॥

दो०—बरबस लिए उठाइ उर लाए कृपानिधान।
भरत राम की मिलनि लखि बिसरे सबहि अपान ॥२४०॥

मिलनि प्रीति किमि जाइ बखानी। कबिकुल अगम करम मन बानी ॥
परम पेम पूरन दोउ भाई। मन बुधि चित अहमिति बिसराई ॥
कहहु सुपेम प्रगट को करई। केहि छाया कबि मति अनुसरई ॥
कबिहि अरथ आखर बलु साँचा। अनुहरि ताल गतिहि नटु नाचा ॥
अगम सनेह भरत रघुबर को। जहँ न जाइ मनु बिधि हरि हर को ॥
सो मैं कुमति कहौं केहि भाँती। बाज सुराग कि गाँडर ताँती ॥
मिलनि बिलोकि भरत रघुबर की। सुरगन सभय धकधकी धरकी ॥
समुझाए सुरगुरु जड़ जागे। बरषि प्रसून प्रससन लागे ॥

दो०—मिलि सपेम रिपुसूदनहि केवटु भेंटेउ राम।
भूरि भायँ भेंटे भरत लछिमन करत प्रनाम ॥२४१॥

भेंटेउ लखन ललकि लघु भाई। बहुरि निषादु लीन्ह उर लाई ॥
पुनि मुनिगन दुहुँ भाइन्ह बंदे। अभिमत आसिष पाइ अनंदे ॥

सानुज भरत उमगि अनुरागा। धरि सिर सिय पद पदुम परागा ॥
पुनि पुनि करत प्रनाम उठाए। सिर कर कमल परसि बैठाए ॥
सीयँ असीस दीन्हि मन माहीं। मगन सनेहँ देह सुधि नाहीं ॥
सब बिधि सानुकूल लखि सीता। भे निसोच उर अपडर बीता ॥
कोउ किछु कहइ न कोउ किछु पूँछा। प्रेम भरा मन निज गति छूँछा ॥
तेहि अवसर केवटु धीरजु धरि। जोरि पानि बिनवत प्रनामु करि ॥

दो०—नाथ साथ मुनिनाथ के मातु सकल पुर लोग।
सेवक सेनप सचिव सब आए बिकल बियोग ॥२४२॥

सीलसिंधु सुनि गुर आगवनू। सिय समीप राखे रिपुदवनू ॥
चले सबेग रामु तेहि काला। धीर धरम धुर दीनदयाला ॥
गुरहि देखि सानुज अनुरागे। दंड प्रनाम करन प्रभु लागे ॥
मुनिबर धाइ लिए उर लाई। प्रेम उमगि भेंटे दोउ भाई ॥
प्रेम पुलकि केवट कहि नामू। कीन्ह दूरि तें दंड प्रनामू ॥
रामसखा रिषि बरबस भेंटा। जनु महि लुठत सनेह समेटा ॥
रघुपति भगति सुमंगल मूला। नभ सराहि सुर बरिसहिं फूला ॥
एहि सम निपट नीच कोउ नाहीं। बड़ बसिष्ठ सम को जग माहीं ॥

दो०—जेहि लखि लखनहु तें अधिक मिले मुदित मुनिराउ।
सो सीतापति भजन को प्रगट प्रताप प्रभाउ ॥२४३॥

आरत लोग राम सबु जाना। करुनाकर सुजान भगवाना ॥
जो जेहि भायँ रहा अभिलाषी। तेहि तेहि कै तसि तसि रुख राखी ॥
सानुज मिलि पल महुँ सब काहू। कीन्ह दूरि दुखु दारुन दाहू ॥
यह बड़ि बात राम कै नाहीं। जिमि घट कोटि एक रबि छाहीं ॥
मिलि केवटहि उमगि अनुरागा। पुरजन सकल सराहहिं भागा ॥
देखीं राम दुखित महतारीं। जनु सुबेलि अवलीं हिम मारीं ॥

प्रथम राम भेंटी कैकेई । सरल सुभायँ भगति मति भेई ॥
पग परि कीन्ह प्रबोधु बहोरी । काल करम बिधि सिर धरि खोरी ॥

दो०–भेटीं रघुबर मातु सब करि प्रबोधु परितोषु ।
अब ईस आधीन जगु काहु न देइअ दोषु ॥२४४॥

गुरतिय पद बंदे दुहु भाई । सहित बिप्रतिय जे सँग आईं ॥
गंग गौरि सम सब सनमानीं । देहिं असीस मुदित मृदु बानीं ॥
गहि पद लगे सुमित्रा अंका । जनु भेंटी संपति अति रंका ॥
पुनि जननी चरननि दोउ भ्राता । परे पेम ब्याकुल सब गाता ॥
अति अनुराग अंब उर लाए । नयन सनेह सलिल अन्हवाए ॥
तेहि अवसर कर हरष बिषादू । किमि कबि कहै मूक जिमि स्वादू ॥
मिलि जननिहि सानुज रघुराऊ । गुर सन कहेउ कि धारिअ पाऊ ॥
पुरजन पाइ मुनीस नियोगू । जल थल तकि तकि उतरेउ लोगू ॥

दो०–महिसुर मंत्री मातु गुर गने लोग लिए साथ ।
पावन आश्रम गवनु किय भरत लखन रघुनाथ ॥२४५॥

सीय आइ मुनिबर पग लागी । उचित असीस लही मन मागी ॥
गुरपतिनिहि मुनितियन्ह समेता । मिली पेमु कहि जाइ न जेता ॥
बंदि बंदि पग सिय सबही के । आसिरबचन लहे प्रिय जी के ॥
सासु सकल जब सीयँ निहारीं । मूदे नयन सहमि सुकुमारीं ॥
परीं बधिक बस मनहुँ मरालीं । काह कीन्ह करतार कुचालीं ॥
तिन्ह सिय निरखि निपट दुखु पावा । सो सबु सहिअ जो दैउ सहावा ॥
जनकसुता तब उर धरि धीरा । नील नलिन लोयन भरि नीरा ॥
मिली सकल सासुन्ह सिय जाई । तेहि अवसर करुना महि छाई ॥

दो०–लागि लागि पग सबनि सिय भेंटति अति अनुराग ।
हृदयँ असीसहिं पेम बस रहिअहु भरी सोहाग ॥२४६॥

बिकल सनेहँ सीय सब रानीं। बैठन सबहि कहेउ गुर ग्यानी॥
कहि जग गति मायिक मुनिनाथा। कहे कछुक परमारथ गाथा॥
नृप कर सुरपुर गवनु सुनावा। सुनि रघुनाथ दुसह दुखु पावा॥
मरन हेतु निज नेहु बिचारी। भे अति बिकल धीर धुर धारी॥
कुलिस कठोर सुनत कटु बानी। बिलपत लखन सीय सब रानी॥
सोक बिकल अति सकल समाजू। मानहुँ राजु अकाजेउ आजू॥
मुनिबर बहुरि राम समुझाए। सहित समाज सुसरित नहाए॥
ब्रतु निरंबु तेहि दिन प्रभु कीन्हा। मुनिहु कहे जलु काहुँ न लीन्हा॥

दो०–भोरु भएँ रघुनंदनहि जो मुनि आयसु दीन्ह।
श्रद्धा भगति समेत प्रभु सो सबु सादरु कीन्ह॥२४७॥

करि पितु क्रिया बेद जसि बरनी। भे पुनीत पातक तम तरनी॥
जासु नाम पावक अघ तूला। सुमिरत सकल सुमंगल मूला॥
सुद्ध सो भयउ साधु संमत अस। तीरथ आवाहन सुरसरि जस॥
सुद्ध भएँ दुइ बासर बीते। बोले गुर सन राम पिरीते॥
नाथ लोग सब निपट दुखारी। कंद मूल फल अंबु अहारी॥
सानुज भरतु सचिव सब माता। देखि मोहि पल जिमि जुग जाता॥
सब समेत पुर धारिअ पाऊ। आपु इहाँ अमरावति राऊ॥
बहुत कहेउँ सब कियउँ ढिठाई। उचित होइ तस करिअ गोसाँई॥

दो०–धर्म सेतु करुनायतन कस न कहहु अस राम।
लोग दुखित दिन दुइ दरस देखि लहहुँ बिश्राम॥२४८॥

राम बचन सुनि सभय समाजू। जनु जलनिधि महुँ बिकल जहाजू॥
सुनि गुर गिरा सुमंगल मूला। भयउ मनहुँ मारुत अनुकूला॥
पावन पयँ तिहुँ काल नहाहीं। जो बिलोकि अघ ओघ नसाहीं॥
मंगलमूरति लोचन भरि भरि। निरखहिं हरषि दंडवत करि करि॥

राम सैल बन देखन जाहीं। जहँ सुख सकल सकल दुख नाहीं॥
झरना झरहिं सुधासम बारी। त्रिबिध तापहर त्रिबिध बयारी॥
बिटप बेलि तृन अगनित जाती। फल प्रसून पल्लव बहु भाँती॥
सुंदर सिला सुखद तरु छाहीं। जाइ बरनि बन छबि केहि पाहीं॥

दो०-सरनि सरोरुह जल बिहग कूजत गुंजत भृंग।
बैर बिगत बिहरत बिपिन मृग बिहग बहुरंग॥२४९॥

कोल किरात भिल्ल बनबासी। मधु सुचि सुंदर स्वादु सुधा सी॥
भरि भरि परन पुटीं रचि रूरी। कंद मूल फल अंकुर जूरी॥
सबहि देहिं करि बिनय प्रनामा। कहि कहि स्वाद भेद गुन नामा॥
देहिं लोग बहु मोल न लेहीं। फेरत राम दोहाई देहीं॥
कहहिं सनेह मगन मृदु बानी। मानत साधु पेम पहिचानी॥
तुम्ह सुकृती हम नीच निषादा। पावा दरसनु राम प्रसादा॥
हमहि अगम अति दरसु तुम्हारा। जस मरु धरनि देवधुनि धारा॥
राम कृपाल निषाद नेवाजा। परिजन प्रजउ चहिअ जस राजा॥

दो०-यह जियँ जानि सँकोचु तजि करिअ छोहु लखि नेहु।
हमहि कृतारथ करन लगि फल तृन अंकुर लेहु॥२५०॥

तुम्ह प्रिय पाहुने बन पगु धारे। सेवा जोगु न भाग हमारे॥
देब काह हम तुम्हहि गोसाँई। ईंधनु पात किरात मिताई॥
यह हमारि अति बड़ि सेवकाई। लेहिं न बासन बसन चोराई॥
हम जड़ जीव जीव गन घाती। कुटिल कुचाली कुमति कुजाती॥
पाप करत निसि बासर जाहीं। नहिं पट कटि नहिं पेट अघाहीं॥
सपनेहुँ धरम बुद्धि कस काऊ। यह रघुनंदन दरस प्रभाऊ॥
जब तें प्रभु पद पदुम निहारे। मिटे दुसह दुख दोष हमारे॥
बचन सुनत पुरजन अनुरागे। तिन्ह के भाग सराहन लागे॥

छं०-लागे सराहन भाग सब अनुराग बचन सुनावहीं।
बोलनि मिलनि सिय राम चरन सनेहु लखि सुखु पावहीं॥
नर नारि निदरहिं नेहु निज सुनि कोल भिल्लनि की गिरा।
तुलसी कृपा रघुबंसमनि की लोह लै लौका तिरा॥

सो०-बिहरहिं बन चहु ओर प्रति दिन प्रमुदित लोग सब।
जल ज्यों दादुर मोर भए पीन पावस प्रथम॥२५१॥

पुरजन नारि मगन अति प्रीती। बासर जाहिं पलक सम बीती॥
सीय सासु प्रति बेष बनाई। सादर करइ सरिस सेवकाई॥
लखा न मरमु राम बिनु काहूँ। माया सब सिय माया माहूँ॥
सीयँ सासु सेवा बस कीन्ही। तिन्ह लहि सुख सिख आसिष दीन्ही॥
लखि सिय सहित सरल दोउ भाई। कुटिल रानि पछितानि अघाई॥
अवनि जमहि जाचति कैकेई। महि न बीचु बिधि मीचु न देई॥
लोकहुँ बेद बिदित कबि कहहीं। राम बिमुख थलु नरक न लहहीं॥
यहु संसउ सब के मन माहीं। राम गवनु बिधि अवध कि नाहीं॥

दो०-निसि न नीद नहिं भूख दिन भरतु बिकल सुचि सोच।
नीच कीच बिच मगन जस मीनहि सलिल सँकोच॥२५२॥

कीन्हि मातु मिस काल कुचाली। ईति भीति जस पाकत साली॥
केहि बिधि होइ राम अभिषेकू। मोहि अवकलत उपाउ न एकू॥
अवसि फिरहिं गुर आयसु मानी। मुनि पुनि कहब राम रुचि जानी॥
मातु कहेहुँ बहुरहिं रघुराऊ। राम जननि हठ करबि कि काऊ॥
मोहि अनुचर कर केतिक बाता। तेहि महँ कुसमउ बाम बिधाता॥
जौं हठ करउँ त निपट कुकरमू। हरगिरि तें गुरु सेवक धरमू॥
एकउ जुगुति न मन ठहरानी। सोचत भरतहि रैनि बिहानी॥
प्रात नहाइ प्रभुहि सिर नाई। बैठत पठए रिषयँ बोलाई॥

दो०—गुर पद कमल प्रनामु करि बैठे आयसु पाइ।
विप्र महाजन सचिव सब जुरे सभासद आइ ॥२५३॥

बोले मुनिबरु समय समाना। सुनहु सभासद भरत सुजाना ॥
धरम धुरीन भानु कुल भानू। राजा रामु स्ववस भगवानू ॥
सत्यसंध पालक श्रुति सेतू। राम जनमु जग मंगल हेतू ॥
गुर पितु मातु वचन अनुसारी। खल दलु दलन देव हितकारी ॥
नीति प्रीति परमारथ स्वारथु। कोउ न राम सम जान जथारथु ॥
बिधि हरि हरु ससि रबि दिसिपाला। माया जीव करम कुलि काला ॥
अहिप महिप जहँ लगि प्रभुताई। जोग सिद्धि निगमागम गाई ॥
करि बिचार जियँ देखहु नीके। राम रजाइ सीस सबही कें ॥

दो०—राखें राम रजाइ रुख हम सब कर हित होइ।
समुझि सयाने करहु अब सब मिलि संमत सोइ ॥२५४॥

सब कहुँ सुखद राम अभिषेकू। मंगल मोद मूल मग एकू ॥
केहि बिधि अवध चलहिं रघुराऊ। कहहु समुझि सोइ करिअ उपाऊ ॥
सब सादर सुनि मुनिबर बानी। नय परमारथ स्वारथ सानी ॥
उतरु न आव लोग भए भोरे। तब सिरु नाइ भरत कर जोरे ॥
भानुबंस भए भूप घनेरे। अधिक एक तें एक बड़ेरे ॥
जनम हेतु सब कहँ पितु माता। करम सुभासुभ देइ बिधाता ॥
दलि दुख सजइ सकल कल्याना। अस असीस राउरि जगु जाना ॥
सो गोसाइँ बिधि गति जेहिं छेंकी। सकइ को टारि टेक जो टेकी ॥

दो०—बूझिअ मोहि उपाउ अब सो सब मोर अभागु।
सुनि सनेहमय बचन गुर उर उमगा अनुरागु ॥२५५॥

तात बात फुरि राम कृपाहीं। राम बिमुख सिधि सपनेहुँ नाहीं ॥
सकुचउँ तात कहत एक बाता। अरध तजहिं बुध सरबस जाता ॥

तुम्ह कानन गवनहु दोउ भाई। फेरिअहिं लखन सीय रघुराई ॥
सुनि सुबचन हरषे दोउ भ्राता। भे प्रमोद परिपूरन गाता ॥
मन प्रसन्न तन तेजु बिराजा। जनु जिय राउ रामु भए राजा ॥
बहुत लाभ लोगन्ह लघु हानी। सम दुख सुख सब रोवहिं रानी ॥
कहहिं भरतु मुनि कहा सो कीन्हे। फलु जग जीवन्ह अभिमत दीन्हे ॥
कानन करउँ जनम भर बासू। एहि तें अधिक न मोर सुपासू ॥

दो०–अंतरजामी रामु सिय तुम्ह सरबग्य सुजान।
जौं फुर कहहु त नाथ निज किजिअ बचनु प्रवान॥२५६॥

भरत बचन सुनि देखि सनेहू। सभा सहित मुनि भए बिदेहू ॥
भरत महा महिमा जलरासी। मुनि मति ठाढ़ि तीर अबला सी ॥
गा चह पार जतनु हियँ हेरा। पावति नाव न बोहितु बेरा ॥
औरु करिहि को भरत बड़ाई। सरसी सीपि कि सिंधु समाई ॥
भरतु मुनिहि मन भीतर भाए। सहित समाज राम पहिं आए ॥
प्रभु प्रनामु करि दीन्ह सुआसनु। बैठे सब सुनि मुनि अनुसासनु ॥
बोले मुनिबरु बचन बिचारी। देस काल अवसर अनुहारी ॥
सुनहु राम सरबग्य सुजाना। धरम नीति गुन ग्यान निधाना ॥

दो०–सब के उर अंतर बसहु जानहु भाउ कुभाउ।
पुरजन जननी भरत हित होइ सो कहिअ उपाउ ॥२५७॥

आरत कहहिं बिचारि न काऊ। सूझ जुआरिहि आपन दाऊ ॥
सुनि मुनि बचन कहत रघुराऊ। नाथ तुम्हारेहि हाथ उपाऊ ॥
सब कर हित रुख राउरि राखें। आयसु किएँ मुदित फुर भाषें ॥
प्रथम जो आयसु मो कहुँ होई। माथें मानि करौं सिख सोई ॥
पुनि जेहि कहँ जस कहब गोसाईं। सो सब भाँति घटिहि सेवकाईं ॥
कह मुनि राम सत्य तुम्ह भाषा। भरत सनेहँ बिचारु न राखा ॥

तेहि तें कहउँ बहोरि बहोरी। भरत भगति बस भइ मति मोरी॥
मोरें जान भरत रुचि राखी। जो कीजिअ सो सुभ सिव साखी॥

दो०-भरत बिनय सादर सुनिअ करिअ बिचारु बहोरि।
करब साधुमत लोकमत नृपनय निगम निचोरि॥२५८॥

गुर अनुरागु भरत पर देखी। राम हृदयँ आनंदु बिसेषी॥
भरतहि धरम धुरंधर जानी। निज सेवक तन मानस बानी॥
बोले गुर आयस अनुकूला। बचन मंजु मृदु मंगलमूला॥
नाथ सपथ पितु चरन दोहाई। भयउ न भुअन भरत सम भाई॥
जे गुर पद अंबुज अनुरागी। ते लोकहुँ बेदहुँ बड़भागी॥
राउर जा पर अस अनुरागू। को कहि सकइ भरत कर भागू॥
लखि लघु बंधु बुद्धि सकुचाई। करत बदन पर भरत बड़ाई॥
भरतु कहहिं सोइ किएँ भलाई। अस कहि राम रहे अरगाई॥

दो०-तब मुनि बोले भरत सन सब सँकोचु तजि तात।
कृपासिंधु प्रिय बंधु सन कहहु हृदय कै बात॥२५९॥

सुनि मुनि बचन राम रुख पाई। गुरु साहिब अनुकूल अघाई॥
लखि अपनें सिर सबु छरु भारू। कहि न सकहिं कछु करहिं बिचारू॥
पुलकि सरीर सभाँ भए ठाढे। नीरज नयन नेह जल बाढे॥
कहब मोर मुनिनाथ निबाहा। एहि तें अधिक कहौं मैं काहा॥
मैं जानउँ निज नाथ सुभाऊ। अपराधिहु पर कोह न काऊ॥
मो पर कृपा सनेहु बिसेषी। खेलत खुनिस न कबहूँ देखी॥
सिसुपन तें परिहरेउँ न संगू। कबहुँ न कीन्ह मोर मन भंगू॥
मैं प्रभु कृपा रीति जियँ जोही। हारेहुँ खेल जितावहिं मोही॥

दो०-महूँ सनेह सकोच बस सनमुख कही न बैन।
दरसन तृपित न आजु लगि पेम पिआसे नैन॥२६०॥

बिधि न सकेउ सहि मोर दुलारा। नीच बीचु जननी मिस पारा॥
यहउ कहत मोहि आजु न सोभा। अपनीं समुझि साधु सुचि को भा॥
मातु मंदि मैं साधु सुचाली। उर अस आनत कोटि कुचाली॥
फरइ कि कोदव बालि सुसाली। मुकता प्रसव कि संबुक काली॥
सपनेहुँ दोसक लेसु न काहू। मोर अभाग उदधि अवगाहू॥
बिनु समुझें निज अघ परिपाकू। जारिउँ जायँ जननि कहि काकू॥
हृदयँ हेरि हारेउँ सब ओरा। एकहि भाँति भलेहि भल मोरा॥
गुर गोसाइँ साहिब सिय रामू। लागत मोहि नीक परिनामू॥

दो०—साधु सभाँ गुर प्रभु निकट कहउँ सुथल सतिभाउ।
प्रेम प्रपंचु कि झूठ फुर जानहिं मुनि रघुराउ॥२६१॥

भूपति मरन पेम पनु राखी। जननी कुमति जगतु सबु साखी॥
देखि न जाहिं बिकल महतारीं। जरहिं दुसह जर पुर नर नारीं॥
महीं सकल अनरथ कर मूला। सो सुनि समुझि सहिउँ सब सूला॥
सुनि बन गवनु कीन्ह रघुनाथा। करि मुनि बेष लखन सिय साथा॥
बिनु पानहिन्ह पयादेहि पाएँ। संकरु साखि रहेउँ एहि घाएँ॥
बहुरि निहारि निषाद सनेहू। कुलिस कठिन उर भयउ न बेहू॥
अब सबु आँखिन्ह देखेउँ आई। जिअत जीव जड़ सबइ सहाई॥
जिन्हहि निरखि मग साँपिनि बीछी। तजहिं बिषम बिषु तामस तीछी॥

दो०—तेइ रघुनंदनु लखनु सिय अनहित लागे जाहि।
तासु तनय तजि दुसह दुख दैउ सहावइ काहि॥२६२॥

सुनि अति बिकल भरत बर बानी। आरति प्रीति बिनय नय सानी॥
सोक मगन सब सभाँ खभारू। मनहुँ कमल बन परेउ तुसारू॥
कहि अनेक बिधि कथा पुरानी। भरत प्रबोधु कीन्ह मुनि ग्यानी॥
बोले उचित बचन रघुनंदू। दिनकर कुल कैरव बन चंदू॥

तात जायँ जियँ करहु गलानी। ईस अधीन जीव गति जानी॥
तीनि काल तिभुअन मत मोरें। पुन्यसिलोक तात तर तोरें॥
उर आनत तुम्ह पर कुटिलाई। जाइ लोकु परलोकु नसाई॥
दोसु देहिं जननिहि जड़ तेई। जिन्ह गुर साधु सभा नहिं सेई॥

दो०--मिटिहहिं पाप प्रपच सब अखिल अमंगल भार।
लोक सुजसु परलोक सुखु सुमिरत नामु तुम्हार॥२६३॥

कहउँ सुभाउ सत्य सिव साखी। भरत भूमि रह राउरि राखी॥
तात कुतरक करहु जनि जाएँ। बैर पेम नहिं दुरइ दुराएँ॥
मुनि गन निकट बिहग मृग जाहीं। बाधक बधिक बिलोकि पराहीं॥
हित अनहित पसु पच्छिउ जाना। मानुष तनु गुन ग्यान निधाना॥
तात तुम्हहि मैं जानउँ नीकें। करौं काह असमंजस जीकें॥
राखेउ रायँ सत्य मोहि त्यागी। तनु परिहरेउ पेम पन लागी॥
तासु बचन मेटत मन सोचू। तेहि तें अधिक तुम्हार सँकोचू॥
ता पर गुर मोहि आयसु दीन्हा। अवसि जो कहहु चहउँ सोइ कीन्हा॥

दो०--मनु प्रसन्न करि सकुच तजि कहहु करौं सोइ आजु।
सत्यसंध रघुबर बचन सुनि भा सुखी समाजु॥२६४॥

सुर गन सहित सभय सुरराजू। सोचहिं चाहत होन अकाजू॥
बनत उपाउ करत कछु नाहीं। राम सरन सब गे मन माहीं॥
बहुरि बिचारि परस्पर कहहीं। रघुपति भगत भगति बस अहहीं॥
सुधि करि अंबरीष दुरबासा। भे सुर सुरपति निपट निरासा॥
सहे सुरन्ह बहु काल बिषादा। नरहरि किए प्रगट प्रहलादा॥
लगि लगि कान कहहिं धुनि माथा। अब सुर काज भरत के हाथा॥
आन उपाउ न देखिअ देवा। मानत रामु सुसेवक सेवा॥
हियँ सपेम सुमिरहु सब भरतहि। निज गुन सील राम बस करतहि॥

दो०-सुनि सुर मत सुरगुर कहेउ भल तुम्हार बड़ भागु ।
सकल सुमंगल मूल जग भरत चरन अनुरागु ॥२६५॥

सीतापति सेवक सेवकाई । कामधेनु सय सरिस सुहाई ॥
भरत भगति तुम्हरें मन आई । तजहु सोचु बिधि बात बनाई ॥
देखु देवपति भरत प्रभाऊ । सहज सुभायँ बिबस रघुराऊ ॥
मन थिर करहु देव डरु नाहीं । भरतहि जानि राम परिछाहीं ॥
सुनि सुरगुर सुर समत सोचू । अंतरजामी प्रभुहि सकोचू ॥
निज सिर भारु भरत जियँ जाना । करत कोटि बिधि उर अनुमाना ॥
करि बिचारु मन दीन्ही ठीका । राम रजायस आपन नीका ॥
निज पन तजि राखेउ पनु मोरा । छोहु सनेहु कीन्ह नहिं थोरा ॥

दो०-कीन्ह अनुग्रह अमित अति सब बिधि सीतानाथ ।
करि प्रनामु बोले भरतु जोरि जलज जुग हाथ ॥२६६॥

कहौं कहावौं का अब स्वामी । कृपा अंबुनिधि अंतरजामी ॥
गुर प्रसन्न साहिब अनुकूला । मिटी मलिन मन कलपित सूला ॥
अपडर डरेउँ न सोच समूलें । रबिहि न दोसु देव दिसि भूलें ॥
मोर अभागु मातु कुटिलाई । बिधि गति बिषम काल कठिनाई ॥
पाउ रोपि सब मिलि मोहि घाला । प्रनतपाल पन आपन पाला ॥
यह नइ रीति न राउरि होई । लोकहुँ बेद बिदित नहिं गोई ॥
जगु अनभल भल एकु गोसाईं । कहिअ होइ भल कासु भलाईं ॥
देउ देवतरु सरिस सुभाऊ । सनमुख बिमुख न काहुहि काऊ ॥

दो०-जाइ निकट पहिचानि तरु छाहँ समनि सब सोच ।
मागत अभिमत पाव जग राउ रंक भल पोच ॥२६७॥

लखि सब बिधि गुर स्वामि सनेहू । मिटेउ छोभु नहि मन संदेहू ॥
अब करुनाकर कीजिअ सोई । जन हित प्रभु चित छोभु न होई ॥

जो सेवकु साहिबहि सँकोची। निज हित चहइ तासु मति पोची॥
सेवक हित साहिब सेवकाई। करै सकल सुख लोभ बिहाई॥
स्वारथु नाथ फिरें सबही का। किएँ रजाइ कोटि बिधि नीका॥
यह स्वारथ परमारथ सारू। सकल सुकृत फल सुगति सिंगारू॥
देव एक बिनती सुनि मोरी। उचित होइ तस करब बहोरी॥
तिलक समाजु साजि सबु आना। करिअ सुफल प्रभु जौं मनु माना॥

दो०-सानुज पठइअ मोहि बन कीजिअ सबहि सनाथ।
नतरु फेरिअहिं बंधु दोउ नाथ चलौं मैं साथ॥२६८॥

नतरु जाहिं बन तीनिउ भाई। बहुरिअ सीय सहित रघुराई॥
जेहि बिधि प्रभु प्रसन्न मन होई। करुना सागर कीजिअ सोई॥
देवँ दीन्ह सबु मोहि अभारू। मोरें नीति न धरम बिचारू॥
कहउँ बचन सब स्वारथ हेतू। रहत न आरत कें चित चेतू॥
उतरु देइ सुनि स्वामि रजाई। सो सेवकु लखि लाज लजाई॥
अस मैं अवगुन उदधि अगाधू। स्वामि सनेहँ सराहत साधू॥
अब कृपाल मोहि सो मत भावा। सकुच स्वामि मन जाइँ न पावा॥
प्रभु पद सपथ कहउँ सति भाऊ। जग मंगल हित एक उपाऊ॥

दो०-प्रभु प्रसन्न मन सकुच तजि जो जेहि आयसु देब।
सो सिर धरि धरि करिहि सबु मिटिहि अनट अवरेब॥२६९॥

भरत बचन सुचि सुनि सुर हरषे। साधु सराहि सुमन सुर बरषे॥
असमंजस बस अवध नेवासी। प्रमुदित मन तापस बनबासी॥
चुपहिं रहे रघुनाथ सँकोची। प्रभु गति देखि सभा सब सोची॥
जनक दूत तेहि अवसर आए। मुनि बसिष्ठँ सुनि बेगि बोलाए॥
करि प्रनाम तिन्ह रामु निहारे। बेषु देखि भए निपट दुखारे॥
दूतन्ह मुनिबर बूझी बाता। कहहु बिदेह भूप कुसलाता॥

सुनि सकुचाइ नाइ महि माथा। बोले चर बर जोरें हाथा॥
बूझब राउर सादर साईं। कुसल हेतु सो भयउ गोसाईं॥

दो०-नाहिं त कोसल नाथ कें साथ कुसल गइ नाथ।
मिथिला अवध बिसेष तें जगु सब भयउ अनाथ॥२७०॥

कोसलपति गति सुनि जनकौरा। भे सब लोक सोक बस बौरा॥
जेहिं देखे तेहि समय बिदेहू। नामु सत्य अस लाग न केहू॥
रानि कुचालि सुनत नरपालहि। सूझ न कछु जस मनि बिनु ब्यालहि॥
भरत राज रघुबर बनबासू। भा मिथिलेसहि हृदयँ हराँसू॥
नृप बूझे बुध सचिव समाजू। कहहु बिचारि उचित का आजू॥
समुझि अवध असमंजस दोऊ। चलिअ कि रहिअ न कह कछु कोऊ॥
नृपहिं धीर धरि हृदयँ बिचारी। पठए अवध चतुर चर चारी॥
बूझि भरत सति भाउ कुभाऊ। आएहु बेगि न होइ लखाऊ॥

दो०-गए अवध चर भरत गति बूझि देखि करतूति।
चले चित्रकूटहि भरतु चार चले तेरहूति॥२७१॥

दूतन्ह आइ भरत कइ करनी। जनक समाज जथामति बरनी॥
सुनि गुर परिजन सचिव महीपति। भे सब सोच सनेहँ बिकल अति॥
धरि धीरजु करि भरत बड़ाई। लिए सुभट साहनी बोलाई॥
घर पुर देस राखि रखवारे। हय गय रथ बहु जान सँवारे॥
दुघरी साधि चले ततकाला। किए बिश्रामु न मग महिपाला॥
भोरहिं आजु नहाइ प्रयागा। चले जमुन उतरन सबु लागा॥
खबरि लेन हम पठए नाथा। तिन्ह कहि अस महि नायउ माथा॥
साथ किरात छ सातक दीन्हे। मुनिबर तुरत बिदा चर कीन्हे॥

दो०-सुनत जनक आगवनु सबु हरषेउ अवध समाजु।
रघुनंदनहि सकोचु बड़ सोच बिबस सुरराजु॥२७२॥

गरइ गलानि कुटिल कैकेई। काहि कहै केहि दूषनु देई॥
अस मन आनि मुदित नर नारी। भयउ बहोरि रहब दिन चारी॥
एहि प्रकार गत बासर सोऊ। प्रात नहान लाग सबु कोऊ॥
करि मज्जनु पूजहिं नर नारी। गनप गौरि तिपुरारि तमारी॥
रमा रमन पद बंदि बहोरी। बिनवहिं अंजुलि अंचल जोरी॥
राजा रामु जानकी रानी। आनँद अवधि अवध रजधानी॥
सुबस बसउ फिरि सहित समाजा। भरतहि रामु करहुँ जुबराजा॥
एहि सुख सुधाँ सींचि सब काहू। देव देहु जग जीवन लाहू॥

दो०-गुर समाज भाइन्ह सहित राम राजु पुर होउ।
अछत राम राजा अवध मरिअ मागु सबु कोउ॥२७३॥

सुनि सनेहमय पुरजन बानी। निंदहिं जोग बिरति मुनि ग्यानी॥
एहि बिधि नित्यकरम करि पुरजन। रामहि करहिं प्रनाम पुलकि तन॥
ऊँच नीच मध्यम नर नारी। लहहिं दरसु निज निज अनुहारी॥
सावधान सबही सनमानहिं। सकल सराहत कृपानिधानहिं॥
लरिकाइहि तें रघुबर बानी। पालत नीति प्रीति पहिचानी॥
सील सकोच सिंधु रघुराऊ। सुमुख सुलोचन सरल सुभाऊ॥
कहत राम गुन गन अनुरागे। सब निज भाग सराहन लागे॥
हम सम पुन्य पुंज जग थोरे। जिन्हहि रामु जानत करि मोरे॥

दो०-प्रेम मगन तेहि समय सब सुनि आवत मिथिलेसु।
सहित सभा संभ्रम उठेउ रबिकुल कमल दिनेसु॥२७४॥

भाइ सचिव गुर पुरजन साथा। आगें गवनु कीन्ह रघुनाथा॥
गिरिबरु दीख जनकपति जबहीं। करि प्रनामु रथ त्यागेउ तबहीं॥
राम दरस लालसा उछाहू। पथ श्रम लेसु कलेसु न काहू॥
मन तहँ जहँ रघुबर बैदेही। बिनु मन तन दुख सुख सुधि केही॥

आवत जनकु चले एहि भाँती। सहित समाज प्रेम मति माती॥
आए निकट देखि अनुरागे। सादर मिलन परसपर लागे॥
लगे जनक मुनिजन पद बंदन। रिषिन्ह प्रनामु कीन्ह रघुनंदन॥
भाइन्ह सहित रामु मिलि राजहि। चले लवाइ समेत समाजहि॥

दो०-आश्रम सागर सांत रस पूरन पावन पाथु
सेन मनहुँ करुना सरित लिएँ जाहिं रघुनाथु॥२७५॥

बोरति ग्यान बिराग करारे। बचन ससोक मिलत नद नारे॥
सोच उसास समीर तरंगा। धीरज तट तरुबर कर भंगा॥
बिषम बिषाद तोरावति धारा। भय भ्रम भवँर अबर्त अपारा॥
केवट बुध बिद्या बड़ि नावा। सकहिं न खेइ ऐक नहिं आवा॥
बनचर कोल किरात बिचारे। थके बिलोकि पथिक हियँ हारे॥
आश्रम उदधि मिली जब जाई। मनहुँ उठेउ अंबुधि अकुलाई॥
सोक बिकल दोउ राज समाजा। रहा न ग्यानु न धीरजु लाजा॥
भूप रूप गुन सील सराही। रोवहिं सोक सिंधु अवगाही॥

छं०-अवगाहि सोक समुद्र सोचहिं नारि नर ब्याकुल महा।
दै दोष सकल सरोष बोलहिं बाम बिधि कीन्हो कहा॥
सुर सिद्ध तापस जोगिजन मुनि देखि दसा बिदेह की।
तुलसी न समरथु कोउ जो तरि सकै सरित सनेह की॥

सो०-किए अमित उपदेस जहँ तहँ लोगन्ह मुनिबरन्ह।
धीरजु धरिअ नरेस कहेउ बसिष्ठ बिदेह सन॥२७६॥

जासु ग्यान रबि भव निसि नासा। बचन किरन मुनि कमल बिकासा॥
तेहि कि मोह ममता निअराई। यह सिय राम सनेह बड़ाई॥
बिषई साधक सिद्ध सयाने। त्रिबिध जीव जग बेद बखाने॥
राम सनेह सरस मन जासू। साधु सभाँ बड़ आदर तासू॥

सोह न राम पेम बिनु ग्यानू । करनधार बिनु जिमि जलजानू ॥
मुनि बहुबिधि बिदेहु समुझाए । राम घाट सब लोग नहाए ॥
सकल सोक संकुल नर नारी । सो बासरु बीतेउ बिनु बारी ॥
पसु खग मृगन्ह न कीन्ह अहारू । प्रिय परिजन कर कौन बिचारू ॥

दो०-दोउ समाज निमिराजु रघुराजु नहाने प्रात ।
बैठे सब बट बिटप तर मन मलीन कृस गात ॥२७७॥

जे महिसुर दसरथ पुर बासी । जे मिथिलापति नगर निवासी ॥
हंस बंस गुर जनक पुरोधा । जिन्ह जग मगु परमारथु सोधा ॥
लगे कहन उपदेस अनेका । सहित धरम नय बिरति बिबेका ॥
कौसिक कहि कहि कथा पुरानीं । समुझाई सब सभा सुबानीं ॥
तब रघुनाथ कौसिकहि कहेऊ । नाथ कालि जल बिनु सबु रहेऊ ॥
मुनि कह उचित कहत रघुराई । गयउ बीति दिन पहर अढाई ॥
रिषि रुख लखि कह तेरहुतिराजू । इहाँ उचित नहिं असन अनाजू ॥
कहा भूप भल सबहि सोहाना । पाइ रजायसु चले नहाना ॥

दो०-तेहि अवसर फल फूल दल मूल अनेक प्रकार ।
लइ आए बनचर बिपुल भरि भरि काँवरि भार ॥२७८॥

कामद भे गिरि राम प्रसादा । अवलोकत अपहरत बिषादा ॥
सर सरिता बन भूमि बिभागा । जनु उमगत आनंद अनुरागा ॥
बेलि बिटप सब सफल सफूला । बोलत खग मृग अलि अनुकूला ॥
तेहि अवसर बन अधिक उछाहू । त्रिबिध समीर सुखद सब काहू ॥
जाइ न बरनि मनोहरताई । जनु महि करति जनक पहुनाई ॥
तब सब लोग नहाइ नहाई । राम जनक मुनि आयसु पाई ॥
देखि देखि तरुबर अनुरागे । जहँ तहँ पुरजन उतरन लागे ॥
दल फल मूल कंद बिधि नाना । पावन सुंदर सुधा समाना ॥

दो०—सादर सब कहँ रामगुर पठए भरि भरि भार।
पूजि पितर सुर अतिथि गुर लगे करन फरहार ॥२७९॥

एहि बिधि बासर बीते चारी। रामु निरखि नर नारि सुखारी ॥
दुहु समाज असि रुचि मन माहीं। बिनु सिय राम फिरब भल नाहीं ॥
सीता राम संग बनबासू। कोटि अमरपुर सरिस सुपासू ॥
परिहरि लखन रामु बैदेही। जेहि घरु भाव बाम बिधि तेही ॥
दाहिन दइउ होइ जब सबही। राम समीप बसिअ बन तबही ॥
मंदाकिनि मज्जनु तिहु काला। राम दरसु मुद मंगल माला ॥
अटनु राम गिरि बन तापस थल। असनु अमिअ सम कंद मूल फल ॥
सुख समेत संबत दुइ साता। पल सम होहिं न जनिअहिं जाता ॥

दो०—एहि सुख जोग न लोग सब कहहिं कहाँ अस भागु।
सहज सुभायँ समाज दुहु राम चरन अनुरागु ॥२८०॥

एहि बिधि सकल मनोरथ करहीं। बचन सप्रेम सुनत मन हरहीं ॥
सीय मातु तेहि समय पठाईं। दासी देखि सुअवसरु आईं ॥
सावकास सुनि सब सिय सासू। आयउ जनकराज रनिवासू ॥
कौसल्याँ सादर सनमानी। आसन दिए समय सम आनी ॥
सीलु सनेहु सकल दुहु ओरा। द्रवहिं देखि सुनि कुलिस कठोरा ॥
पुलक सिथिल तन बारि बिलोचन। महि नख लिखन लगीं सब सोचन ॥
सब सिय राम प्रीति कि सि मूरति। जनु करुना बहु बेष बिसूरति ॥
सीय मातु कह बिधि बुधि बाँकी। जो पय फेनु फोर पबि टाँकी ॥

दो०—सुनिअहि सुधा देखिअहिं गरल सब करतूति कराल।
जहँ तहँ काक उलूक बक मानस सकृत मराल ॥२८१॥

सुनि ससोच कह देबि सुमित्रा। बिधि गति बड़ि बिपरीत बिचित्रा ॥
जो सृजि पालइ हरइ बहोरी। बाल केलि सम बिधि मति भोरी ॥

कौसल्या कह दोसु न काहू। करम बिबस दुख सुख छति लाहू॥
कठिन करम गति जान बिधाता। जो सुभ असुभ सकल फल दाता॥
ईस रजाइ सीस सबही कें। उतपति थिति लय बिषहु अमी कें॥
देबि मोह बस सोचिअ बादी। बिधि प्रपंचु अस अचल अनादी॥
भूपति जिअब मरब उर आनी। सोचिअ सखि लखि निज हित हानी॥
सीय मातु कह सत्य सुबानी। सुकृती अवधि अवधपति रानी॥

दो०—लखनु रामु सिय जाहुँ बन भल परिनाम न पोचु।
गहबरि हियँ कह कौसिला मोहि भरत कर सोचु॥२८२॥

ईस प्रसाद असीस तुम्हारी। सुत सुतबधू देवसरि बारी॥
राम सपथ मैं कीन्हि न काऊ। सो करि कहउँ सखी सतिभाऊ॥
भरत सील गुन बिनय बड़ाई। भायप भगति भरोस भलाई॥
कहत सारदहु कर मति हीचे। सागर सीप कि जाहिं उलीचे॥
जानउँ सदा भरत कुलदीपा। बार बार मोहि कहेउ महीपा॥
कसें कनकु मनि पारिखि पाएँ। पुरुष परिखिअहिं समयँ सुभाएँ॥
अनुचित आजु कहब अस मोरा। सोक सनेहँ सयानप थोरा॥
सुनि सुरसरि सम पावनि बानी। भईं सनेह बिकल सब रानी॥

दो०—कौसल्या कह धीर धरि सुनहु देबि मिथिलेसि।
को बिबेकनिधि बल्लभहि तुम्हहि सकइ उपदेसि॥२८३॥

रानि राय सन अवसरु पाई। अपनी भाँति कहब समुझाई॥
रखिअहिं लखनु भरतु गवनहिं बन। जौं यह मत मानै महीप मन॥
तौ भल जतनु करब सुबिचारी। मोरें सोचु भरत कर भारी॥
गूढ़ सनेह भरत मन माहीं। रहें नीक मोहि लागत नाहीं॥
लखि सुभाउ सुनि सरल सुबानी। सब भइ मगन करुन रस रानी॥
नभ प्रसून झरि धन्य धन्य धुनि। सिथिल सनेहँ सिद्ध जोगी मुनि॥

सबु रनिवासु बिथकि लखि रहेऊ। तब धरि धीर सुमित्राँ कहेऊ॥
देबि दंड जुग जामिनि बीती। राम मातु सुनि उठी सप्रीती॥

दो०—बेगि पाउ धारिअ थलहि कह सनेहँ सतिभाय।
हमरें तौ अब ईस गति कै मिथिलेस सहाय॥२८४॥

लखि सनेह सुनि बचन बिनीता। जनकप्रिया गह पाय पुनीता॥
देबि उचित असि बिनय तुम्हारी। दसरथ घरिनि राम महतारी॥
प्रभु अपने नीचहु आदरहीं। अगिनि धूम गिरि सिर तिनु धरहीं॥
सेवकु राउ करम मन बानी। सदा सहाय महेसु भवानी॥
रउरे अंग जोगु जग को है। दीप सहाय कि दिनकर सोहै॥
रामु जाइ बनु करि सुर काजू। अचल अवधपुर करिहहिं राजू॥
अमर नाग नर राम बाहुबल। सुख बसिहहिं अपनें अपने थल॥
यह सब जागबलिक कहि राखा। देबि न होइ मुधा मुनि भाषा॥

दो०—अस कहि पग परि पेम अति सिय हित बिनय सुनाइ।
सिय समेत सियमातु तब चली सुआयसु पाइ॥२८५॥

प्रिय परिजनहि मिली बैदेही। जो जेहि जोगु भाँति तेहि तेही॥
तापस बेष जानकी देखी। भा सबु बिकल बिषाद बिसेषी॥
जनक राम गुर आयसु पाई। चले थलहि सिय देखी आई॥
लीन्हि लाइ उर जनक जानकी। पाहुनि पावन पेम प्रान की॥
उर उमगेउ अंबुधि अनुरागू। भयउ भूप मनु मनहुँ पयागू॥
सिय सनेह बटु बाढ़त जोहा। ता पर राम पेम सिसु सोहा॥
चिरजीवी मुनि ग्यान बिकल जनु। बूड़त लहेउ बाल अवलंबनु॥
मोह मगन मति नहिं बिदेह की। महिमा सिय रघुबर सनेह की॥

दो०—सिय पितु मातु सनेह बस बिकल न सकी सँभारि।
धरनिसुताँ धीरजु धरेउ समउ सुधरमु बिचारि॥२८६॥

तापस वेष जनक सिय देखी । भयउ पेमु परितोषु बिसेषी ॥
पुत्रि पवित्र किए कुल दोऊ । सुजस धवल जगु कह सबु कोऊ ॥
जिति सुरसरि कीरति सरि तोरी । गवनु कीन्ह बिधि अंड करोरी ॥
गंग अवनि थल तीनि बड़ेरे । एहिं किए साधु समाज घनेरे ॥
पितु कह सत्य सनेहँ सुबानी । सीय सकुच महुँ मनहुँ समानी ॥
पुनि पितु मातु लीन्हि उर लाई । सिख आसिष हित दीन्हि सुहाई ॥
कहति न सीय सकुचि मन माहीं । इहाँ बसब रजनीं भल नाहीं ॥
लखि रुख रानि जनायउ राऊ । हृदयँ सराहत सीलु सुभाऊ ॥

दो०—बार बार मिलि भेंटि सिय बिदा कीन्हि सनमानि ।
कही समय सिर भरत गति रानि सुबानि सयानि ॥२८७॥

सुनि भूपाल भरत ब्यवहारू । सोन सुगंध सुधा ससि सारू ॥
मूदे सजल नयन पुलके तन । सुजसु सराहन लगे मुदित मन ॥
सावधान सुनु सुमुखि सुलोचनि । भरत कथा भव बंध बिमोचनि ॥
धरम राजनय ब्रह्मबिचारू । इहाँ जथामति मोर प्रचारू ॥
सो मति मोरि भरत महिमाही । कहै काह छलि छुअति न छाँही ॥
बिधि गनपति अहिपति सिव सारद । कबि कोबिद बुध बुद्धि बिसारद ॥
भरत चरित कीरति करतूती । धरम सील गुन बिमल बिभूती ॥
समुझत सुनत सुखद सब काहू । सुचि सुरसरि रुचि निदर सुधाहू ॥

दो०—निरवधि गुन निरुपम पुरुषु भरतु भरत सम जानि ।
कहिअ सुमेरु कि सेर सम कबिकुल मति सकुचानि ॥२८८॥

अगम सबहि बरनत बरबरनी । जिमि जलहीन मीन गमु धरनी ॥
भरत अमित महिमा सुनु रानी । जानहिं रामु न सकहिं बखानी ॥
बरनि सप्रेम भरत अनुभाऊ । तिय जिय की रुचि लखि कह राऊ ॥
बहुरहिं लखनु भरतु बन जाहीं । सब कर भल सब के मन माहीं ॥

देवि परतु भरत रघुबर की। प्रीति प्रतीति जाइ नहिं तरकी ॥
भरतु अवधि सनेह ममता की। जद्यपि रामु सीम समता की ॥
परमारथ स्वारथ सुख सारे। भरत न सपनेहुँ मनहुँ निहारे ॥
साधन सिद्धि राम पग नेहू। मोहि लखि परत भरत मत एहू ॥

दो०-भोरेहुँ भरत न पेलिहहिं मनसहुँ राम रजाइ।
करिअ न सोचु सनेह बस कहेउ भूप बिलखाइ ॥२८९॥

राम भरत गुन गनत सप्रीती। निसि दंपतिहि पलक सम बीती ॥
राज समाज प्रात जुग जागे। न्हाइ न्हाइ सुर पूजन लागे ॥
गे नहाइ गुर पहिं रघुराई। बंदि चरन बोले रुख पाई ॥
नाथ भरतु पुरजन महतारी। सोक बिकल बनबास दुखारी ॥
सहित समाज राउ मिथिलेसू। बहुत दिवस भए सहत कलेसू ॥
उचित होइ सोइ कीजिअ नाथा। हित सबही कर रौरें हाथा ॥
अस कहि अति सकुचे रघुराऊ। मुनि पुलके लखि सीलु सुभाऊ ॥
तुम्ह बिनु राम सकल सुख साजा। नरक सरिस दुहु राज समाजा ॥

दो०-प्रान प्रान के जीव के जिव सुख के सुख राम।
तुम्ह तजि तात सोहात गृह जिन्हहि तिन्हहि बिधि बाम ॥२९०॥

सो सुखु करमु धरमु जरि जाऊ। जहँ न राम पद पंकज भाऊ ॥
जोगु कुजोगु ग्यानु अग्यानू। जहँ नहिं राम पेम परधानू ॥
तुम्ह बिनु दुखी सुखी तुम्ह तेहीं। तुम्ह जानहु जिय जो जेहि केहीं ॥
राउर आयसु सिर सबही के। बिदित कृपालहि गति सब नीके ॥
आपु आश्रमहि धारिअ पाऊ। भयउ सनेह सिथिल मुनिराऊ ॥
करि प्रनामु तब रामु सिधाए। रिषि धरि धीर जनक पहिं आए ॥
राम बचन गुरु नृपहि सुनाए। सील सनेह सुभायँ सुहाए ॥
महाराज अब कीजिअ सोई। सब कर धरम सहित हित होई ॥

दो०—ग्यान निधान सुजान सुचि धरम धीर नरपाल।
तुम्ह बिनु असमंजस समन को समरथ एहि काल॥२६१॥

सुनि मुनि बचन जनक अनुरागे। लखि गति ग्यानु बिरागु बिरागे॥
सिथिल सनेहँ गुनत मन माहीं। आए इहाँ कीन्ह भल नाहीं॥
रामहि रायँ कहेउ बन जाना। कीन्ह आपु प्रिय प्रेम प्रवाना॥
हम अब बन तें बनहि पठाई। प्रमुदित फिरब बिबेक बड़ाई॥
तापस मुनि महिसुर सुनि देखी। भए प्रेम बस बिकल बिसेषी॥
समउ समुझि धरि धीरजु राजा। चले भरत पहिं सहित समाजा॥
भरत आइ आगें भइ लीन्हे। अवसर सरिस सुआसन दीन्हे॥
तात भरत कह तेरहुति राऊ। तुम्हहि बिदित रघुबीर सुभाऊ॥

दो०—राम सत्यब्रत धरम रत सब कर सीलु सनेहु।
सकट सहत सकोच बस कहिअ जो आयसु देहु॥२६२॥

सुनि तन पुलकि नयन भरि बारी। बोले भरतु धीर धरि भारी॥
प्रभु प्रिय पूज्य पिता सम आपू। कुलगुरु सम हित माय न बापू॥
कौसिकादि मुनि सचिव समाजू। ग्यान अंबुनिधि आपुनु आजू॥
सिसु सेवकु आयसु अनुगामी। जानि मोहि सिख देइअ स्वामी॥
एहिं समाज थल बूझब राउर। मौन मलिन मैं बोलब बाउर॥
छोटे बदन कहउँ बड़ि बाता। छमब तात लखि बाम बिधाता॥
आगम निगम प्रसिद्ध पुराना। सेवा धरमु कठिन जगु जाना॥
स्वामि धरम स्वारथहि बिरोधू। बैरु अंध प्रेमहि न प्रबोधू॥

दो०—राखि राम रुख धरमु ब्रतु पराधीन मोहि जानि।
सब के संमत सर्ब हित करिअ पेमु पहिचानि॥२६३॥

भरत बचन सुनि देखि सुभाऊ। सहित समाज सराहत राऊ॥
सुगम अगम मृदु मंजु कठोरे। अरथु अमित अति आखर थोरे॥

दो०-रामु सनेह सकोच बस कह ससोच सुरराजु।
रचहु प्रपंचहि पंच मिलि नाहिं त भयउ अकाजु ॥२६४॥

सुरन्ह सुमिरि सारदा सराही। देवि देव सरनागत पाही॥
फेरि भरत मति करि निज माया। पालु बिबुध कुल करि छल छाया॥
बिबुध बिनय सुनि देवि सयानी। बोली सुर स्वारथ जड़ जानी॥
मो सन कहहु भरत मति फेरू। लोचन सहस न सूझ सुमेरू॥
बिधि हरि हर माया बड़ि भारी। सोउ न भरत मति सकइ निहारी॥
सो मति मोहि कहत करु भोरी। चंदिनि कर कि चंडकर चोरी॥
भरत हृदयँ सिय राम निवासू। तहँ कि तिमिर जहँ तरनि प्रकासू॥
अस कहि सारद गइ बिधि लोका। बिबुध बिकल निसि मानहुँ कोका॥

दो०-सुर स्वारथी मलीन मन कीन्ह कुमंत्र कुठाटु।
रचि प्रपंच माया प्रबल भय भ्रम अरति उचाटु ॥२६५॥

करि कुचालि सोचत सुरराजू। भरत हाथ सबु काजु अकाजू॥
गए जनकु रघुनाथ समीपा। सनमाने सब रबिकुल दीपा॥
समय समाज धरम अबिरोधा। बोले तब रघुबंस पुरोधा॥
जनक भरत संबादु सुनाई। भरत कहाउति कही सुहाई॥
तात राम जस आयसु देहू। सो सबु करै मोर मत एहू॥
सुनि रघुनाथ जोरि जुग पानी। बोले सत्य सरल मृदु बानी॥
बिद्यमान आपुनि मिथिलेसू। मोर कहब सब भाँति भदेसू॥
राउर राय रजायसु होई। राउरि सपथ सही सिर सोई॥

दो०-राम सपथ सुनि मुनि जनकु सकुचे सभा समेत।
सकल बिलोकत भरत मुखु बनइ न ऊतरु देत ॥२६६॥

सभा सकुच बस भरत निहारी। रामबंधु धरि धीरजु भारी॥
कुसमउ देखि सनेहु सँभारा। बढ़त बिंधि जिमि घटज निवारा॥

सोक कनकलोचन मति छोनी। हरी बिमल गुन गन जग जोनी॥
भरत बिवेक बराहँ बिसाला। अनायास उधरी तेहि काला॥
करि प्रनामु सब कहँ कर जोरे। रामु राउ गुर साधु निहोरे॥
छमब आजु अति अनुचित मोरा। कहउँ बदन मृदु बचन कठोरा॥
हियँ सुमिरी सारदा सुहाई। मानस तें मुख पंकज आई॥
बिमल बिबेक धरम नय साली। भरत भारती मंजु मराली॥

दो०—निरखि बिबेक बिलोचनन्हि सिथिल सनेहँ समाजु।
करि प्रनामु बोले भरतु सुमिरि सीय रघुराजु॥२९७॥

प्रभु पितु मातु सुहृद गुर स्वामी। पूज्य परम हित अंतरजामी॥
सरल सुसाहिबु सील निधानू। प्रनतपाल सर्बग्य सुजानू॥
समरथ सरनागत हितकारी। गुनगाहकु अवगुन अघ हारी॥
स्वामि गोसाँइहि सरिस गोसाईं। मोहि समान मैं साइँ दोहाईं॥
प्रभु पितु बचन मोह बस पेली। आयउँ इहाँ समाजु सकेली॥
जग भल पोच ऊँच अरु नीचू। अमिअ अमरपद माहुरु मीचू॥
राम रजाइ मेट मन माहीं। देखा सुना कतहुँ कोउ नाहीं॥
सो मैं सब बिधि कीन्हि ढिठाई। प्रभु मानी सनेह सेवकाई॥

दो०—कृपाँ भलाईं आपनी नाथ कीन्ह भल मोर।
दूषन भे भूषन सरिस सुजसु चारु चहु ओर॥२९८॥

राउरि रीति सुबानि बड़ाई। जगत बिदित निगमागम गाई॥
कूर कुटिल खल कुमति कलंकी। नीच निसील निरीस निसंकी॥
तेउ सुनि सरन सामुहें आए। सकृत प्रनामु किहें अपनाए॥
देखि दोष कबहुँ न उर आने। सुनि गुन साधु समाज बखाने॥
को साहिब सेवकहि नेवाजी। आपु समाज साज सब साजी॥
निज करतूति न समुझिअ सपनें। सेवक सकुच सोचु उर अपनें॥

सो गोसाइँ नहिं दूसर कोपी। भुजा उठाइ कहउँ पन रोपी॥
पसु नाचत सुक पाठ प्रबीना। गुन गति नट पाठक आधीना॥

दो०—यों सुधारि सनमानि जन किए साधु सिरमोर।
को कृपाल बिनु पालिहै बिरिदावलि बरजोर॥२९९॥

सोक सनेहँ कि बाल सुभाएँ। आयउँ लाइ रजायसु बाएँ॥
तबहुँ कृपाल हेरि निज ओरा। सबहि भाँति भल मानेउ मोरा॥
देखेउँ पाय सुमंगल मूला। जानेउँ स्वामि सहज अनुकूला॥
बड़े समाज बिलोकेउँ भागू। बड़ीं चूक साहिब अनुरागू॥
कृपा अनुग्रहु अंग अघाई। कीन्हि कृपानिधि सब अधिकाई॥
राखा मोर दुलार गोसाईं। अपनें सील सुभायँ भलाईं॥
नाथ निपट मैं कीन्हि ढिठाई। स्वामि समाज सकोच बिहाई॥
अबिनय बिनय जथा रुचि बानी। छमिहि देउ अति आरति जानी॥

दो०—सुहृद सुजान सुसाहिबहि बहुत कहब बड़ि खोरि।
आयसु देइअ देव अब सबइ सुधारी मोरि॥३००॥

प्रभु पद पदुम पराग दोहाई। सत्य सुकृत सुख सीवँ सुहाई॥
सो करि कहउँ हिए अपने की। रुचि जागत सोवत सपने की॥
सहज सनेहँ स्वामि सेवकाई। स्वारथ छल फल चारि बिहाई॥
अग्या सम न सुसाहिब सेवा। सो प्रसादु जन पावै देवा॥
अस कहि प्रेम बिबस भए भारी। पुलक सरीर बिलोचन बारी॥
प्रभु पद कमल गहे अकुलाई। समउ सनेहु न सो कहि जाई॥
कृपासिंधु सनमानि सुबानी। बैठाए समीप गहि पानी॥
भरत बिनय सुनि देखि सुभाऊ। सिथिल सनेहँ सभा रघुराऊ॥

छं०—रघुराउ सिथिल सनेहँ साधु समाज मुनि मिथिला धनी।
मन महुँ सराहत भरत भायप भगति की महिमा घनी॥

भरतहि प्रसंसत बिबुध बरषत सुमन मानस मलिन से।
तुलसी बिकल सब लोग सुनि सकुचे निसागम नलिन से॥

सो०–देखि दुखारी दीन दुहु समाज नर नारि सब।
मघवा महा मलीन मुए मारि मंगल चहत ॥२०१॥

कपट कुचालि सीवँ सुरराजू। पर अकाज प्रिय आपन काजू॥
काक समान पाकरिपु रीती। छली मलीन कतहुँ न प्रतीती॥
प्रथम कुमत करि कपटु सँकेला। सो उचाटु सब कें सिर मेला॥
सुरमायाँ सब लोग बिमोहे। राम प्रेम अतिसय न बिछोहे॥
भय उचाट बस मन थिर नाहीं। छन बन रुचि छन सदन सोहाहीं॥
दुबिध मनोगति प्रजा दुखारी। सरित सिंधु संगम जनु बारी॥
दुचित कतहुँ परितोषु न लहहीं। एक एक सन मरमु न कहहीं॥
लखि हियँ हँसि कह कृपानिधानू। सरिस स्वान मघवान जुबानू॥

दो०–भरतु जनकु मुनिजन सचिव साधु सचेत बिहाइ।
लागि देवमाया सबहि जथाजोगु जनु पाइ॥२०२॥

कृपासिंधु लखि लोग दुखारे। निज सनेहँ सुरपति छल भारे॥
सभा राउ गुर महिसुर मंत्री। भरत भगति सब कै मति जंत्री॥
रामहि चितवत चित्र लिखे से। सकुचत बोलत बचन सिखे से॥
भरत प्रीति नति बिनय बड़ाई। सुनत सुखद बरनत कठिनाई॥
जासु बिलोकि भगति लवलेसू। प्रेम मगन मुनिगन मिथिलेसू॥
महिमा तासु कहै किमि तुलसी। भगति सुभायँ सुमति हियँ हुलसी॥
आपु छोटि महिमा बड़ि जानी। कबिकुल कानि मानि सकुचानी॥
कहि न सकति गुन रुचि अधिकाई। मति गति बाल बचन की नाई॥

दो०–भरत बिमल जसु बिमल बिधु सुमति चकोरकुमारि।
उदित बिमल जन हृदय नभ एकटक रही निहारि॥२०३॥

भरत सुभाउ न सुगम निगमहूँ। लघु मति चापलता कबि छमहूँ॥
कहत सुनत सति भाउ भरत को। सीय राम पद होइ न रत को॥
सुमिरत भरतहि प्रेमु राम को। जेहि न सुलभु तेहि सरिस बाम को॥
देखि दयाल दसा सबही की। राम सुजान जानि जन जी की॥
धरम धुरीन धीर नय नागर। सत्य सनेह सील सुख सागर॥
देसु कालु लखि समउ समाजू। नीति प्रीति पालक रघुराजू॥
बोले बचन बानि सरबसु से। हित परिनाम सुनत ससि रसु से॥
तात भरत तुम्ह धरम धुरीना। लोक बेद बिद प्रेम प्रबीना॥

दो०—करम बचन मानस बिमल तुम्ह समान तुम्ह तात।
गुर समाज लघु बंधु गुन कुसमयँ किमि कहि जात॥२०४॥

जानहु तात तरनि कुल रीती। सत्यसंध पितु कीरति प्रीती॥
समउ समाजु लाज गुरजन की। उदासीन हित अनहित मन की॥
तुम्हहि बिदित सबही कर करमू। आपन मोर परम हित धरमू॥
मोहि सब भाँति भरोस तुम्हारा। तदपि कहउँ अवसर अनुसारा॥
तात तात बिनु बात हमारी। केवल गुरकुल कृपाँ सँभारी॥
नतरु प्रजा परिजन परिवारू। हमहि सहित सबु होत खुआरू॥
जौं बिनु अवसर अथवँ दिनेसू। जग केहि कहहु न होइ कलेसू॥
तस उतपातु तात बिधि कीन्हा। मुनि मिथिलेस राखि सबु लीन्हा॥

दो०—राज काज सब लाज पति धरम धरनि धन धाम।
गुर प्रभाउ पालिहि सबहि भल होइहि परिनाम॥२०५॥

सहित समाज तुम्हार हमारा। घर बन गुर प्रसाद रखवारा॥
मातु पिता गुर स्वामि निदेसू। सकल धरम धरनीधर सेसू॥
सो तुम्ह करहु करावहु मोहू। तात तरनिकुल पालक होहू॥
साधक एक सकल सिधि देनी। कीरति सुगति भूतिमय बेनी॥

सो बिचारि सहि सकटु भारी । करहु प्रजा परिवारु सुखारी ॥
बाँटी बिपति सबहिं मोहि भाई । तुम्हहि अवधि भरि बड़ि कठिनाई ॥
जानि तुम्हहि मृदु कहउँ कठोरा । कुसमयँ तात न अनुचित मोरा ॥
होहिं कुठायँ सुबधु सहाए । ओड़िअहि हाथ असनिहु के घाए ॥

दो०-सेवक कर पद नयन से मुख सो साहिबु होइ ।
तुलसी प्रीति की रीति सुनि सुकबि सराहहिं सोइ ॥३०६॥

सभा सकल सुनि रघुबर बानी । प्रेम पयोधि अमिअँ जनु सानी ॥
सिथिल समाज सनेह समाधी । देखि दसा चुप सारद साधी ॥
भरतहि भयउ परम सतोषू । सनमुख स्वामि बिमुख दुख दोषू ॥
मुख प्रसन्न मन मिटा बिषादू । भा जनु गूँगेहि गिरा प्रसादू ॥
कीन्ह सप्रेम प्रनामु बहोरी । बोले पानि पंकरुह जोरी ॥
नाथ भयउ सुखु साथ गए को । लहेउँ लाहु जग जनमु भए को ॥
अब कृपाल जस आयसु होई । करौं सीस धरि सादर सोई ॥
सो अवलब देव मोहि देई । अवधि पारु पावौं जेहि सेई ॥

दो०-देव देव अभिषेक हित गुर अनुसासनु पाइ ।
आनेउँ सब तीरथ सलिलु तेहि कहँ काह रजाइ ॥३०७॥

एकु मनोरथु बड़ मन माहीं । सभयँ सकोच जात कहि नाहीं ॥
कहहु तात प्रभु आयसु पाई । बोले बानि सनेह सुहाई ॥
चित्रकूट सुचि थल तीरथ बन । खग मृग सर सरि निर्झर गिरिगन ॥
प्रभु पद अकित अवनि बिसेषी । आयसु होइ त आवौं देखी ॥
अवसि अत्रि आयसु सिर धरहू । तात बिगतभय कानन चरहू ॥
मुनि प्रसाद बनु मगल दाता । पावन परम सुहावन भ्राता ॥
रिषिनायकु जहँ आयसु देहीं । राखेहु तीरथ जलु थल तेहीं ॥
सुनि प्रभु बचन भरत सुखु पावा । मुनि पद कमल मुदित सिरु नावा ॥

दो०-भरत राम संबादु सुनि सकल सुमंगल मूल।
सुर स्वारथी सराहि कुल बरषत सुरतरु फूल ॥३०८॥

धन्य भरत जय राम गोसाईं। कहत देव हरषत बरिआईं ॥
मुनि मिथिलेस सभाँ सब काहू। भरत बचन सुनि भयउ उछाहू ॥
भरत राम गुन ग्राम सनेहू। पुलकि प्रसंसत राउ बिदेहू ॥
सेवक स्वामि सुभाउ सुहावन। नेमु पेमु अति पावन पावन ॥
मति अनुसार सराहन लागे। सचिव सभासद सब अनुरागे ॥
सुनि सुनि राम भरत संबादू। दुहु समाज हियँ हरषु बिषादू ॥
राम मातु दुखु सुखु सम जानी। कहि गुन राम प्रबोधीं रानी ॥
एक कहहिं रघुबीर बड़ाई। एक सराहत भरत भलाई ॥

दो०-अत्रि कहेउ तब भरत सन सैल समीप सुकूप।
राखिअ तीरथ तोय तहँ पावन अमिअ अनूप ॥३०९॥

भरत अत्रि अनुसासन पाई। जल भाजन सब दिए चलाई ॥
सानुज आपु अत्रि मुनि साधू। सहित गए जहँ कूप अगाधू ॥
पावन पाथ पुन्यथल राखा। प्रमुदित प्रेम अत्रि अस भाषा ॥
तात अनादि सिद्ध थल एहू। लोपेउ काल बिदित नहिं केहू ॥
तब सेवकन्ह सरस थलु देखा। कीन्ह सुजल हित कूप बिसेषा ॥
बिधि बस भयउ बिस्व उपकारू। सुगम अगम अति धरम बिचारू ॥
भरतकूप अब कहिहहिं लोगा। अति पावन तीरथ जल जोगा ॥
प्रेम सनेम निमज्जत प्रानी। होइहहिं बिमल करम मन बानी ॥

दो०-कहत कूप महिमा सकल गए जहाँ रघुराउ।
अत्रि सुनायउ रघुबरहि तीरथ पुन्य प्रभाउ ॥३१०॥

कहत धरम इतिहास सप्रीती। भयउ भोरु निसि सो सुख बीती ॥
नित्य निबाहि भरत दोउ भाई। राम अत्रि गुर आयसु पाई ॥

सहित समाज साज सब सादें। चले राम बन अटन पयादें॥
कोमल चरन चलत बिनु पनहीं। भइ मृदु भूमि सकुचि मन मनहीं॥
कुस कंटक काँकरीं कुराईं। कटुक कठोर कुबस्तु दुराईं॥
महि मंजुल मृदु मारग कीन्हे। बहत समीर त्रिबिध सुख लीन्हे॥
सुमन बरषि सुर घन करि छाहीं। बिटप फूलि फलि तृन मृदुताहीं॥
मृग बिलोकि खग बोलि सुबानी। सेवहिं सकल राम प्रिय जानी॥

दो०–सुलभ सिद्धि सब प्राकृतहु राम कहत जमुहात।
राम प्रानप्रिय भरत कहुँ यह न होइ बड़ि बात॥३११॥

एहि बिधि भरतु फिरत बन माहीं। नेमु प्रेमु लखि मुनि सकुचाहीं॥
पुन्य जलाश्रय भूमि बिभागा। खग मृग तरु तृन गिरि बन बागा॥
चारु बिचित्र पवित्र बिसेषी। बूझत भरतु दिव्य सब देखी॥
सुनि मन मुदित कहत रिषिराऊ। हेतु नाम गुन पुन्य प्रभाऊ॥
कतहुँ निमज्जन कतहुँ प्रनामा। कतहुँ बिलोकत मन अभिरामा॥
कतहुँ बैठि मुनि आयसु पाई। सुमिरत सीय सहित दोउ भाई॥
देखि सुभाउ सनेहु सुसेवा। देहिं असीस मुदित बनदेवा॥
फिरहिं गएँ दिनु पहर अढाई। प्रभु पद कमल बिलोकहिं आई॥

दो०–देखे थल तीरथ सकल भरत पाँच दिन माझ।
कहत सुनत हरि हर सुजसु गयउ दिवसु भइ साँझ॥३१२॥

भोर न्हाइ सबु जुरा समाजू। भरत भूमिसुर तेरहुति राजू॥
भल दिन आजु जानि मन माहीं। रामु कृपाल कहत सकुचाहीं॥
गुर नृप भरत सभा अवलोकी। सकुचि राम फिरि अवनि बिलोकी॥
सील सराहि सभा सब सोची। कहुँ न राम सम स्वामि सँकोची॥
भरत सुजान राम रुख देखी। उठि सप्रेम धरि धीर बिसेषी॥
करि दंडवत कहत कर जोरी। राखीं नाथ सकल रुचि मोरी॥

मोहि लगि सहेउ सबहिं संतापू। बहुत भाँति दुखु पावा आपू॥
अब गोसाइँ मोहि देउ रजाई। सेवौं अवध अवधि भरि जाई॥

दो०—जेहिं उपाय पुनि पाय जनु देखै दीनदयाल।
सो सिख देइअ अवधि लगि कोसलपाल कृपाल॥३१३॥

पुरजन परिजन प्रजा गोसाईं। सब सुचि सरस सनेहँ सगाईं॥
राउर बदि भल भव दुख दाहू। प्रभु बिनु बादि परम पद लाहू॥
स्वामि सुजानु जानि सब ही की। रुचि लालसा रहनि जन जी की॥
प्रनतपालु पालिहि सब काहू। देउ दुहू दिसि ओर निबाहू॥
अस मोहि सब बिधि भूरि भरोसो। किएँ बिचारु न सोचु खरो सो॥
आरति मोर नाथ कर छोहू। दुहुँ मिलि कीन्ह ढीठु हठि मोहू॥
यह बड़ दोषु दूरि करि स्वामी। तजि सकोच सिखइअ अनुगामी॥
भरत बिनय सुनि सबहिं प्रसंसी। खीर नीर बिबरन गति हंसी॥

दो०—दीनबंधु सुनि बंधु के बचन दीन छलहीन।
देस काल अवसर सरिस बोले रामु प्रबीन॥३१४॥

तात तुम्हारि मोरि परिजन की। चिंता गुरहि नृपहि घर बन की॥
माथे पर गुर मुनि मिथिलेसू। हमहि तुम्हहि सपनेहुँ न कलेसू॥
मोर तुम्हार परम पुरुषारथु। स्वारथु सुजसु धरमु परमारथु॥
पितु आयसु पालिहिं दुहु भाईं। लोक बेद भल भूप भलाईं॥
गुर पितु मातु स्वामि सिख पालें। चलेहुँ कुमग पग परहिं न खालें॥
अस बिचारि सब सोच बिहाई। पालहु अवध अवधि भरि जाई॥
देसु कोसु परिजन परिवारू। गुर पद रजहिं लाग छरु भारू॥
तुम्ह मुनि मातु सचिव सिख मानी। पालेहु पुहुमि प्रजा रजधानी॥

दो०—मुखिआ मुखु सो चाहिऐ खान पान कहुँ एक।
पालइ पोषइ सकल अँग तुलसी सहित बिबेक॥३१५॥

राजधरम सरबसु एतनोई। जिमि मन माहँ मनोरथ गोई॥
बंधु प्रबोधु कीन्ह बहु भाँती। बिनु अधार मन तोषु न साँती॥
भरत सील गुर सचिव समाजू। सकुच सनेह बिबस रघुराजू॥
प्रभु करि कृपा पाँवरीं दीन्हीं। सादर भरत सीस धरि लीन्हीं॥
चरनपीठ करुनानिधान के। जनु जुग जामिक प्रजा प्रान के॥
संपुट भरत सनेह रतन के। आखर जुग जनु जीव जतन के॥
कुल कपाट कर कुसल करम के। बिमल नयन सेवा सुधरम के॥
भरत मुदित अवलंब लहे तें। अस सुख जस सिय रामु रहे तें॥

दो०–मागेउ बिदा प्रनामु करि राम लिए उर लाइ।
लोग उचाटे अमरपति कुटिल कुअवसरु पाइ॥३१६॥

सो कुचालि सब कहँ भइ नीकी। अवधि आस सम जीवनि जी की॥
नतरु लखन सिय राम बियोगा। हहरि मरत सब लोग कुरोगा॥
रामकृपाँ अवरेब सुधारी। बिबुध धारि भइ गुनद गोहारी॥
भेंटत भुज भरि भाइ भरत सो। राम प्रेम रसु कहि न परत सो॥
तन मन बचन उमग अनुरागा। धीर धुरंधर धीरजु त्यागा॥
बारिज लोचन मोचत बारी। देखि दसा सुर सभा दुखारी॥
मुनिगन गुर धुर धीर जनक से। ग्यान अनल मन कसें कनक से॥
जे बिरंचि निरलेप उपाए। पदुम पत्र जिमि जग जल जाए॥

दो०–तेउ बिलोकि रघुबर भरत प्रीति अनूप अपार।
भए मगन मन तन बचन सहित बिराग बिचार॥३१७॥

जहाँ जनक गुर गति मति भोरी। प्राकृत प्रीति कहत बड़ि खोरी॥
बरनत रघुबर भरत बियोगू। सुनि कठोर कबि जानिहि लोगू॥
सो सकोच रसु अकथ सुबानी। समउ सनेहु सुमिरि सकुचानी॥
भेंटि भरतु रघुबर समुझाए। पुनि रिपुदवनु हरषि हियँ लाए॥

सेवक सचिव भरत रुख पाई । निज निज काज लगे सब जाई ॥
सुनि दारुन दुखु दुहूँ समाजा । लगे चलन के साजन साजा ॥
प्रभु पद पदुम बंदि दोउ भाई । चले सीस धरि राम रजाई ॥
मुनि तापस बनदेव निहोरी । सब सनमानि बहोरि बहोरी ॥

दो०—लखनहि भेंटि प्रनामु करि सिर धरि सिय पद धूरि ।
चले सप्रेम असीस सुनि सकल सुमंगल मूरि ॥३१८॥

सानुज राम नृपहि सिर नाई । कीन्हि बहुत बिधि बिनय बड़ाई ॥
देव दया बस बड़ दुखु पायउ । सहित समाज काननहिं आयउ ॥
पुर पगु धारिअ देइ असीसा । कीन्ह धीर धरि गवनु महीसा ॥
मुनि महिदेव साधु सनमाने । बिदा किए हरि हर सम जाने ॥
सासु समीप गए दोउ भाई । फिरे बंदि पग आसिष पाई ॥
कौसिक बामदेव जाबाली । पुरजन परिजन सचिव सुचाली ॥
जथा जोगु करि बिनय प्रनामा । बिदा किए सब सानुज रामा ॥
नारि पुरुष लघु मध्य बड़ेरे । सब सनमानि कृपानिधि फेरे ॥

दो०—भरत मातु पद बंदि प्रभु सुचि सनेहँ मिलि भेंटि ।
बिदा कीन्ह सजि पालकी सकुच सोच सब मेटि ॥३१९॥

परिजन मातु पितहि मिलि सीता । फिरी प्रानप्रिय प्रेम पुनीता ॥
करि प्रनामु भेटीं सब सासू । प्रीति कहत कबि हियँ न हुलासू ॥
सुनि सिख अभिमत आसिष पाई । रही सीय दुहु प्रीति समाई ॥
रघुपति पटु पालकीं मगाईं । करि प्रबोधु सब मातु चढ़ाईं ॥
बार बार हिलि मिलि दुहु भाईं । सम सनेहँ जननीं पहुँचाईं ॥
साजि बाजि गज बाहन नाना । भरत भूप दल कीन्ह पयाना ॥
हृदयँ रामु सिय लखन समेता । चले जाहिं सब लोग अचेता ॥
बसह बाजि गज पसु हियँ हारे । चले जाहिं परबस मन मारे ॥

दो०-गुर गुरतिय पद बंदि प्रभु सीता लखन समेत।
फिरे हरष बिसमय सहित आए परन निकेत ॥३२०॥

बिदा कीन्ह मनमानि निषादू। चलेउ हृदयँ बड़ बिरह बिषादू ॥
कोल किरात भिल्ल बनचारी। फेरे फिरे जोहारि जोहारी ॥
प्रभु सिय लखन बैठि बट छाहीं। प्रिय परिजन बियोग बिलखाहीं ॥
भरत सनेह सुभाउ सुबानी। प्रिया अनुज सन कहत बखानी ॥
प्रीति प्रतीति बचन मन करनी। श्रीमुख राम प्रेम बस बरनी ॥
तेहि अवसर खग मृग जल मीना। चित्रकूट चर अचर मलीना ॥
बिबुध बिलोकि दसा रघुबर की। बरषि सुमन कहि गति घर घर की ॥
प्रभु प्रनामु करि दीन्ह भरोसो। चले मुदित मन डर न खरो सो ॥

दो०-सानुज सीय समेत प्रभु राजत परन कुटीर।
भगति ग्यानु बैराग्य जनु सोहत धरें सरीर ॥३२१॥

मुनि महिसुर गुर भरत भुआलू। राम बिरहँ सबु साजु बिहालू ॥
प्रभु गुन ग्राम गनत मन माहीं। सब चुपचाप चले मग जाहीं ॥
जमुना उतरि पार सबु भयऊ। सो बासरु बिनु भोजन गयऊ ॥
उतरि देवसरि दूसर बासू। रामसखाँ सब कीन्ह सुपासू ॥
सई उतरि गोमतीं नहाए। चौथें दिवस अवधपुर आए ॥
जनकु रहे पुर बासर चारी। राज काज सब साज सँभारी ॥
सौंपि सचिव गुर भरतहि राजू। तेरहुति चले साजि सबु साजू ॥
नगर नारि नर गुर सिख मानी। बसे सुखेन राम रजधानी ॥

दो०-राम दरस लगि लोग सब करत नेम उपबास।
तजि तजि भूषन भोग सुख जिअत अवधि कीं आस ॥३२२॥

सचिव सुसेवक भरत प्रबोधे। निज निज काज पाइ सिख ओधे ॥
पुनि सिख दीन्हि बोलि लघु भाई। सौंपी सकल मातु सेवकाई ॥

भूसुर बोलि भरत कर जोरे। करि प्रनाम बय बिनय निहोरे॥
ऊँच नीच कारजु भल पोचू। आयसु देब न करब सँकोचू॥
परिजन पुरजन प्रजा बोलाए। समाधानु करि सुबस बसाए॥
सानुज गे गुर गेहँ बहोरी। करि दंडवत कहत कर जोरी॥
आयसु होइ त रहौं सनेमा। बोले मुनि तन पुलकि सपेमा॥
समुझब कहब करब तुम्ह जोई। धरम सारु जग होइहि सोई॥

दो०–सुनि सिख पाइ असीस बड़ि गनक बोलि दिनु साधि।
सिंघासन प्रभु पादुका बैठारे निरुपाधि॥३२३॥

राम मातु गुर पद सिरु नाई। प्रभु पद पीठ रजायसु पाई॥
नंदिगाँव करि परन कुटीरा। कीन्ह निवासु धरम धुर धीरा॥
जटाजूट सिर मुनिपट धारी। महि खनि कुस साँथरी सँवारी॥
असन बसन बासन ब्रत नेमा। करत कठिन रिषिधरम सप्रेमा॥
भूषन बसन भोग सुख भूरी। मन तन बचन तजे तिन तूरी॥
अवध राजु सुर राजु सिहाई। दसरथ धनु सुनि धनदु लजाई॥
तेहिं पुर बसत भरत बिनु रागा। चंचरीक जिमि चंपक बागा॥
रमा बिलासु राम अनुरागी। तजत बमन जिमि जन बड़भागी॥

दो०–राम पेम भाजन भरतु बड़े न एहिं करतूति।
चातक हंस सराहिअत टेंक बिबेक बिभूति॥३२४॥

देह दिनहुँ दिन दूबरि होई। घटइ तेजु बलु मुखछबि सोई॥
नित नव राम प्रेम पनु पीना। बढ़त धरम दलु मनु न मलीना॥
जिमि जलु निघटत सरद प्रकासे। बिलसत बेतस बनज बिकासे॥
सम दम संजम नियम उपासा। नखत भरत हिय बिमल अकासा॥
ध्रुव बिस्वासु अवधि राका सी। स्वामि सुरति सुरबीथि बिकासी॥
राम पेम बिधु अचल अदोषा। सहित समाज सोह नित चोखा॥

भरत रहनि समुझनि करतूती। भगति बिरति गुन बिमल बिभूती॥
बरनत सकल सुकबि सकुचाहीं। सेस गनेस गिरा गमु नाहीं॥

दो०–नित पूजत प्रभु पाँवरी प्रीति न हृदयँ समाति।
मागि मागि आयसु करत राज काज बहु भाँति॥३२५॥

पुलक गात हियँ सिय रघुबीरू। जीह नामु जप लोचन नीरू॥
लखन राम सिय कानन बसहीं। भरतु भवन बसि तप तनु कसहीं॥
दोउ दिसि समुझि कहत सबु लोगू। सब बिधि भरत सराहन जोगू॥
सुनि ब्रत नेम साधु सकुचाहीं। देखि दसा मुनिराज लजाहीं॥
परम पुनीत भरत आचरनू। मधुर मंजु मुद मंगल करनू॥
हरन कठिन कलि कलुष कलेसू। महामोह निसि दलन दिनेसू॥
पाप पुंज कुंजर मृगराजू। समन सकल संताप समाजू॥
जन रंजन भंजन भव भारू। राम सनेह सुधाकर सारू॥

छं०–सिय राम प्रेम पियूष पूरन होत जनमु न भरत को।
मुनि मन अगम जम नियम सम दम बिषम ब्रत आचरत को॥
दुख दाह दारिद दंभ दूषन सुजस मिस अपहरत को।
कलिकाल तुलसी से सठन्हि हठि राम सनमुख करत को॥

सो०–भरत चरित करि नेमु तुलसी जो सादर सुनहिं।
सीय राम पद पेमु अवसि होइ भव रस बिरति॥३२६॥

इति श्रीमद्रामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने
द्वितीयः सोपानः समाप्तः।

(अयोध्याकाण्ड समाप्त)

—०—

श्री गणेशाय नमः

श्री रामचरितमानस (अयोध्याकाण्ड)

टिप्पणी

दो० १ मुकुरु=दर्पण। फल चारि=चारोंफल(धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) भूधर=पर्वत। सुकृत=पुण्य। वारी (वारि)=जल। रिधि-सिधि (ऋद्धि-सिद्धि)=भंडार की देवी। अबुधि=समुद्र। सुचि (शुचि) =पवित्र। बिभूती (विभूति)=ऐश्वर्य। सीलु (शील)=मर्यादा। अछत (अक्षत)=जीते जी।

दो० २ नरनाहू (नरनाथ)=राजा। उछाहू (उत्साह)=प्रसन्नता। लोकप =लोकपाल, दिशाओं के स्वामी। भूरिभाग (भूरिभाग्य)=बड़े भाग्यशाली। बदनु (वदन)=मुख। सित=सफेद। जठरपनु= बुढापा। लाहु=लाभ।

दो० ३ भुआलु(भूपाल)=राजा। उदासी (उदासीन)=तटस्थ। छोहु= स्नेह। रौरिहि=आप के ही। रेनु (रेणु)=धूल। रजायसु=आज्ञा। अभिमत=मनचाहा। दातार=देनेवाला। अनुगामी=पीछे चलने वाला।

दो० ४ रहँसि=प्रसन्न होकर। वेगि=शीघ्र।

दो० ५ पाँचहि=पंचो को। नीका=अच्छा। बिरवँ=पौदा। सुसाखा (सुशाखा)=सुन्दर डाली।

दो० ६ चरम (चर्म)=मृगचर्म। बसन=वस्त्र। रोम=ऊनी। पाट= रेशमी। बिताना (वितान)=चँदोवा। रसाल=आम। पूगफल= सुपारी। बीथिन्ह=गलियोंमे। मजु=सुन्दर। चारू(चारु)=सुन्दर। तुरग=घोडा। नाग=हाथी।

दो० ०७ पुलकि=पुलकित होकर। अवसेरी=देर। सरिस (सदृश)=समान। कमठ=कछुआ। रहँसेउ=हर्षित हुआ। विधु=चन्द्रमा। वारिधि=समुद्र। वीचि=लहर। बिलासु=क्रीड़ा।

दो० ८ भूरि=अधिक। रूरी=सुन्दर। हँकारी=बुलाकर। कोकिल बयनीं=कोयल के समान मीठी बोलने वाली। विधुबदनीं=चन्द्रमुखी। मृग सावक नयनी (शावक)=हरिण के बच्चे के समान नेत्रों वाली।

दो० ९ अरघ(अर्ध्य)=स्वागत के समय का पुष्पजल। जनु=दास। हसवस=सूर्यवंश। अवतंस=भूषण।

दो० १० बिसमय (विस्मय)=खेद, आश्चर्य। करनवेध=कान छेदाना। उपवीत=जनेऊ। बिहाइ (विहाय)=छोड़कर। कैरव=कुमुद।

दो० ११ प्रमोदु=प्रसन्नता। अथाई=चबूतरे। लगन (लग्न)=मुहूर्त। बिघन (विघ्न)=बाधा।

दो० १२ सरोजबिपिन=कमलवन। हिमराती=हेमंत ऋतु की रात। खोरी=दोष। बिबुधमति=देवताओं की बुद्धि। पोची=नीच। चेरि=दासी। गिरा=सरस्वती।

दो० १३ किराती=भीलनी। गवँ= घात, मौका। अनमनि=उदास। उसास (उच्छ्वास)=लम्बी साँस। रिपुदमनु=शत्रुघ्न। सालु=पीड़ा।

दो० १४ कत=क्यों। गालु करब=बढ बढ कर बोलूँगी। जनेसु (जनेश)=राजा। दाहिन=अनुकूल। छोभा (क्षोभ)=दुःख। तुराई=तलाई, गद्दा। अरगानी=चुप। खोरे (खञ्ज)=लँगड़े। तिय=स्त्री।

दो० १५ फुर=सत्य। दिनकर=सूर्य। आली=सखी।

दो० १६ ठकुर सोहाती=स्वामी को अच्छी लगने वाली, मुँहदेखी। बवा=बोया। लुनिअ=काटती हूँ। पतिआनि=विश्वास करना।

दो० १७ रहसी=प्रसन्न हुई। फाबी=शोभादेना। प्रतीति=विश्वास। गढछोली=चिकनी चुपड़ी बनाकर। साढसाती=शनि ग्रह की दशा साढ़े सात वर्ष रहती है। साढ़े साती अर्थात् नष्ट करनेवाली। समय········ पिरोते=समय के फिर जानेपर मित्र भी शत्रु हो जाते हैं। छारा (क्षार)=राख। सवति (सपत्नी)=सौत। बरबारी श्रेष्ठ वाड़, घेरा ।

दो० १८ प्रपचु=आडम्बर। सुठि (सुष्ठु)=उत्तम। प्रबोधु=समझाना।

दो० १९ पाखु=पक्ष। विधि=विधाता। दूधकी मक्खी होना=अपमानित होना। बंदिगृह=कैदखाना। नेव=नायब, अधीन।

दो० २० सहमि=स्तब्ध। पसेउ (प्रस्वेद)=पसीना। कदली=केला। दसन (दशन)=दाँत। प्रबोधिसि=समझाई। बकिहि=बगुली को। मराली=हँसिनी। अघ=पाप। दैअँ=दैव।

दो० २१ भरब=निर्वाह करूँगी। नीक=अच्छा। ऊना=दुःख। परिपाका=परिणाम। जामिनि (यामिनी)=रात। गुनिन्ह (गुणज्ञ)= ज्योतिषियों से। भुआल (भूपाल)=राजा। तुअ (तव)=तुम्हारे।

दो० २२ कबुली=कबूल की। पाहन (पाषाण)=पत्थर। टेई=तेजकी। हरित=हरा। तिन (तृण)=तिनका। माहुर=विष। थाती= धरोहर। जुडावहु=शीतल करो। हुलासू=उल्लास।

दो० २३ पुरब=पूर्ण करेगा। काली=कल। चख (चक्षु)=आंख। पूतरि=आँख की पुतली। आली=सखी। भुइँ (भूमि)= पृथ्वी। दल=पत्ते। बिगोई=नष्ट किया। खेम (क्षेम)= कुशल।

दो २४ सरिस (सदृश)=समान।

दो० २५ अगहुड़=आगे। सूल (त्रिशूल)=एक नुकीला अस्त्र। कुलिस (कुलिश)=वज्र। असि=तलवार। अँगवनिहारे=सहनेवाले। रतिनाथ=कामदेव। सुमन=फूल। सर (शर)=बाण। डारि=

फेंक । अनअहिवातु=सौभाग्यहीनता । भावी=होनहार । हेतु=कारण । परसत (स्पर्श)=छूते ही । पानि (पाणि)=हाथ । नेवाराई (निवारित करना)=हटाना । सरोष=क्रोध युक्त । भुअग=साँप । निहारई=देखती है । वासना=पिछले जन्म का सस्कार, इच्छा । रसना=जीभ । मरम (मर्म)=कोमल । ठाहरु=स्थान भवितव्यता=होनहार ।

दो० २६–रकहि=निर्धन को । बपुरे=बेचारे । बरोरू=सुन्दरी । परिजन=कुटुम्बी । सत(शत)=सैकड़ों । घरीकुघरी=समय, कुसमय । गुनि=विचार कर ।

दो० २७ दलकि=हिलना । पाकबरतोरू=बाल तोड़ फोड़ा । गोई=छिपाली । अवगाहू=अथाह ।

दो० २८ कोहाब=रूठना । बिसरि (विस्मृत)=भूलना । मकु=बल्कि । पातकपुंजा=पाप समूह । गुंजा=एक जगली फल, जो लाल, एक ओर काला छोटा सा होता है, उसे रत्ती भी कहते हैं । सुकृत=पुण्य । अवधि=सीमा । कुबिहग=बाज पक्षी । कुलह=मुँहका ढकना । सुभग=सुन्दर ।

दो० २९ कर=किरण । कोकू (कोक)=चकवा । सचान (श्येन)=बाज पक्षी । लावा=बटेर । बिबरन (विवर्ण)=फीका । नरपालू=राजा । दामिनि=बिजली । तालू=ताड़ का वृक्ष । करिनि (करिणी)=हथिनी । कवने=किस । जोग(योग)=मनको एकाग्रकरने को योग कहते हैं । जतिहि=सन्यासी को । अविद्या=अज्ञान ।

दो० ३० झाँखा=शोच किया । माखा=आमर्ष किया । बेसाहि=खरीद कर । अनु=अथवा । सत्यसध=सत्यप्रतिज्ञ । पनु(प्रण)=प्रतिज्ञा । लोन (लवण)=नमक । कुठाँय(कुस्थान) = मर्मस्थल । उघारी=नगी ।

दो० ३१ भीरप्रतीति=बड़ा विश्वास । हाँनि=हानि । साखी (साक्षी)=गवाह । सोधि (शोध)=ढूँढकर ।

दो० ३२ छूँछे=व्यर्थ । परिहरु=छोड़ो । असमंजस =दुविधासे भरा हुआ । परिहास=हँसी । सुठि(सुष्ठु)=अच्छे ।

दो० ३३ फनिकु (फणी)=साँप । प्रबीना (प्रवीण)=चतुर । अनल=आग । साका=ललकार कर, निश्चय ।

दो० ३४ तरंगिनि (तरंगिणी)=नदी । जोई=देखी । कूल=किनारा । मिस=बहाना । मीचु=मृत्यु । आरत(आर्त्त)=दुःखी ।

दो० ३५ निपाता=गिराया । पाठीनु=एक मछली, जिसे पाठीन या पेहना भी कहते हैं । घाय=घाव, जख्म । माहुर=विष । फुला-उबगाला=गाल फुलाना, रुठना । कृपनाई (कृपणता)=कजूसी । खेम=क्षेम । रौताई=राजपूती । अबला=स्त्री । धरनी (धरणि)=पृथ्वी । सत्यसंघ=सत्यप्रतिज्ञ ।

दो० ३६ भोरें=भूलकर भी । कुमति=दुर्बुद्धि । कुठाहरु=बेमौके । बामू (वाम)=टेढ़ा । गोई=छिपाकर । नहारू=ताँत । निदानु =अनर्थ, आदिकारण ।

दो० ३७ बेहालू=बुरी दशामे । अवधि=सीमा । भिनुसारा=प्रातःकाल । बीना (वीणा)=सितार । सायक=बाण । सहगामिनिहि=पतिकेमरनेपर चितामें साथ जलनेवाली स्त्री को । बिभूषण=गहने । अजहुँ=अबभी ।

दो० ३८ बिसाद=दुःख । बसेरा=निवास । महि=पृथ्वी । सभीत=डरेहुए । महीस (महीश)=राजा ।

दो० ३९ लखी=देखी । समाधानु=उत्तर । गजराजु=हाथी ।

दो० ४० अधर=ओठ । भुअंगू (भुजंग)=साँप । सरुष=क्रोधयुक्त ।

दो० ४७ बिगारी=बिगाड़ा। बूझि=समझ। पावकु=आग। कर=हाथ। जारि=फूंक कर। सुधा=अमृत। बेनुबन=बाँस का वन। पालव (पल्लव)=पत्ता। अगहु (अग्राह्य)=न ग्रहण करने योग्य। अगाध =बहुत गहरा। दुराऊ=छिपावपूर्ण। प्रतिबिंबु=परछाई।

बरबु= भलेही।

दो० ४८ भाजनु=पात्र। संमत (सम्मति)=राय। उदास भाँय=तटस्थ। रद=दाँत। गहि=पकड़ कर। जीहा=जीभ। अलीक (अलीक)= झूठा। अनलकन=आग का टुकड़ा। बिषतूल=विषतुल्य। प्रतिकूल=उलटा।

दो० ४९ खरभर=खलबली। सवति आरेसु (सपत्नीईर्ष्या)=सौतों का आपसी डाह। भाम=नर। भूँजब=भोगेंगे।

दो० ५० कोहु=क्रोध। कोठि=अन्न रखने का एक बड़ा पात्र। अवसि= अवश्य। रूखे=रूक्ष। जामिनी (यामिनी)=रात। प्रबोधी=समझाई हुई।

दो० ५१ रिसरूखी=क्रोध से रूक्ष। बाघिनि=शेरनी। ब्याधि= रोग, समस्या। असाधि=असाध्य, जो हल न हो सके। मतिमंद=मूर्ख। बिगोई=नष्ट किया। नव=नया। गयंद= (गजेन्द्र)=हाथी। आलान=काँटेदार जंजीर।

नव गयंदु..........अनंदु अधिकान।
जैसे हाथी अपने पैर के बन्धन से छुटकारा पाकर तथा वन जाने की बात जान कर अत्यन्त प्रसन्न होता है, वैसे ही राम वन जाने तथा राज से छुटकारा जानकर अधिक आनंदित हुए।

दो० ५२ सिर धरि=शीश झुकाकर करना, झुका देना। जपत=कहते हुए। बरद=दान। रंक=निर्धन। धनद=कुबेर। सींवँ=सीमा। छमाईं=क्षमा।

दो० ५३ वार=देर। मकरद=पराग। श्रियमूला=शोभा युक्त, लक्ष्मी युक्त। निरखि=देखकर। भँवर (भ्रमर)=भौंरा। अनुग्रह= कृपा। विपिन=वन। मलान (म्लान)=दुःखी।

दो० ५४ सर (शर)=बाण। करके=टीसना। जवास=एक पौधा, जो बरसात में सूख जाता है। पावस=वर्षा ऋतु। विपादू (विपाद)=दु ख। माजहि=माजाको, बरसाती फेन, जिसे खाकर मछलियाँ वेहोश हो जाती हैं। मापी=मत्त, वेहोश। निदानू= आदिकारण। दिनकर=सूर्य। कृसानु (कृशानु)=आग। मूक=गूँगा।

दो० ५५ सुधाकर=चन्द्रमा। राहू=राहु, एक दुष्ट ग्रह। गा=गया। लिखत सुधाकर लिखिगा राहू, अर्थात् राम को राजगद्दी की जगह वन जाना पड़ा। गति=दशा। वाम=टेढ़ा, उल्टा। उभयँ=दोनों। छुछुन्दरि=चूहे की शक्ल का एक जानवर, कहावतहै कि साँप छछुन्दरिको निगल कर फिर उगले तो अन्धा हो जाता है। नीका=अच्छा। टीका=श्रेष्ठ। प्रचंड=कठिन।

दो० ५६ सतअवध=सैकड़ों अयोध्या। खग=पक्षी। सरोरुह= कमल। बय (वय)=आयु। हँरासू (ह्रास)=दुःख। सुरति (स्मृति)=याद।

दो० ५७ अवधि=सीमा, १४ वर्ष का समय। अंबु=जल। परिजन= कुटुम्बी। सुकृत=पुण्य। कराल=कठिन। कलापा=समूह। जुग (युग)=दोनों।

दो० ५८ रासि (राशि)=ढेरी। चारु=सुन्दर। लेखति=कुरेदना। नूपुर=पायल, पाँव का एक गहना। मुखर=शब्दवाला। मंजु=सुन्दर। वारी (वारि)=आँसू। कैरव=कुमुद। विपिन= वन। विधु=चन्द्रमा।

दो० ५९ पुतरि=पुतली। कलपबेलि=कल्प लता। लाली=लालन,

प्यार किया। सलिल=जल। प्रतिपाली=पोषण किया। बामा=टेढ़ा। परिनामा=फल। अवनि=पृथ्वी। जिअनि-मूरि=संजीवनी बूटी। जोगवत=रक्षा करना। बारन=बढ़ाना। करि=हाथी। केहरि (केशरी)=सिंह। भूरि=बहुत। सुभग=सुन्दर।

दो० ६० किसोरी (किशोरी)=बालिका। बिरंचि=ब्रह्मा। भोरी=भोली भाली। पाहनकृमि=पत्थरका कीड़ा, एक कीड़ा जो पत्थर को भी काट देता है। कै=अथवा। कपि=बानर। सुरसर=देवों का तालाब। बनज=कमल। डाबर=छोटा जलाशय। जोगु=योग्य। हंसकुमारी=हंसिनी। अवलंबा=सहारा। परितोष=संतोष। प्रबोधन=समझाना।

दो० ६१ आनभाँति=अन्यप्रकारसे। गुनहू=विचारो। सत (शत)=सैकड़ों। श्रुति=वेद।

दो० ६२ प्रवाण=प्रमाणित, सिद्ध। बारा=समय। घामु=धूप। बयारी=हवा। पयादेहि=पैदलही। पदत्राना (पदत्राण)=जूता। भूमिधर=पर्वत। भालु=रीछ। बृक=भेड़िया। नागा=हाथी। नाद=गर्जना। बलकल=वल्कल, पेड़ों की छाल। असनु(अशन)=भोजन।

दो० ६३ व्याल=साँप। निकर=समूह। भीरु=डरपोक। मानस=मानसरोवर। सुधा=अमृत। प्रतिपाली=रक्षाकीहुई। लवन-पयोधि।=नमक का समुद्र। मराली=हंसिनी। नव=नया। रसाल=आम। विहरनसीला=विहारकरनेवाली। कोकिल=कोयल। करीला=एकप्रकार के कटीले पेड़।

दो० ६४ ललित=सुन्दर। अवनिकुमारी=पृथ्वीकुमारी, सीता। अविनय=ढिठाई। करुणायतन=करुणा के घर। सुजान (सज्ञान)=चतुर। कुमुद=कोंई का फूल। बिधु=चन्द्रमा।

दो० ६५ भगिनी=बहिन। तरनिहु ते ताते=सूर्य से प्रचण्ड कष्टदायक। जमजातना=यम का कष्ट। सरिस (सदृश)=समान। बिधुबदनु=चन्द्रमुख। दुकूल=साड़ी। सुरसदन=देवों का घर। परनसाला (पर्णशाला)=पत्तों की झोंपड़ी।

दो० ६६ सारा=आदर सत्कार, सँभाल। किसलय=पत्ते। साथरी=चटाई। मनोज=कामदेव। तुराई (तलाई)=गद्दा। अमिअ=अमृत। सौध=महल। कोकी=चकई। परिताप=दुःख। लगि=तक। निधान=खजाना।

दो० ६७ हारी=थकावट। मारग जनित (मार्ग जनित)=रास्ते का उत्पन्न। पाय=पैर। पखारि (प्रक्षाल्य)=धोकर। तरु=वृक्ष। बाउ=वायु। श्रमकन (श्रमकण)=पसीने की बूँदें। पेखें=देखे। डासी=बिछाकर। पलोटहिं=पाँव चाँपना, दबाना। जोही=देखकर। तात (तप्त)=गर्म। बयारि=हवा। सिंघबधुहि (सिंह-बधू)=सिंहनी को। ससक (शशक)=खरगोश। सिआर (शृगाल)=गीदड़। बिलगान=फटा। बिषम=कठिन। पाँवर (पामर)=नीच।

दो० ६८ आसिष=आशीष। सुघरी=शुभघड़ी। बच्छ (वत्स)=प्रिय। निरखिहउँ=देखूँगी। गात (गात्र)=शरीर।

दो० ६९ कातरि=दुःखी। प्रबोधु=समझाना। छोभु (क्षोभ)=दुःख। छोहू=स्नेह। अहिवातु=सौभाग्य। पदुम (पद्म)=कमल।

दो० ७० सनीरा=आँसूयुक्त। सिरान=समाप्त। काह=क्या। कदराहू=कायर बनो। नतरु=अन्यथा, नहीं तो। जायँ=व्यर्थ।

दो० ७१ राउ=राजा। सिअरें=शीतल। परसत (स्पर्श)=छूते ही। तुहिन=बर्फ। तामरसु (तामरस)=कमल। बसाइ=वश।

दो० ७२ सिख=शिक्षा। नीकि=भली। कदराई=कायरता से। नरबर=श्रेष्ठ मनुष्य। मदरु=मन्दराचल पर्वत। मेरु=सुमेरु पर्वत।

मराला=हंस । पतिआहू=विश्वास करो । सगाई=सम्बन्ध । भूति=ऐश्वर्य । बिनीत=नम्रता पूर्ण । सभीत=डरे हुए ।

दो० ७३ दव=जंगल की आग । कुदाउ=धोखा, घात ।

दो० ७४ सखा=मित्र । भाजनु=पात्र । ठाँउँ=स्थान ।

दो० ७५ नतरु=नहीं तो । बाँझ (वन्ध्या)=बिना सन्तति की स्त्री । बादि= व्यर्थ । बिआनी=बच्चा पैदा किया । रागु=प्रेम । रोष=क्रोध । इरिषा (ईर्ष्या)=डाह, जलन । मद=अभिमान । मोहू=अज्ञान । बिकार=बुराई । बिहाई=छोडकर । सुपासू=सुविधा । स्मरण= याद । रति=प्रेम । अबिरल=लगातार । अमल=निर्मल । संकित (शकित)=डरे हुए । बागुर=बाँधने वाली रस्सी, फंदा । तोराई =तोडकर । भागवस=भाग्य से ।

दो० ७६ कृस (कृश)=दुबला । कर=हाथ । मीजहिं=मलते हैं । बिहग= पत्ती ।

दो० ७७ जनित=उत्पन्न । बिसमउ (विस्मय)=दुःख । कत=क्यों । प्रमादू (प्रमाद)=आलस्य । अपवादू=निन्दा ।

दो० ७८ बिषम=दुःखदायी । सोहानि=अच्छा लगना ।

दो० ७६ तमकि=क्रोध करके । भाजन=पात्र । भीरा=अधिक । पयान (प्रयाण)=यात्रा । जनक=पिता । बनिता=स्त्री । अचेत= वेहोश ।

दो० ८० दव=आग । दाढे=जले हुए । बरषासन(वर्षाशन)=वर्ष भर का भोजन । जाचक (याचक)=माँगने वाले । परितोषे=सन्तुष्टकिये । जुगपानी (युगपाणि)=दोनों हाथ । परमप्रवीन=अत्यन्त चतुर ।

दो० ८१ पदपदुम=(पादपद्म)=चरणकमल । गिरीसु=शंकर जी । आरतनादू (आर्त्तनाद)=दुःख के शब्द । कुसगुन=बुरे शकुन । लक=लका में । सुठि (सुष्ठु)=सुन्दर ।

दो०८२ सत्यसध=सत्य प्रतिज्ञ। सँदेसु=सन्देश। कदम्बा=समूह। अवलम्बा=सहारा। रजायसु=आज्ञा।

दो० ८३ मसान=श्मशान। बिटप=वृक्ष। सरित=नदी। सरोवर=तालाब। हय=घोडे। गय=हाथी। पिक=कोयल। रथाग=चकवा। सारिका=मैना।

दो० ८४ सफल=फलयुक्त। गह्वर=घना। दव=आग। दुसह=कठिन। सदन=घर।

दो० ८५ असमजस=दुविधा। भे=हुए। मोई=प्रभावित की। जाम (याम)=पहर। जुग (युग)=दो। जामिनि (यामिनी)=रात। खोज=गाड़ी की लीक। जान (यान)=सवारी। इतउत=इधर-उधर। दुराई=छिपाकर।

दो० ८६ वारिनिधि=समुद्र। बूड़=डूबना। बनिक=व्यापारी। धिग=धिक्कार। बिहीना=बिना। प्रलाप=रोना। परितापा=दुःख। अवधि=समय। कोक, कोकी=चकवा, चकई। तमारि=सूर्य।

दो० ८७ देवसरि=गगा। मुद=प्रसन्नता। सूला (शूल)=कष्ट। बिबुधनदी=देवनदी (गंगा)। सच्चिदानन्दमय=सत् चित् आनन्दमय, सत्य, ज्ञान, आनन्दयुक्त। भानुकुल=सूर्यवश। केतु=पताका। ससृति=ससार।

दो० ८८ भारा=काँवर, बहँगी। पंकज=कमल। भागभाजन=भाग्य के पात्र। जन=भक्त। धामु=भवन। थापिय=प्रतिष्ठित कीजिये। सिहाऊ=सिहाना, जिसे फारसी में हसद कहते हैं। आना=अन्य, दूसरा।

दो० ८९ भल=अच्छा। लोयन=लोचन। लाहु=लाभ। सिंसुपा=अशोक। जोहारु=प्रार्थना। सिधाये=गये। साथरी=चटाई। डसाई=बिछाई। कुस=कुश। किसलयमय=पत्तोंयुक्त। दोना=पत्रपुट, पत्तों का गोल पात्र। पलोटत=चाँपना, दबाना।

दो० ६० सरासन (शरासन)=धनुष। पाहरू=पहरेदार। प्रतीती=विश्वास-पात्र। कटि=कमर। भाथी=तरकस। चाप=धनुष। पुलकित=रोमाञ्चित। सन=से। सुरपति=इन्द्र। मनिमय=मणियुक्त। चारु=सुन्दर। चौबारे=बैठक। रतिपति=कामदेव। सुपास=सुविधा।

दो० ६१ बिबिध=अनेक। उपधान=तकिया। छीर (क्षीर)=दूध। बिसद (विशद)=स्वच्छ। रति=कामदेव की स्त्री। मनोज=कामदेव। मदु=अभिमान। श्रमित=थके हुए। जोए=देखे। जोगवहिं=रक्षा करते हैं। नाईं=तरह। महि=पृथ्वी। सुरेस (सुरेश)=इन्द्र। सखा=मित्र। बैदेही=सीता। बाम=प्रतिकूल, टेढ़ा। केही=किसको। जोगू=योग्य। मदमति=मूर्ख।

दो० ६२ दिनकरकुल=सूर्यवंश। बिटप=वृक्ष। कुठारी=कुल्हाड़ी। मंदा=बुरा। हित=मित्र। अनहित=शत्रु। मध्यम=तटस्थ। भ्रम फंदा=भ्रम का जाल। परमारथ=परमार्थ, मोक्ष। रंकु=निर्धन। नाकपति=स्वर्गपति, इन्द्र। प्रपंचु=संसार। जोई=देखो।

दो० ६३ काहुहि=किसी को। बादि=व्यर्थ। जामिनि=रात। जोगी (योगी)=मन को एकाग्र करने वाला। परमारथी=परमार्थी। प्रपंच बियोगी=सांसारिक माया से विरक्त। जागा=चैतन्य हुआ। बिबेक=ज्ञान। अबिगत=जाना न जा सके। अलख=जो दिखाई न दे। अनादि=जिसका आदि न हो। अनूपा=विलक्षण। भूसुर=ब्राह्मण। सुरभि=गाय। सुर=देव। जाल=माया।

दो० ६४ परिहरि=छोड़ो। मोहू=अज्ञान। रत=लीन। भिनुसारा=सवेरा। सौच (शौच)=पवित्रता। बटछीर=बरगद का दूध। मलीना=उदास। अन्हवाई=स्नान कराकर। ससय(सशय)=सन्देह। निबेरी=हटाकर।

दो० ६५ जाते=जिससे। प्रबोधा=समझाया। सोधा=शोधन किया। आगम निगम=वेद शास्त्र। संभावित=प्रतिष्ठित। पातकु=पाप।

लहऊँ=पाँऊगा। गहि=पकड़कर। नति=नम्रता।

दो० ९६ अतिहित=अत्यन्त हितकारी। सपरिजन=कुटुम्ब के साथ। वरजे (वर्जित)=रोके। विपिन=वन। करनीया (करणीय)=करना चाहिये। निपट=अत्यन्त। विपति विहान=विपत्ति का सवेरा अर्थात् विपत्ति से छुटकारा।

दो० ९७ आरति=दीनता। खभारु=कष्ट। छेकी=रोक कर। प्रभा=चमक। गिरा=वाणी। बिलगु=बुरा, अनुचित। आरजसुत=आर्यसुत, पति। बादि=व्यर्थ।

दो० ९८ वैभव=ऐश्वर्य। विलास=सुख सामग्री। डीठा=देखा। मणि=श्रेष्ठ। चक्कवइ=चक्रवर्त्ती। सुरपति=इन्द्र। अरध(अर्ध)=आधा। एतादृस(एतादृश)=ऐसे। पद पदुम परागा=चरण कमलों की धूल। करि=हाथी। केहरि [केशरी] सिंह। सर=तालाब। सरित=नदी। कुरंग=हरिण। विहगा=पक्षी।

दो० ९९ भाथा=तरकस। फनि (फणी)=साँप। प्रबोध=समझाना। जतन [यत्न]=उपाय। रजाई=आज्ञा। बनिक=बनियाँ। मूर=मूलधन। गँवाई=खोकर। हय=घोड़े। सीस=शीश, सिर।

दो० १०० जासु=जिसके। मरमु [मर्म]=भेद, रहस्य। रज=धूल। मूरि=बूटी। पाहन (पाषाण)=पत्थर। तरनिउ (तरणी)=नाव भी। घरनी [गृहिणी]=स्त्री। बाटा=घाटा। प्रतिपालउँ=पालन करता हूँ। कबारू=कारबार। गा=जाना। पदुम [पद्म]=कमल। पखारन [प्रक्षालन]=धोना। उतराई=खेवा। राउरि=आप की। साची=सत्य। वरु=भले ही। बैन=वचन। प्रेम-लपेटे=प्रेम परिपूर्ण। अटपटे=विलक्षण। करुनाऐन (करुणा-अयन]=करुणा के घर। चितइ=देखकर।

दो० १०१ बेगि=शीघ्र। पखारु=धोओ। निहोरा=प्रार्थना करना। देवसरि=गंगा। करषी=खिंचगई। कठवता=काठ का वर्तन। सरोज=कमल। पुंज=समूह।

दो० १०२ हिय=हृदय। मुदरी [मुद्रिका]=अँगूठी। दावा=आग, जलन। मजूरी=मजदूरी। आजु दीन्ह विधि बनि भलि भूरी=आज विधाता ने भली और पूरी मजदूरी दी है। वरु=वरदान।

दो० १०३ पारथिव [पार्थिव]=मिट्टी के शिव बनाकर पूजे जाते हैं, उन्हें पार्थिव कहते हैं। पुरउबि=पूरा कीजिएगा। बरबानी=श्रेष्ठ वाणी। लोकप=लोकपाल। बिलोकत=देखते ही। सिधि=सिद्धि। बागीसा=वाणी, सरस्वती। कोसला(कोशल] अयोध्या।

दो० १०४ रजाई=आज्ञा। हुलासू=उल्लास, प्रसन्नता। ग्याति=जाति, वंश। गनपति=गणेश। अनुज=छोटाभाई।

दो० १०५ बिटप=वृक्ष। तर=नीचे। सुपासू=सुविधा। तीरथुराज (तीर्थ-राज]=प्रयाग। माधव=वेणीमाधव [प्रयागराज के एक प्रसिद्ध देवता]। चारिपदारथ=चारों पदार्थ (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) भँडारू [भडार]=खजाना। चारू [चारु]=सुन्दर। गढ़ु=गढ, किला। प्रतिपच्छिन्ह [प्रतिपक्षी]=शत्रुओं को। सेन=सेना। बरवीरा=श्रेष्टवीर। कलुष=पाप। अनीक=सेना। दलन=नष्ट करना। संगम=गंगा, यमुना और सरस्वती का मिलन-स्थान। सुठि [सुष्ठु]=सुन्दर। छत्रु (छत्र)=छाता। अखय-वट=अक्षयबढ, यह वृक्ष बड़ा ही पवित्र तथा दर्शनीय है। यहाँ साग रूपक है। चँवर=चामर। तरंगा=लहरे। भगा=नष्ट। सुकृती=पुण्यशाली। मनकाम=मन की अभिलाषाये। ग्राम=समूह।

दो० १०६ कलुष=पाप। पुंज=ढेरी। कुंजर=हाथी। मृगराउ=मृगराज, शेर। महातम [माहात्म्य]=महिमा। वेनी=त्रिवेणी। गोचर=इन्द्रियों का विषय। लोचनगोचर=आँखो से दिखाई देना।

दो० १०७ अमी=अमृत। अवधि=सीमा। दूजी=दूसरी। सरसिज=कमल। उपचार=उपाय।

दो० १०८ अघाने=तृप्त। नवहीं=नम्र होते हैं। वचनअगोचर=वाणी-

से परे। बटु=ब्रह्मचारी। तापस=तपस्वी। उदासी=उदासीन, तटस्थ। सुअन=पुत्र। लोयन=लोचन।

दो० १०९ पचासक=लगभग पचास। मनकाम=मन की इच्छा।

दो० ११० बिसारी=छोड़कर। बयबिरिध=आयु में बृद्ध। जुगुति (युक्ति)=उपाय। तेजपुंज=तेज का समूह। लघुबयस=छोटी आयु का। अलखित (अलक्षित)=जो देखा न जा सके।

दो० १११ रंक=निर्धन। पारस=एक बहुमूल्य पत्थर। नयनपुट=आँख रूपी दोना। पियूषा=अमृत। सुअसन (सुअशन)=स्वादिष्ट भोजन।

दो० ११२ बहोरी=फिर। रबितनुजा=यमुना। लखन (लक्षण)=चिह्न। पयादेहि=पैदल ही। भाएँ=भाव से। अगमु=कठिन। गात (गात्र)=शरीर।

दो० ११३ घरी=घडी, समय। अमरावति=कुवेर की नगरी। पुन्य पुंज=पुण्यका समूह। अवगाहहिं=स्नान करते हैं। पद-पदुम-परागा =चरण कमलों की धूल। भूरि=अत्यन्त। घन=बादल। बिबुधगन=देवसमूह।

दो० ११४ निकसहिं=निकलते हैं। डासि=बिछाकर। गवाँइअ=बिताइये। छिनुकु=क्षण भर। गवनब=जाइयेगा।

दो० ११५ आनहिं=लाते हैं। अँचइअ (आचमन)=कुल्ला कीजिए। श्रमित=थका हुआ। घरिक=एक घड़ी। अनूप=विलक्षण। तमाल=एक वृक्ष जो कालेरंग का होता है, जिसे आवनूस भी कहते हैं। मदन=कामदेव। दामिनि=बिजली। नीके=भले। तूनीरा(तूणीर)=तरकस। सुभग=सुन्दर। बर=श्रेष्ठ। स्वेद=पसीना

दो० ११६ अबिनय=धृष्टता, ढिठाई। बिलगु=बुरा। दुति(द्युति)=कान्ति। मरकत=एक मणि है, जो हरे रंग का होता है। सुषमा=शोभा। ऐन(अयन]=घर। सर्वरीनाथ(शर्वरीनाथ)शर्वरी=

रात्रि, नाथ=स्वामी=चन्द्रमा । सरोरुह=कमल ।

दो० ११७ आहिं=हैं । मजुल=सुन्दर । बरबरनी[वरवर्णिनी]=उत्तम स्त्री । बाँकी=टेढ़ी । खंजन=एक पक्षी । सयननि=सकेत से । ग्राम-बधूटी=गाँव की स्त्रियाँ । रकन्ह=निर्धन को । राय=राजा । रासि (राशि)=ढेरी । अहि=शेषनाग ।

दो० ११८ छोहू=प्रेम । बहोरी=फिर । कुमुदिनी=कोई । कौमुदी=चाँदनी । पोषी=पोषण करना । रुख=इच्छा । विलोचन=आँख । मलीन =दुःखी । बिधि=विधाता । निधि=खजाना । सोधि (शोध)= खोजकर, सोचकर ।

दो० ११९ दैअहि=दैव को । निपट=अत्यन्त । निरकुस(निरकुश)=मनमान निसंकू (निश्शंक)=निडर । ससि(शशि)=चन्द्रमा । सरुज=रोगी सकलकू=कलंक सहित । रूख=वृक्ष । पदत्राण=जूते । बाहन =सवारी । डासि=बिछाकर । सुभग=सुन्दर । कत=क्यों । सृजत =रचता है । जटिल=जटावाले । करतार=ईश्वर ।

दो० १२० असन (अशन)=भोजन । पटतर=बराबरी, तुलना । दुराए= छिपाये ।

दो० १२१ परसत=छूते ही । अरुनारे=लाल । सुमनमय=फूलयुक्त । समरथ (समर्थ)=शक्तिशाली ।

दो० १२२ कैरव=कुमुद । जाए=पैदा किए । सैलु(शैल)=पर्वत । बिरचि =ब्रह्मा । पथि=रास्ते में । रबि=सूर्य । विपिन=वन । सौमित्रि= लक्ष्मण ।

दो० १२३ उभय=दो । छबि=शोभा । मधु=वसन्त । मदन=कामदेव । रति=कामदेव की स्त्री । बिधु=चन्द्रमा । रोहिनि=रोहिणी । पदअक=चरण चिह्न । बराये=बचाकर । बचनअगोचर=वाणी से परे । बटोही=राहगीर । भव=ससार । सिराइ=पार करना ।

दो० १२४ अजहुँ=अबभी । रामधाम=स्वर्ग । श्रमित=थके हुए । सर=

तालाब । पावन=पवित्र । सरनि=तालाबों में । बिटप=वृक्ष । मजु=सुन्दर । मधुप=भौंरा । बिपुल=बहुत । निरखि=देखकर । राजिवनेन (राजीवनयन)=कमलनयन,राम ।

दो० १२५ छबि=शोभा । त्रिकालदरसी=-तीनों काल, भूत, वर्तमान, भविष्य के जानने वाले । कर बदर=बेर का फल, जैसे हाथ में बेर का फल सुगमता से देखा जा सकता है , वैसे ही त्रिकाल दर्शी वाल्मीकि के लिए यह सारा ससार है । तात=पिता । प्रिय, भाई, श्रेष्ठ अर्थों में भी यह शब्द आता है ।

दो० १२६ सुकृत=पुण्य । उदवेगु(उद्वेग)=अशान्ति । पावक=आग । रोषू=क्रोध । साला (शाला)=घर, झोंपड़ी । सृजति=रचती है । हरति=नाश करती है । रुख=इशारा । सहससीसु(सहस्र शीर्ष)=हजार सिर वाले । अहीसु=शेषनाग । महिधरु=पृथ्वी को धारण करने वाले । सचराचर=जड़चेतनात्मक ससार । अनी=सेना । बचनअगोचर=वाणी से परे । अबिगत=जो जाना न जा सके । नेति नेति=जिसका अन्त न हो । निगम=वेद ।

दो० १२७ पेखन (प्रेक्षण)=देखने योग्य । बिधि=ब्रह्मा । मरमु=भेद । चिदानंदमय=चित्, आनन्दमय, ज्ञान तथा आनन्द युक्त । बिगतबिकार=विकार रहित । प्राकृत=साधारण । जड़=मूर्ख बुध=ज्ञानी, पडित । ठाऊँ=स्थान ।

दो० १२८ अमिअ=अमृत । बोरी=डुबाई हुई । निकेता=घर । रूरे=सुन्दर । चातक=पपीहा । जलधर=बादल । निदरहिं=निरादर करें सरित=नदी । सिंधु=समुद्र । बिमल=निर्मल । जीहा=जिह्वा, जीभ । मुकताहल=मुक्ताफल, मोती ।

दो० १२९ प्रसाद=कृपा, भोजन । सुभग=सुन्दर । नासा=नाक । निवेदित =निवेदन कर, समर्पण कर । सुर=देवता । द्विज=ब्राह्मण ।

तरपन=तर्पण, पितरों को जल देना । जेवाईं=भोजन कराना । रति=प्रेम ।

दो० १३० काम=इच्छा । मद=घमंड । मान=प्रतिष्ठा । लोभ=लालच । राग=प्रेम । दंभ=डाह । सरिस(सदृश)=समान । पराव=पराया ।

दो० १३१ लीका=मार्ग । अपबरगु(अपवर्ग)=मोक्ष । राउर=आपका । चेरा=दास

दो० १३२ सुपासू=सुविधा,आराम । सैल[शैल]=पर्वत । चारू=सुन्दर । केहरि[केशरी]=सिंह । बिहग=पक्षी । पुनीत=पवित्र । जो सब पातक पोतक डाकिनि=पातक=पाप, पोतक=बच्चे, जो सब पाप रूपी बच्चों को नष्ट करने के लिए डाकिनी (पिशाचिनी) के समान है । गौरव=बड़प्पन । अमित= अपरिमित, बेहद ।

दो० १३३ ठाहरठाट=ठहरने की तैयारी । पय=जल । करारा=किनारा । पनच (प्रत्यञ्चा)=डोरी । सर (शर)=बाण । दम= इन्द्रियों का दमन करना । कलुष=पाप । कलि=कलियुग । साउज=शिकार । अचल=निश्चल । अहेरी=शिकारी । चुकइ न घात मार मुठ भेरी=मुट्ठी मजबूत कर ऐसा मारना कि घात खाली न जाये । मंजु=सुन्दर । ललित=सुन्दर । राजत=शोभा देना । रुचिर=सुन्दर । मदनु=कामदेव । उत्प्रेक्षालंकार ।

दो० १३४ अमर=देवता । नाग, किन्नर=देवताओं के एक भेद । मुदित =प्रसन्न । लहि=पाकर । जाग [याग]=यज्ञ । सुछंद= स्वच्छन्द ।

दो० १३५ रक=निर्धन । अपर=दूसरा । निकाई=अच्छाई । भाग= भाग्य ।

दो० १३६ धारा=धारण किया। करि=हाथी। केहरि=सिंह। अहि=साप। बाघ(व्याघ्र)=लकड़ बग्घा। अहेर=शिकार। निरझर [निर्झर]=झरने। करुनाऐन [करुणाअयन]=करुणा के घर। बैन=वचन।

दो० १३७ तोषे=सन्तुष्ट किए। विपट=वृक्ष। मजु=सुन्दर। वलित=ढके हुए। विबुधवन=देवबन। परिहरि=छोड़कर। मजुतर=अत्यन्त सुन्दर। त्रिबिध=तीन प्रकार की हवा शीतल, मन्द, सुगन्ध। बयारि=हवा। नीलकठ=एक पक्षी, जिसके गले में हरे रग की धारी होती है। कलकठ=कोयल। सुक [शुक]=तोता।

दो० १३८ कपि=बानर। कोल=सूअर। कुरग=मृग,हरिण। बिगतबैर बैररहित। अहेर=शिकार। बिबुधविपिन=देवताओं के वन। सुरसरि=गगा। सरसइ=सरस्वती। दिनकरकन्या=यमुना। मेकलसुता=नर्मदा। धन्या=एक नदी का नाम। मदर=मंदराचल। मेरु=सुमेरु। बिंधि=विन्ध्याचल। बिपुल=अधिक।

दो० १३९ नयनवत=आँखोंवाले। बिसोकी=शोकरहित। परसि(स्पर्श] छूकर। चरनरज=चरणोंकी धूल। अचर=जड़। परमपद=मोक्ष। पावन=पवित्र। पयपयोधि=क्षीरसागर। सुषमा=शोभा। सतसहस[शतसहस्र]=सौहजार। सहसानन=शेषनाग। डाबर=छोटा पानीका गड्ढा। कमठ=कछुआ।

दो० १४० परिजन=कुटुम्बी। बिधुबदनु=चन्द्रमुख। कोकी=चकई। कुरग=हरिण। विहगा=पक्षी। अमिअ=अमृत। साथरी=चटाई। मयन[मदन]=कामदेव।

दो० १४१ बासव=इन्द्र। अमरपुर=स्वर्ग। सची[शची]=इन्द्राणी। जयत=इन्द्रका पुत्र।

दो० १४२ जोगवहि=रक्षा करतेहैं। बिलोचन=आँख। गोलक=आँखका गोला। अविवेकी=अज्ञानी। बिषादू=दुःख। धरनितल= पृथ्वी पर। हय=घोडे। बिहग=पक्षी। मोचहिं=छोड़ते हैं। वाजि=घोडे।

दो० १४३ परिहरहु=छोड़ो। बिषादू=दुःख। चरफराहिं=तडपना। अढुकि=आगे को झुक जाना, गिरपड़ना। तीछे=तीक्ष्ण। वाजि=घोडे। फनिक=साप। तुरंग=घोडे।

दो० १४४ अधम=नीच। भाजन=पात्र। पयाना(प्रयाण)यात्रा। बिरिद पदवी। सुभट=वीर। वेदबिद=बेद को जानने वाला। संमत =-प्रसिद्ध। सुजाति=उत्तम जाति। मदपान=शराब पीना।

दो० १४५ कुलीन=श्रेष्ठकुल की, खानदानी। तिय=स्त्री। श्रवन= कान। लाटी=पपड़ी। अवधि=समय। कपाटी=दरवाजा, किवाड। जिउ न जाइउर अवधि कपाटी=चौदह वर्ष के समय रूपी किवाड से हृदय वन्द रहा,अतः प्राण नहीं निकल पाते। बिबरन(विवर्ण)=फीका। बिपुल=बहुत।

दो० १४६ बच्छु(वत्स)=बछड़ा। लवाई=जब गाये बछडे को यादकर स्तनों मे दूध भर लाती हैं तो उसे लवाई(पेन्हाना) कहते हैं। बिदरेउ=विदीर्ण, फटना। जातना(यातना)=पीडा। सुमन्त्र कहते हैं :- कि अपने प्रिय जल के सूखते ही उसके वियोग में पंक (कीचड)अपने हृदय को विदीर्ण कर देता है, पर प्रिय राम के अलग होते मेरा हृदय न फटा, इससे प्रतीत होता है कि मुझे और भी कठिन कष्ट सहने पड़ेगें।

दो० १४७ आतप=धूप। ओरे=ओले। गरहिं गात जिमि आतप ओरे= राम के बिना खाली रथ देख कर अयोध्यावासियों का शरीर दुःख के मारे ऐसे गलने लगा, जैसे गर्मी पाकर ओले गल जाते हैं। निघटत=घटना।

दो० १४८ आरति=दुःखी। बूझा=पूछा। अमिअ=अमृत। उसासु=

उच्छ्वास=दुःख की लम्बी साँस। खँसेउ=गिरना।

दो० १४६ हँरासू (ह्रास)=शोक। सतिभाउ (सत्यभाव)=सच्चे भाव।

दो० १५० सुअन=पुत्र। बरबस=विवश होकर। जड़=मूर्ख।
विवेक=ज्ञान।

दो० १५१ जामिनि=रात। सिंगरौर=शृंगवेरपुर। यह गाँव प्रयाग के पास अब भी सिंगरौर नाम से प्रसिद्ध है। बट=बरगद। छीरु[क्षीर]=दूध। पकज=कमल। गहेहू=पकड़ना। जतन [यत्न]=उपाय।

दो० १५२ परिजन=कुटुम्बी। सेएहु=सेवा करो। बरजि=रोककर। पल्लवित=रोमाञ्चित।

दो० १५३ कुलिस (कुलिश)=वज्र। तलफत=तड़पना। मापा=फैल गया। माजा=पहले बरसात का फेन वाला जहरीला पानी, जिसे पीकर मछलियाँ बेहोश हो जाती हैं।

दो० १५४ ब्यालू(व्याल)=साँप। सरसिज=कमल। अँथयउ=अस्त होना, डूबना। पयोधि=समुद्र।

दो० १५५ सिराति=बीतना। परिहरि=छोड़कर।

दो० १५६ अंड=ब्रह्माण्ड। अमल=निर्मल। नेवारेउ (निवारण)=दूर कीजिए।

दो० १५७ धावहु=दौड़ो। धावन=दूत। बाजि=घोड़े। अरभेउ=आरम्भ हुआ। अनुसासन (अनुशासन)=आज्ञा। श्रवन=कान।

दो० १५८ समीर=वायु। हय=घोड़े। नाघत=लाँघते। निमेष=पलक गिरने का समय। कुखेत(कुक्षेत्र)=बुरे स्थान। करारा=कौवे खर=गदहा। सिआर(शृगाल)=गीदड़। श्रीहत=शोभारहित। गय=हाथी। जाए=देखे। बिगोये=नष्ट। गँवहि=धीरे से।

दो० १५९ हाट=बाजार। बाट=रास्ता। दहँ=दसों। दवारी=आग। रविकुल=सूर्यवंश। जलरुह=कमल। हरषी. चन्दिनि=सूर्यवंश रूपी कमल के लिए चाँदनी रूपी कैकेयी प्रसन्न हुई। तुहिन=

वर्फ । वनज=कमल । दव=आग ।

दो० १६० केहरि (केशरी)=सिंह । नादा=गर्जना । पाँछि=ऊपर से काटकर, तराशना । माहुर=जहर । बिसरेउ(विस्मरण)=भूलना । गौनु(गमन)=जाना ।

दो० १६१ लोन(लवण)=नमक । बिढ़इ=बढ़ना । सुकृत=पुण्य । अमरपति=इन्द्र । सिधाए=गये । पाकेंछत=पका घाव । जनमत=पैदा होते ही । पालउ (पल्लव)=पत्ता । हसबसु=सूर्यवंश । जनकु=पिता ।

दो० १६२ गरि=गल जाना । प्रतीति=विश्वास । अघ=पाप । रत=लीन । तीय=स्त्री । अहसि=हो । जो हसि सो हसि=जो हो,सो हो । मसि=स्याही,कालिख । पातकी=पापी । बादि=व्यर्थ ।

दो० १६३ रिस=क्रोध । बिबिध=अनेक प्रकार । बरत=जलते हुए । अनल=आग । हुमकि=जोर से 'हुं, करके । तकि=देखकर । दलित=टूटना,नष्ट । दसन=दाँत । प्रचारू=प्रवाह । नीक=अच्छा । अनइस=बुरा । बिबरन (विवर्ण)=फीका । कृस (कृश)=दुबला । कनक=सुवर्ण । तुसार (तुषार)=वर्फ ।

दो० १६४ अवनि=पृथ्वी । झईं=बेहोशी । कत=क्यों । बाँझा(वन्ध्या)=सन्तानहीन । अनरथ (अनर्थ)=बुराई । वेनु=बाँस । मोचति=गिराना ।

दो० १६५ बच्छ=वत्स । बिसमउ=दुःख । चीर=वस्त्र ।

दो० १६६ रंग=राग,हर्ष । परितोषू=सन्तोष । बिपिन=बन । जतन (यत्न)=उपाय । कुलिस=वज्र ।

दो० १६७ जुग(युग)=दोनों । पानी(पाणि)=हाथ । अघ=पाप । गोठ(गोष्ठ)=गौ बाँधनेका स्थान । मीत=मित्र । माहुर=जहर । भव=संसार

दो० १६८ बेंचहिं वेदु धरमु दुहि लेहीं=जो अनधिकारी को वेदका ज्ञान

देवे तथा धर्म के नाम पर लोगों को ठगे। पिसुन (पिशुन) =चुगुलखोर। पराय=दूसरा। विदूषक=निन्दक। ताकहिं= देखते हैं। परधनु=दूसरे का धन। परदारा=पराई स्त्री। वचक=ठग। भेऊ=भेद।

दो० १६९ चवै=टपकावे। स्रवै= बहना। हिमु=बर्फ। पय=दूध। सुदेसे =सामयिक।

दो० १७० बिमानु=अरथी, शव ले जाने के लिए। सोपान=सीढ़ी।

दो० १७१ परिहरि=छोड़कर। अपजसु=कलक।

दो० १७२ बयसु=वैश्य। अवमानी=निरादर करने वाला। मुखर=अधिक अनावश्यक बोलने वाला। गुमानी=अभिमानी। वचक=ठग बटु=ब्रह्मचारी। जती (यति)=सन्यासी। प्रपच=सांसारिक मायाजाल। रत=लीन।

दो० १७३ बैखानस=वानप्रस्थ। पिशुन=चुगुलखोर। सुअन=पुत्र।

दो० १७४ बादि=व्यर्थ। फुर=सत्य। प्रवाना=प्रमाणित, सिद्ध। ऐन (अयन)=घर।

दो० १७५ परितोषू=सन्तोष। सुकृत=पुण्य। गलानी (ग्लानि)=दुःख। लहब=पायेंगे। बहोरि=फिर।

दो० १७६ पथ्य=हितकारी। कदराहू=कायरता दिखाओ। परिजन=कुटुम्बी। सरोरुह=कमल। सींवँ=सीमा। अमिअँ=अमृत। बोरि=डुबाकर।

दो० १७७ नीका=भला।

दो० १७८ बिरति=वैराग्य। सरुज=रोगी। जायँ=व्यर्थ। आँक=अकन, निश्चय। गतलाज=निर्लज।

दो० १७९ पतिआहू=विश्वास करो। रसा=पृथ्वी। सठु (शठ)=दुष्ट।

अवासू=आवास, निवासस्थान। रूखे=रुक्ष। विषय रसरूखे=विषय वासनाओं से अलग। कुलिस=वज्र। अस्थि=हड्डी। उपल=पत्थर।

दो० १८० भव=उत्पन्न। पावँर=पामर, नीच। ग्रह ग्रहीत=राहु केतु आदि ग्रहों से ग्रसित। बातबस=वात का रोगी। बीछी=बिच्छू। बारुनी=शराब। उपचार=औषधि।

दो० १८१ अदिनु=बुरेदिन। सुठि=भली।

दो० १८२ कर बदर समाना=हाथ में रखे बेर के फल के समान। पोचू=नीच। जरनि=ज्वाला, पीडा।

दो० १८३ उपाधी=अनर्थ। अरिहुक=शत्रु का भी। बामा=टेढा।

दो० १८४ पागे=सने हुए। आही=है। सुगाइ=सन्देह करे। गरल=विष। अवलंबनु=सहारा।

दो० १८५ घन=बादल। निरनउ=निर्णय। साजू=सामान, तैयारी। सदन=घर। सहस (सहस्र)=हजार।

दो० १८६ पयाना=प्रयाण, यात्रा। जान=यान, सवारी।

दो० १८७ चक्क चक्कि=चकवा, चकई। आरत=आर्त, दुःख। तुरग=घोड़े। नाग=हाथी। अरुधती=वशिष्ठ मुनि की स्त्री का नाम था। समाऊ=सामग्री। सिबिका=शिविका, पालकी।

दो० १८८ करि=हाथी। करिनि(करिणी)=हथिनी। तकि=देखकर। बारी [वारि]=जल। पयादेहिं=पैदलही। हय=घोड़े। गय(गज)=हाथी। कस[कृश]=दुर्बल। पय=दूध, जल। असन[अशन]=भोजन।

दो० १८९ कटकाई=सेना। अमिअ=अमृत। हथवाँसहु=हस्तगत करो, कब्जे में करो। बोरहु=डुबादो। तरनि=नौका। घाटारोहु=घाटावरोध, घाटरोकना।

दो० १९० सँजोइल=सजग, सगठित। मीचू=मृत्यु रारी=युद्ध। धवलिहउँ=उज्वल करूँगा। मोदक=लड्डू। लेखा=गणना। जॉय=व्यर्थ।

बिटप=वृक्ष । सनहु (सन्नाह)=कवच ।

दो० १६१ रजाइ=आज्ञा । कदराइ=कायरता । करषा=जोश,उत्साह पनही [उपानह]=जूता । भाथी=तरकस । अँगरी=कवच,अंगरक्षक । फूँडि = लोहे का टोप । सेल=भाला । खाँड़े(खड्ग)=तलवार । छिति (क्षिति)=पृथ्वी । राउतहि=श्रेष्ठ को (अवधी तथा भोज पुरी में बूढ़े, श्रेष्ठ को राउत कहा जाता है)

दो० १६२ कटकु=सेना । मेदिनि=पृथ्वी । सगुनिअन्ह=शकुन जानने वाले । खेत=क्षेत्र, लड़ाई । बिग्रहु=युद्ध । बिमूढ़ा= मूर्ख । मरम=भेद । मध्यगति=तटस्थभाव ।

दो० १६३ दुरइँ=छिपना । पीन=मोटी । पाठीन=पेहना मछली । संदनु(स्यन्दन)=रथ ।

दो० १६४ सींचा=सिंचन,पानी छिड़कना । अंक=गोद । जमुहाईं= तन्द्रा, अंगड़ाई लेना । पुंज=ढेरी । करमनास=एक नदी का नाम , जिसे अपवित्र मानते हैं । स्वपच=चाण्डाल । सबर (शबर)=एक जंगली जाति । जड़=मूर्ख । पावँर= पामर, नीच ।

दो० १६५ अचिरिजु=आश्चर्य । पेखी=देखकर । जोइ=देखकर ।

दो० १६६ सय=शत, सौ । सनकारे=इशारे से कहना । रुख=संकेत, इशारा ।

दो० १६७ रेनू=रेणु, रेत । सुरधेनू=कामधेनु । अनुसासन=आज्ञा ।

दो० १६८ सोधु=शोध, खोज । नेकु=थोड़ा । कोए=कोना । सिंसुपा= अशोक ।

दो० १६९ साँथरी=चटाई । प्रदच्छिन (प्रदक्षिणा)=चारो ओर घूमकर प्रणाम करना । रज=धूलि । कनक बिंदु=सीता जी की

साड़ी, गहने के सुनहले बुन्दे । पटतर=बराबरी, उपमा पबि=बज्र ।

दो० २०० लोने (लावण्य)=अत्यन्त सुन्दर। तात (तप्त)=गर्म। बाउ =बायु। कुलिस (कुलिश)=बज्र । डासि=बिछाकर।

दो० २०१ जोगवइ=रक्षा करना । अघ=पाप । उदधि=समुद्र। सृजेउ=रचा। दोह=द्रोह। बादि=व्यर्थ।
निरजोसु=निचोड़ । रावरी=आपकी । सौं हैं=शपथ। कृपायतन=कृपा के घर।

दो० २०२ परदखिना=प्रदक्षिणा। खोरि=दोष। निकामा=अत्यन्त। गुदारा=खेवा, नावों का चलना।

दो० ३०३ कोतल=घोड़े। डोरिआए=बागडोरसे बँधे। सिधाए= गये। सिरभर=सिर के बल।

दो० २०४ झलका=छाले। पकज=कमल। कोस (कोश)=खोल। सितासित=सित, असित=सफेद, काले=गगा, यमुना। निरबान (निर्वाण)=मोक्ष। रति=प्रेम। आन (अन्य)= दूसरा।

दो० २०५ अनुदिन=प्रतिदिन। जलदु=बादल। सुरति=याद। जाचत=माँगना। पबि=बज्र। पाहन (पाषान)=पत्थर। कनकहिं=सोने को। बान=चमक। दाहें=तपाने से। बेनि=त्रिवेणी।

दो० २०६ वैखानस=वाणप्रस्थ। बटु=ब्रह्मचारी। गृही=गृहस्थ। उदासी=सन्यासी। भजि=भागकर। धूति=विकृत करगई।

दो० २०७ बुध=पण्डित। सूला=पीड़ा। अयानी=अज्ञानी, मूर्ख। अलप (अल्प)=थोड़ा।

दो० २०८ गनेसु=शुभ।

दो० २०६ नव=नया। बिधु=चन्द्रमा। किंकर=सेवक। कुमुद=कोईं,एक फूल जो रात में तालाब मे खिलता है। अँथइहि=अस्त होना। नभ=आकाश। कोक=चकवा। तिलोक=तीनो लोक। पियूष=अमृत। अवमान=अपमान। दूषा=दूषित, कलंकित। अघाहूँ=तृप्त होना। व्यतिरेकालंकार। जहाँ उपमान से उपमेय बढ जाता है।

दो० २१० अनूपा=विलक्षण। सरोरुह=कमल। बैन=वचन।

दो० २११ अकाजू=हानि। पोचू=नीच। पनहीं=जूते। अजिन=मृगचर्म। डासि=बिछाकर। आतप=गर्मी। वात=वायु।

दो० २१२ बासर=दिन। सोधेउँ=ढूँढा। बँसूला=लकड़ी काटने का औजार। कलि=कलह। घालेसि=नष्ट किया। बारह-बाटा=छिन्न भिन्न।

दो० २१३ गरुइ=भारी। गिरा=वाणी। सिष=शिष्य। रिधि सिधि=ऋद्धि, सिद्धि, भण्डारकी देवता।

दो० २१४ रुचिर=सुन्दर। भूरि=अधिक। सपरिजन=सकुटुम्ब। विधि=ब्रह्मा।

दो० २१५ बिरति=वैराग्य। बिताना=चदावा। सुरभि=सुगन्धित। अमी=अमृत। जमी=सयमी। सुरभी=कामधेनु। सची (शची)=इन्द्राणी। त्रिविध=शीतल, मंद, सुगन्ध। बयारी=हवा। स्रक=माला। बनितादिक=स्त्रियाँ आदि। भिनुसार=सवेरा।

दो० २१६ निमज्जनु=स्नान। कर दीन्हें=हाथ मिलाये। पदत्रान=पदरक्षक, जूता। जलद=बादल।

दो० २१७ हेरे=देखे। पयोधि=समुद्र। सोधि=ढूँढकर।

दो० २१८ सहसनयन=सहस्रनयन, इन्द्र । रिसाहिं=क्रोध करते हैं । पावक=आग ।

दो० २१९ सम=समदर्शी । अलेप=निर्लेप । साखी=साक्षी, गवाह । निरत=लीन ।

दो० २२० प्रसून=फूल । कुलिस=वज्र । पषाना=पाषाण,पत्थर ।

दो० २२१ सुपासू=सुविधा । तरनी=नौका । वाहन=सवारी । आछें =अच्छे ।

दो० २२२ बय (वय)=आयु । वपु=शरीर । अनी=सेना । चतुरंगा =चतुरंगिणी सेना (हाथी, घोडा,रथ,पैदल) । तिय=स्त्री ।

दो० २२३ दाहिन=अनुकूल । सिघलवासिन्ह=लंकानिवासियो को । प्राचीन काल मे यातायात की असुविधा से लंकानिवासियों के लिए प्रयाग में आना दुष्कर कार्य था ।

दो० २२४ जती (यति)=सन्यासी ।

दो० २२५ बिह्वल(विह्वल)=आनन्द युक्त । सिरोमनि (शिरोमणि)= श्रेष्ठ ।

सो० २२६ दरके=दलना । ताए=तपाए । पुरारि=शिव ।

दो० २२७ सियरवनू=सीतारमण,राम । थिति=स्थिति । कहे महुँ=आज्ञापालक । खभारू=खलबली,चिन्ता ।

दो० २२८ मरजाद (मर्यादा)=सीमा,नियम । एकाकी=अकेला । बटोरि इकट्ठा करके । बाजि=घोडे । गजालीं=हाथियोंकी पक्ति । जाएँ =व्यर्थ । गुर=बृहस्पति । जान (यान)=सवारी ।

दो० २२९ रिन (ऋण)=कर्ज । रंच=थोडा । मिस=बहाना ।

दो० २३० भाथा=तरकस । करि=हाथी । निकर=समूह । भभरि भगान=गिरते पडते भागना ।

दो० २३१ बुध=पण्डित । दीसा=दिखाई देना। काँजी=एक खट्टा पदार्थ । सीकरनि=बूँदों से। छीरसिंधु=दूध का समुद्र । बिनसाइ=नष्ट होना ।

दो० २३२ तिमिरु=अन्धकार । तरुन=नया। गिलई=निगल जाए। गोपद=गौ के खुर से बना गड्ढा। घटजोनी=अगस्त्य ऋषि । छोनी=पृथ्वी। मेरु=सुमेरु पर्वत। खीरु=क्षीर,दूध। तड़ागा=तालाब। पय=दूध। वारी (वारि)=जल। विबुध=देवता।

दो० २३३ नियोगा=आज्ञा। अनत=अन्यत्र। ठाँउ=स्थान।

दो० २३४ भाजन=पात्र। धोरी=धारण करने वाले । जलअलि=पानी का भौंरा, यह छोटा सा काले रंग का होता है तथा स्वभावतः प्रवाह की ही ओर बढ़ता है ।

दो० २३५ छुधित=भूखा । सुनाजू=उत्तम भोजन । ईतिभीति=खेती के प्राकृतिक शत्रु। त्रिविध ताप=दैहिक,दैविक, भौतिक कष्ट। भ्राजा=शोभा देना। भट=योद्धा। जम=संयम। सुमति=सद्बुद्धि ।

दो० २३६ खेरे=बड़े गाँव के समीप थोड़े घरों का गाँव, जिसे टोला भी कहते हैं। खगहा=गैंडा। करि=हाथी। हरि=सिंह। बराहा=सूअर। महिष=भैंस। बृष=बैल। बयरु=बैर। निसान=नगाड़े। सुक=तोता। पिक=कोयल। मराल=हंस। सिरानें=समाप्त करना। नेमु=नियम।

दो० २३७ पाकरि (पर्कटी)=पिलखन, एक वृक्ष। जंबु=जामुन । रसाल=आम। तमाला=आबनूस, एक वृक्ष है, इस की लकड़ी काली होती है। अबिरल=घना । तिमिर=अंधकार । अरुनमय=लालिमायुक्त । सँकेलि=इकट्ठा करके। पानि=हाथ।

दो० २३८ अंका=चिह्न। रंका=गरीब। अचर=जड। सचर=चेतन। अमिअ=अमृत। मंदरु=मंदराचल।

दो० २३९ सदनु=घर। तून=तरकस। सायकु=बाण। मंजु=सुन्दर।

दो० २४० पाहि=रक्षा करो। गुदरत=छोड़ना। भनई=कहेंगे। चग=पतंग। निषंग=तरकस। अपान=अपनापन।

दो० २४१ अहमिति=अहंभाव। अरथ=अर्थ। आखर=अक्षर। गाँडर=एक प्रकार की मोटी, लम्बी घास।

दो० २४२ ललकि=उत्कण्ठित होकर। सेनप=सेनापति।

दो० २४३ रिपुदवनू=शत्रुघ्न।

दो० २४४ अवलीं=पंक्ति। हिम=बर्फ, पाला। मेई=तर करना।

दो० २४५ अंका=गोद। मूक=गूँगा।

दो० २४६ नलिन=कमल। लोयन=लोचन।

दो० २४७ कुलिस=वज्र। निरंबु=निर्जल।

दो० २४८ तूला=रूई। अंबु=जल। अमरावति=स्वर्ग।

दो० २४९ मारुत=हवा। ओघ=समूह। सरनि=तालाबों में। बिगत=रहित।

दो० २५० परनपुटीं=पत्तों का पात्र, दोना। रूरी=सुन्दर। सुकृती=पुण्यशाली। प्रसादा=कृपा। मरुधरनि=रेगिस्तान। देवधुनि=गंगा। नेवाजा=रक्षक।

सो० २५१ बामन=बर्तन। बसन=वस्त्र। कटि=कमर। लोह लै लौका तिरा...... ......=लोहा नौका को अपने ऊपर लेकर तैर गया। अर्थात् कोल-भीलों ने भगवान् राम को अपने वश में कर लिया। दादुर=मेंढक। पीन=मोटा। पावस=वर्षा ऋतु।

दो० २५२ अवनि=पृथ्वी। जमहि=यमराज को। वीचु=स्थान, फटना। मीचु=मृत्यु।

दो० २५३ मिस=बहाना। साली=धान। अवकलत=सूझना। हरगिरि=कैलाश पर्वत। गुरु=बड़ा। रैनि=रात। बिहानीं=बीत गई।

दो० २५४ जथारथु=यथार्थ, ठीक। हरु=शकर। अहिप=शेषनाग। निगमागम=वेदशास्त्र। रजाइ=आज्ञा।

दो० २५५ मग=मार्ग। नय=नीति।

दो० २५६ फुरि=सत्य। अभिमत=इच्छानुसार। सुपासू=आराम। प्रवान=प्रमाणित, सत्य। अरध तजहि बुध सरबस जाता=जब सारा नष्ट होता हो, तो बुद्धिमान् लोग आधा छोड़,आधा बचा लेते हैं।

दो० २५७ ठाढ़ि=खड़ी। अबला=स्त्री। गा=जाना। हेरा=ढूँढा। बोहितुबेरा=जहाज या बेडा। सरसी=तलैया।

दो० २५८ आरत=दुःखी। घटिहिं=पूरा उतरेगा। नृपनय=राजनीति।

दो० २५९ मञ्जु=सुन्दर। अबुज=कमल। बदन=मुँह। अरगाई=चुप।

दो० २६० छरुभारू=भार। कोह=क्रोध। खुनिस=क्रोध। महूँ=मैं भी। बैन=वचन।

दो० २६१ दुलारा=प्यार। मिस=बहाना। पारा=डाल दिया। कोदव=एक छोटे काले दाने का साधारण अन्न। सुमाली=सुन्दर धान। मुकता (मुक्ता)=मोती। प्रसव=पैदा करना। सबुककाली=तलैया की सीप। परिपाकू=फल।

दो० २६२ महीं=मैं ही। सूला=पीड़ा। घाएँ=चोट। बेहू=छेद। तीछी=तीक्ष्ण।

दो० २६३ तुसारू=तुषार। पुन्यसिलोक=पुण्यश्लोक, श्रेष्ठ। तर=नीचे।

दो० २६४ वधिक=बहेलिया। भा=हुआ।

दो० २६५ अंबरीष दुरबासा=अम्बरीष की धर्म रक्षा के लिए विष्णु भगवान् ने क्रोधी दुर्वासा पर सुदर्शन चक्र चलाया था।

दो० २६६ सय=शत, सौ। जलज=कमल। जुग=युग, दोनों।

दो० २६७ अपडर=व्यर्थ डर। घाला=नष्ट किया। गोई=छिपी। समनि =शमन, शान्त करने वाला। राउ=राजा। रंक=निर्धन। पोच=नीच।

दो० २६८ छोभु[क्षोभ]=दुःख।

दो० २६९ आरत[आर्त]=दुःखी। चेतू=ज्ञान। उदधि=समुद्र। अगाध= अथाह,गहरा। अनट=उपद्रव। अवरेब=कठिनाई।

दो० २७० चर=दूत। वर=श्रेष्ठ।

दो० २७१ जनकौरा=जनकपुर वासी। ब्यालहि=साँप को। हराँसू=कष्ट। बुध=पण्डित। लखाऊ=पहिचान। चार=दूत। तेरहूति= तिरहुत, मिथिला।

दो० २७२ सुभट=योद्धा। साहनी=सेना। हय=घोडे। गय=हाथी। जान=सवारी। दुघरी=एक मुहूर्त।

दो० २७३ गत=बीता। गनप=गणेश। गौरि=पार्वती। तिपुरारि= शंकर। तमारी=सूर्य। रमारमन=विष्णु। अवधि=सीमा।

दो० २७४ बिरति=वैराग्य। अनुहारी=अनुसार। सभ्रम=शीघ्रता से। दिनेसु=सूर्य।

दो० २७५ लेसु (लेश)=अंश। माती=मग्न। पूरन=पूर्ण। पाथु= जल।

दो० २७६ बोरति=डुबाती है। करारे=किनारे। उसास (उच्छ्‌वास)=

शोक की लम्बी साँसे। समीर=हवा। तरगा=लहरें। तोरा-
वति=प्रखर। अवर्त=जल के चक्कर से उत्पन्न गड्ढा।
रूपकालकार।

दो० २७७ भव=ससार। संकुल=व्याप्त।

दो० २७८ हस=सूर्य। नय=नीति। कौसिक=विश्वामित्र। असन
(अशन)=भोजन। बिपुल=अधिक।

दो० २७९ कामद=इच्छा पूरी करने वाला। गिरि=पर्वत।

दो० २८० फिरब=लौटना। अटनु=घूमना। सम्रत=वर्ष।

दो० २८१ सावकास=मौका, अवसर। द्रवहिं=पिघलना। बिसूरति=
रोती है। बाँकी=टेढी। पय=दूध। फेनु=झाग। पबि=
वज्र। टाँकी=छेनी। गरल=विष। मानस=मानसरोवर।
सकृत=एक, केवल। मराल=हस।

दो० २८२ सृजि=रचकर। हरइ=नष्ट करती है। बालकेलि=लड़कों का
खेल। छति (क्षति)=हानि।। थिति=स्थिति। लय=नाश।
गहबरि=दुःखभरे।

दो० २८३ देवसरि=गगा। होचे=हिचकना। कनकु=सोना। सयानप=
चतुराई।

दो० २८४ जामिनि=रात। बेगि=शीघ्र। कै=अथवा।

दो० २८५ घरनि=स्त्री। तिनु=तृण। जागबलिक=याज्ञवल्क्य ऋषि।
मुधा=असत्य।

दो० २८६ पयागू=प्रयाग। बटु=वटवृक्ष। चिरजीवीमुनि=मार्कण्डेय
मुनि। अवलबनु=सहारा। धरनिसुतों=सीता।

दो० २८७ धवल=उज्वल। सरि=नदी। बडेरे=बडे। बसब=ठहरना।
समयसिर=समयानुसार।

दो० २८८ प्रचारू=पहुँच । अहिपति=शेषनाग । कोविद=विद्वान् । निरवधि=सीमारहित ।

दो० २८९ बरबरनी=श्रेष्ठ स्त्री । गमु=जाना । तिय=स्त्री । बहुरहिं= लौटे । प्रतीति=विश्वास । पेलिहहिं=ठुकरायेंगे ।

दो० २९० रौरे=आपके । बाम=प्रतिकूल ।

दो० २९१ पकज=कमल । असमजस=दुविधा । समन=समाधान ।

दो० २९२ गुनत=विचारते । विदित=मालूम ।

दो० २९३ बूझब=पूछना ।
बाउर=बुरा । बदन=मुँह । प्रबोधू=ज्ञान ।

दो० २९४ मजु=सुन्दर । अमित=अधिक । आखर=अक्षर । मुकुरु= दर्पण । पानी(पाणि)=हाथ । बिबुध=देवता । द्विजराजू= चन्द्रमा । जोगा=मेल । लेखा=देवता । प्रपंचहि=आडम्बर को । अकाजु=हानि ।

दो० २९५ पाही=रक्षाकरो । चदिनि=चाँदनी । चडकर=सूर्य । तिमिर =अंधेरा । तरनि=सूर्य । कोका=चकवा । अरति=दुःख । उचाटु=उच्चाटन, मन उचटना ।

दो० २९६ पुरोधा=पुरोहित । भदेसू=अनुचित ।

दो० २९७ बिंधि=विन्ध्याचल पर्वत । घटज=अगस्त्य मुनि । निवारा= रोका । कनकलोचन=हिरण्याक्ष राक्षस । छोनी=पृथ्वी । हरी=चुराई । बराह=सूअर । उधरी=उद्धार किया । भारती=वाणी । मराली=हँसिनी ।

दो० २९८ अघ=पाप । पेली=ठुकराकर । सकेली=एकत्र कर । माहुरु=विष । मीचू=मृत्यु । दूषन=दोष ।

दो० २९९ निसील=शील रहित । निरीस=निरीश्वरवादी (नास्तिक) ।

सामुहें=सम्मुख । नेवाजी=कृपा । कोपी (कोऽपि)= कोई भी । पन=प्रण । बिरिदावलि=प्रसिद्धि । बरजोर=हठपूर्वक ।

दो० ३०० खोरि=नीचता ।

दो० ३०१ पदुम(पद्म)=कमल । सुकृत=पुण्य । निसागम=रातका होना । नलिन=कमल । मघवा=इन्द्र ।

दो० ३०२ पाकरिपु=इन्द्र । प्रतीती=विश्वास । मेला=मढना । स्वान (श्वान)=कुत्ता । मघवान=इन्द्र । जुवानू=युवा । सरिस=समान ।

दो० ३०३ जत्री=यंत्रित करना, मनपर प्रभाव डालना । कानि= मर्यादा । बिधु=चन्द्रमा ।

दो० ३०४ रत=लीन । बाम=टेढ़ा । नागर=चतुर । ससिरसु= अमृत । बिद=जाननेवाले ।

दो० ३०५ तरनि=सूर्य । खुआर=नष्ट । अथँव=अस्त । दिनेसु= सूर्य ।

दो० ३०६ प्रसाद=कृपा । निदेसु(निदेश)=आज्ञा । बेनी=त्रिवेणी । च्वाडिअहि=रोकते हैं । असनिहु=तलवार । घाए=चोट ।

दो० ३०७ गिरा=सरस्वती । पंकज=कमल । सेइ=सेवन कर । सलिलु=जल । काह=क्या ।

दो० ३०८ सर=तालाब । सरि=नदी । निर्झर=झरने । अंकित=चिह्न वाली । अवनि=पृथ्वी । अगमि=अगम्य । कानन=वन । रूख=वृक्ष ।

दो० ३०९ ब्रात=समूह । प्रबोधी=समुझाई । सैला=पर्वत ।

दो० ३१० मारग=मार्ग । पाग=जल । लोपेउ=सुन्न गा ।

दो० ३११ अटन=घूमना। काँकरी=छोटे ककड़। दुराई=छिपाकर। मजुल=सुन्दर। बिटप=वृक्ष। प्राकृतहु=साधारण मनुष्य। जमुहात=जँभाई लेते (तन्द्रा)।

दो० ३१२ चारु=सुन्दर। अभिगमा=सुन्दर। माझ (मध्य)=में।

दो० ३१३ भोर=सवेरे। जुरा=इकट्ठा हुआ। अवधि=समय (१४ वर्ष का समय)।

दो० ३१४ सगाई=सम्बन्ध। राउरबदि=आपका होकर। बादि=व्यर्थ। भूरि=पूरा। खरोसो=तिनका भर भी। बिबरण =भेद। प्रवीन=चतुर।

दो० ३१५ परिजन=कुटुम्बी। खालें=नीचे। पुहुमि=पृथ्वी।

दो० ३१६ एतनोई=इतनी ही। गोई=छिपी। साँती=शान्ति। पाँवरी=खडाँऊ। जुग (युग)=दो। जामिक=प्रहरी, पहरेदार। सपुट=डिब्बिया। आखर=अक्षर। कपाट=किवाड़।

दो० ३१७ हहरि=ललचाकर। अवरेब=कठिनाई।
बिबुध धारि भइ गुनद गोहारी.=देवताओं की सेना जो लूटने आयी थी, वही गुणदायक और रक्षक बन गई। बारिज=कमल। अनल=आग। कनक=सुवर्ण। उपाए=उत्पन्न किए।

दो० ३१८ भोरी=भोली। प्राकृत=साधारण जन।

दो० ३१९ महीसा=राजा। महिदेव=ब्राह्मण। हरि=विष्णु। हर=शंकर।

दो० ३२० अभिमत=इच्छानुसार। पयाना=प्रस्थान। बसह=बैल। परन=पर्ण, पत्ता। निकेत=घर।

दो० ३२१ अनुज=छोटे भाई। चरअचर=जड़ चेतन। बिबुध=

देवता। घरी सो=तिनका भर भी। राजत=शोभादेना।

दो० ३२२ भोग=सुख।

दो० ३२३ प्रबोधे=समझाए। ओधे=लग गये। पोचू=चुग। सनेमा=नियम पूर्वक। गनक=ज्योतिषी। निरुपाधि=निर्विघ्नता-पूर्वक।

दो० ३२४ खनि=खोदकर। साँथरी=चटाई। धनदु=कुवेर। रागा=प्रेम। चचरीक=भौंरा। चपक=चम्पा एक फूल का नाम है, जिससे भौंरा प्रेम नहीं करता। वमन=कै, उल्टी।

दो० ३२५ दूवरि=दुवली। पीना=मोटा। वेतस=बेत। वनज=कमल। राका=पूर्णिमा। सुरति=सप्रेमस्मरण। सुरवीथि=देवताओं की गली।

सो० ३२६ नीरु=जीभ। कलुष=पाप। पुंज=समूह। कुंजर=हाथी। मृगराजू=सिंह। रंजन=प्रसन्न करने वाली। सुधाकर=चन्द्रमा। पियूष=अमृत। जम=यम। दम=इन्द्रियों को दमन करना। मिस=वहाना। सठन्हि=दुष्टो को। विरति=वैराग्य।

(टिप्पणी)

अयोध्याकाण्ड समाप्त

कुछ कठिन स्थल

दो० श्री गुरु चरन सरोज रज निज मनु मुकुरु सुधारि।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु जो दाय कुफल चारि॥

श्री गुरू जी के चरण कमलों की रज से अपने मन रूपी दर्पण को साफ़ करके मैं श्री रघुनाथ जी के उस निर्मल यश का वर्णन करता हूँ जो चारों फलों को देने वाला है।

दो० एहि अवसर मंगलु परम सुनि रहँसेउ रनिवासु।
सोभत लखि बिधु बढ़त जनु बारिधि बीचि बिलासु॥

इसी समय यह परम मंगल समाचार सुनकर सारा रनिवास हर्षित हो उठा। जैसे चन्द्रमा को बढ़ते देखकर समुद्र मे लहरों का विलास (क्रीड़ा) सुशोभित होता है। (उत्प्रेक्षा)

चौ० बिपति बीजु बरषा रितु चेरी। भुइँ भइ कुमति कैकई केरी॥
पाइ कपट जलु अंकुर जामा। बर दोउ दल दुख फल परिनामा॥

विपत्ति (आपसी कलह) बीज है, दासी वर्षा ऋतु है, कैकेयी की कुबुद्धि उस बीज को बोने के लिए जमीन हो गई। उसमे कपट-रूपी जल पाकर अकुर फूट निकला। दोनों वरदान (राम को १४वर्ष वनवास, भरत को राज्य) उस अकुर के दो पत्ते हैं और अन्त में इसके दु:ख रूपी फल होगा। रूपकालंकार।

चौ० अस कहि कुटिल भई उठि ठाढ़ी। मानहुँ रोष तरगिनि बाढ़ी॥
पाप पहार प्रगट भइ सोई। भरी क्रोध जल जाइ न जोई॥

ऐसा कहकर कुटिल कैकेयी उठ खड़ी हुई। मानो क्रोध की नदी उमड़ी हो। वह नदी पापरूपी पहाड़ से प्रकट हुई है और क्रोध रूपी जल से भरी है; ऐसी भयानक है कि देखी नही जाती। रूपक अलंकार।

चौ० दोउ बर कूल कठिन हठ धारा। भवँर कूबरी बचन प्रचारा॥
ढाहत भूपरूप तरु मूला। चली बिपति बारिधि अनुकूला॥

दोनों वरदान उस नदी के दो किनारे हैं, कैकेयी का कठिन हठ ही उसकी तीव्र धारा है और कुबरी मन्थरा के वचनों की प्रेरणा ही भँवर है। वह क्रोध रूपी नदी राजा दशरथरूपी वृक्ष को जड़मूल से ढहाती हुई विपत्ति रूपी समुद्र की ओर चली है। रूपक अलंकार।

दो० नव गयदु रघुबीर मनु राजु अलान समान।
छूट जानि बन गवनु सुनि उर अनदु अधिकान॥

श्री रामचन्द्र जी का मन नये पकड़े हुए हाथी के समान और राज-तिलक उस हाथी के बाँधने की काँटेदार साँकल के समान है। 'वन जाना है, यह सुनकर, अपने को बन्धन से छूटा जानकर, उनके हृदय में आनन्द बढ़ गया है।

चौ० मातु वचन सुनि अति अनुकूला। जनु सनेह सुरतरु के फूला।
सुख मकरन्द भरे श्रिय मूला। निरखि राम मनु भँवरु न भूला।

माता के अत्यन्त अनुकूल वचन सुनकर-जो मानो स्नेह रूपी कल्प-वृक्ष के फूल थे, जो सुखरूपी मकरन्द से भरे थे और श्री (राजलक्ष्मी) के मूल थे- ऐसे वचन रूपी फूलों को देखकर श्री रामचन्द्र जी का मनरूपी भौंरा उनपर लुभाया नहीं।

चौ० पदनख निरखि देवसरि हरषी। सुनि प्रभु वचन मोहँ मतिकरषी।

प्रभुरामचन्द्र जी के वचनों को सुनकर गंगा जी की बुद्धि मोह से खिंच गई। (कारण यह कि ये साक्षात् भगवान् होकर भी पार उतारने के लिए केवट से प्रार्थना कर रहे हैं) फिर भगवान् के चरण-नखों को (अपने उत्पत्ति- स्थान को) देख कर गंगा जी प्रसन्न हो गईं (समझ गईं कि भगवान् नरलीला कर रहे हैं। आज इनके चरणों का स्पर्श कर धन्य हो जाऊँगी, यह विचार कर हर्षित हुईं)।

दो० जसु तुम्हार मानस विमल हंसिनि जीहा जासु।
मुकताहल गुन गन चुनइ राम बसहु हियँ तासु॥

आप के यशरूपी निर्मल मानसरोवर में जिसकी जीभ हंसिनी

बनी हुई,आप के गुण समूहरूपी मोतियों को चुगती है, हे रामचन्द्र जी! आप उसके हृदय मे निवास कीजिए। रूपकालकार।

चौ० नदी पनच सर सम दम दाना। सकल कलुष कलि साउज नाना॥
चित्रकूट जनु अचल अहेरी। चुकइ न घात मार मुठभेरी॥

मदाकिनी की धारा प्रत्यञ्चा [डोरी] है और शम, दम, दान बाण हैं। कलियुग के समस्त पाप उसके अनेकों हिसक पशुरूप शिकार हैं। चित्रकूट ही मानो अचल शिकारी है, जिसका निशाना कभी चूकता नहीं और जो सामने से मारता है।

चौ० जलदु जनम भरि सुरति बिसारउ। जाचत जलु पबि पाहन डारउ॥
चातकु रटनि घटे घटि जाई। बढ़े प्रेमु सब भाँति भलाई॥

मेघ चाहे जन्म भर चातक की सुध भुला दे और जल माँगने पर वह चाहे बज्र और पत्थर (ओले) ही गिरावे। पर, चातक की रटन घटने से तो उसकी बात ही घट जायगी (प्रतिष्ठा ही नष्ट हो जायगी)। उसकी तो प्रेम बढ़ने में ही सब प्रकार से भलाई है।

चौ० नव बिधु बिमल तात जसु तोरा। रघुबर किंकर कुमुद चकोरा॥
उदित सदा अँथइहि कबहूँ ना। घटिहि न जग नभ दिन दिन दूना॥

भरद्वाज मुनि भरत से कहते हैं कि:- हे तात! तुम्हारा यश निर्मल नवीन चन्द्रमा है और श्री रामचन्द्रजी के दास कुमुद और चकोर हैं (वह चन्द्रमा तो प्रतिदिन अस्त होता और घटता है, जिससे कुमुद और चकोर दुःखी होते हैं) परन्तु यह तुम्हारा यशरूपी चन्द्रमा सदा उदय रहेगा, कभी अस्त होगा ही नहीं। जगतरूपी आकाश में यह घटेगा नही, वरन् दिन दिन दूना होगा। रूपक-व्यतिरेक अलंकार।

चौ० कोक तिलोक प्रीति अति करिही। प्रभु प्रताप रबि छबिहि न हरिही।
निसि दिन सुखद सदा सब काहू। ग्रसिहि न कैकइ करतबु राहू॥

तीनों लोक रूपी चकवा इस यशरूपी चन्द्रमा पर अत्यन्त प्रेम करेगा और प्रभु श्री रामचन्द्रजी का प्रताप रूपी सूर्य इसकी छवि को

हरण नहीं करेगा। यह चन्द्रमा रात-दिन सदा सब किसी को सुख देने वाला होगा। कैकेयी का कुकर्मरूपी राहु इसे ग्रसित नहीं करेगा। (रूपक व्यतिरेक अलकार)

चौ० पूरन राम सुपेम पियूषा। गुर अवमान दोष नहिं दूषा॥
राम भगत अब अमिअँ अघाहूँ। कीन्हेहु सुलभ सुधा बसुधाहूँ॥

यह चन्द्रमा श्री रामचंद्रजी के सुन्दर प्रेमरूपी अमृत से पूर्ण है। यह गुरु के अपमान रूपी दोष से दूषित नहीं है। तुमने इस यशरूपी चन्द्रमा की सृष्टि करके पृथ्वीपर भी अमृत को सुलभ कर दिया। अब श्री रामचन्द्रजी के भक्त इस अमृत से तृप्त होवें। रूपक-व्यतिरेक अलकार।

चौ० मातु कुमत बढ़ई अघ मूला। तेहिं हमार हित कीन्ह बँसूला॥
कलि कुकाठ कर कीन्ह कुजंत्रू। गाड़ि अवधि पढ़ि कठिन कुमन्त्रू॥

भरतजी भरद्वाज मुनि से कहते हैं कि--माता का कुमत (बुरा विचार) पापों का मूल बढई है। उसने हमारे हित का बँसूला बनाया। उससे कलहरूपी कुकाठका कुयन्त्र बनाया और चौदहवर्षकी अवधि रूपी कठिन कुमन्त्र पढकर उस यन्त्र को गाड दिया। (यहाँ माता का कुविचार बढई है, भरत का राज्य बँसूला है, राम का बनवास कुयन्त्र है और चौदह वर्ष का समय कुमन्त्र है)।

दो० सपति चकई भरतु चक मुनि आयस खेलवार।
तेहि निसि आश्रम पिंजराँ राखे भा भिनुसार॥

सम्पत्ति (सुख की सामग्री) चकवी है और भरत जी चकवा हैं, और भरद्वाजमुनि की आज्ञा खेल है, जिसने उस रातको आश्रमरूपी पिंजडे में दोनों को बद रखा और ऐसे ही सवेरा होगया। (जैसे चकवी तथा चकवे को रात भर पिजड़े में रखा जाय, तब भी वे एक दूसरे से अलग ही रहते हैं, वैसे ही सारे सुख साधन के रहते भी भरत जी उनसे अलग ही रहे।

चौ० जो अचवँत नृप मातहिं तेई। नाहिन साधुसभा जेहिं सेई।

श्री रामजी लक्ष्मण से कहते हैं:- जिन्होंने साधुओं की सभा का से-

वन (सत्संग)नहीं किया, वे ही राजा राजमदरूपी मदिराका आचमन करते ही मतवाले होजाते हैं। अर्थात् राज्य पाते ही अभिमानी होजाते हैं।

चौ० रामबास बन संपति भ्राजा। सुखी प्रजा जनु पाइ सुराजा॥
सचिव बिरागु बिबेकु नरेसू। बिपिन सुहावन पावन देसू॥

श्री रामचन्द्रजी के निवास से वन की सम्पत्ति ऐसी सुशोभित है मानो अच्छे राजा को पाकर प्रजा सुखी हो। सुहावना वन ही पवित्र देश है। विवेक उसका राजा है, और वैराग्य मन्त्री है।

चौ०भट जम नियम सैल रजधानी। सांति सुमति सुचिसुन्दर रानी॥
सकल अंग संपन्न सुराऊ। रामचरन आश्रित चित चाऊ॥

यम (अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह) तथा नियम (शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वरप्रणिधान) योद्धा हैं। पर्वत राजधानी है, शान्ति और सुबुद्धि दो सुन्दर पवित्र रानियाँ हैं। वह श्रेष्ठ राजा राज्य के सब अंगो से पूर्ण है और श्री रामचन्द्रजी के चरणों में आश्रित रहने से उसके चित्त में आनन्द है।
(स्वामी, अमात्य, सुहृद्, कोष, राष्ट्र, दुर्ग और सेना-राज्य के ये सात अंग हैं।)

दो० पेम अमिअ मंदरु बिरहु भरतु पयोधि गँभीर।
मथि प्रगटेउ सुर साधु हित कृपासिंधु रघुबीर॥

प्रेम अमृत है, विरह मन्दराचल पर्वत है, भरत जी गहरे समुद्र है। कृपा के समुद्र श्री रामचन्द्रजी ने देवता और साधुओ के हित के लिए स्वयं (इस भरतरूपी गहरे समुद्र को अपने विरह रूपी मन्दराचल से] मथकर यह प्रेमरूपी अमृत प्रकट किया है।

दो० आश्रम सागर सांत रस पूरन पावन पाथु।
सेन मनहुँ करुना सरित लिएँ जाहिं रघुनाथु॥

श्री रामजी का आश्रम शान्तरस रूपी पवित्र जल से परिपूर्ण है। जनक जी की सेना (समाज) मानो करुणा[करुणारस]की नदी है, जिसे श्री

रघुनाथ जी(उस आश्रम रूपी शान्तरस के समुद्र मे मिलाने के लिए) जा रहे हैं।

चौ० बोरति ग्यान बिराग करारे। वचन ससोक मिलत नद नारे।
सोच उसास समीर तरंगा। धीरज तट तरुबर कर भंगा ॥

यह करुणा की नदी (इतनी बढी हुई है कि)ज्ञान वैराग्य रूपी किनारों को डुबाती जाती है। शोक भरे वचन नद और नाले हैं जो इस नदी में मिलते हैं, और सोच की लम्बी साँसे [आहें] ही वायु के झकोरों से उठने वाली तरगें हैं, जो धैर्यरूपी किनारे के उत्तम वृक्षों को तोड़ रही हैं।

चौ० बिषम बिषाद तोरावति धारा। भय भ्रम भँवर अबर्त अपारा।
केवट बुध बिद्या बड़ि नावा। सकहिं न खेइ ऐक नहिं आवा ॥

भयानक शोक ही उस नदी की तेज धारा है। भय और भ्रम ही उसके असख्य भँवर और चक्र हैं। विद्वान् मल्लाह हैं, विद्या ही बड़ी नाव है। परन्तु वे उसे खे नहीं सकते हैं (उस विद्या का उपयोग नहीं कर सकते हैं), किसी को उसका ढग ही नहीं आता है।

चौ० बनचर कोल किरात बिचारे। थके बिलोकि पथिक हियँ हारे॥
आश्रम उदधि मिली जब जाई। मनहुँ उठेउ अंबुधि अकुलाई।

बन में बिचरनेवाले बेचारे कोल-किरात ही यात्री हैं, जो उस नदी को देखकर हृदय में हारकर थक गये हैं। यह करुणा-नदी जब आश्रम-समुद्र में जाकर मिली, तो मानो वह अकुला (खौल) उठा।

चौ० उर उमगेउ अंबुधि अनुरागू। भयउ भूप मनु मनहुँ पयागू।
सिय सनेह बटु बाढ़त जोहा। तापर राम पेम सिसु सोहा॥

जनक जी के हृदय में सीता को देखकर प्रेम का समुद्र उमड़ पड़ा। राजा का मन मानों प्रयाग हो गया। उस समुद्र के भीतर उन्होंने सीता जी के अलौकिक स्नेहरूपी अक्षयवट को बढ़ते हुए देखा। उस (सीताजी के प्रेमरूपी वट) पर श्रीरामजी का प्रेमरूपी बालक (बालरूपधारी भगवान्) सुशोभित हो रहा है।

चौ० चिरजीवी मुनि ग्यान बिकल जनु। बूड़त लहेउ बाल अवलंबनु॥
मोह मगन मति नहिं बिदेह की। महिमा सिय रघुबर सनेह की॥

जनकजी का ज्ञानरूपी चिरजीवी (मार्कण्डेय) मुनि व्याकुल होकर डूबते-डूबते मानो उस श्रीरामप्रेमरूपी बालक का सहारा पाकर बच गया। वस्तुतः ज्ञानी विदेहराज की बुद्धि मोह में मग्न नहीं है, यह तो श्रीसीता-रामजी के प्रेम की महिमा है (जिसने उन जैसे महान् ज्ञानी के ज्ञान को भी विकल कर दिया)।

चौ० आगम निगम प्रसिद्ध पुराना। सेवा धरमु कठिन जगु जाना॥
स्वामि धरम स्वारथहि बिरोधू। बैरु अंध प्रेमहि न प्रबोधू॥

वेद, शास्त्र और पुराणों मे प्रसिद्ध है और जगत् जानता है कि सेवा-धर्म बड़ा कठिन है। स्वामिधर्म मे(स्वामी के प्रति कर्त्तव्य पालनमे) और स्वार्थ में विरोध है (दोनों एक साथ नहीं निभ सकते) वैर अन्धा होता है और प्रेम को ज्ञान नहीं रहता (मैं स्वार्थवश कहूँगा या प्रेमवश,दोनों में ही भूल होने का भय है)।

चौ० सोक कनक लोचन मति छोनी। हरी बिमल गुन गन जगजोनी॥
भरत बिबेक बराहँ बिसाला। अनायास उधरी तेहि काला॥

शोकरूपी हिरण्याक्ष ने (सारी सभा की) बुद्धिरूपी पृथ्वी को चुरा लिया, जो विमल गुणसमूह रूपी जगत् को उत्पन्न करने वाली थी। भरतजी के विवेकरूपी विशाल वराह (वराहरूपधारी भगवान्) ने (शोक रूपी हिरण्याक्ष को नष्ट कर) बिना ही परिश्रम उसका उद्धार कर दिया।

चौ० चरनपीठ करुनानिधान के। जनु जुग जामिक प्रजा प्रान के॥
संपुट भरत सनेह रतन के। आखर जुग जनु जीव जतन के॥

करुणानिधान श्री रामचन्द्रजी के दोनों खड़ाऊँ प्रजा के प्राणों की रक्षा के लिए मानो दो पहरेदार है। भरत जी के प्रेम रूपी रत्न के लिए मानो डिब्बा हैं और जीव के साधन के लिए मानो राम-नाम के दो अक्षर हैं।

७ नहुष

एक बार इन्द्र वृत्रासुर के डर के कारण भागकर कहीं छिप गए। बृहस्पति ने इन्द्र का पद नहुष को दिया। इन्होंने इन्द्राणी से मिलने का हठ किया। इन्द्राणी ने कहलाया कि यदि तुम ब्राह्मणों से पालकी उठवाकर हमारे पास आओ तो मैं स्वीकार करूँगी। नहुष ने वैसा ही किया। मदान्धता में नहुष ने कहा, 'सर्प सर्प,' (जल्दी चलो) इसपर ब्राह्मणों ने शाप दिया कि तू सर्प हो जाओ।

८ रंतिदेव

राजा रंतिदेव बड़े धर्मात्मा थे। इन्होंने राज्य को छोड़ दिया और बनवास करने लगे। साथ में स्त्री पुत्र को भी ले गए। एक बार बहुत उपवास करने के बाद इनके हाथ कुछ अन्न लगा। इन्होंने उस अन्न के तीन भाग किए। परन्तु एक भिक्षुक ने उनसे भिक्षा माँगी इन्होंने उसे तीनों भाग दे दिए, और तीनों व्यक्ति भूखे रहे। इस पर विष्णु भगवान् इन पर बहुत प्रसन्न हुए।

९ ययाति

राजा ययाति तपोबल से स्वर्ग गए थे। स्वर्ग में इन्द्र ने राजा ययाति से पूछा कि आपने कौन से पुण्य किये हैं? जिसके फलस्वरूप आप यहाँ आए हैं? राजा ययाति ने अपने पुण्यों का बखान करना प्रारम्भ किया। अपने मुहँ से अपने पुण्य-कथन से पुण्य क्षीण हो गए और ययाति स्वर्ग से ढकेल दिए गए।

१० अहिल्या

यह महर्षि गौतम की स्त्री थी। एक बार जब मुनि प्रातःकाल गंगा-स्नान करने चले गए, तब इन्द्र अहिल्या की सुन्दरता पर मुग्ध होकर उसके पास आया। उसने गौतम का रूप धारण करके अहिल्या

का धर्म नष्ट किया। ज्यों ही वह बाहर निकल रहा था, मुनि वहाँ आ पहुँचे और इन्द्र को शाप दिया कि तेरे सहस्र भग हो जायँ, और अहिल्या को शाप दिया कि तू पत्थर हो जा। इन्द्र ने बड़ी प्रार्थना की, कि मुझे शाप से मुक्त कीजिए तो मुनिने कहा, कि जाओ तुम्हारी भग की जगह आँखें हो जायेंगी। अहिल्या ने चरणों में गिर कर बड़ी प्रार्थना की। तब गौतम ने कहा-जब त्रेता मे श्री रामचन्द्र जी के चरणों की धूल तेरे ऊपर पडेगी तब तेरा उद्धार होगा। तब से वह पत्थर बनी रही। श्री रामचन्द्र जी ने त्रेता में उसे मुक्ति दी।

११ श्रवण के माँ बाप का शाप

एक बार राजा दशरथ शिकार खेलने गए, वहाँ नदी में श्रवण ने अपने माता-पिता के लिए पानी लेने को कमण्डलु डुबाया। राजा-दशरथ ने उस शब्द को हाथी का शब्द समझा और बाण मारा। बाण लगते ही श्रवण पृथ्वी पर गिर पड़ा। राजा जब उसके पास गए तब उसने राजा दशरथ से कहा कि तुम मेरे माता-पिता को पानी पिला देना। दशरथ पानी लेकर श्रवण के अन्धे माता-पिता के पास गए और सारी कथा कह सुनाई। उन दोनों ने पुत्र वियोग में दुःखी हो शाप दिया कि जैसे हम पुत्र वियोग में मरते हैं, वैसे ही तुमको भी पुत्र वियोग में मरना पड़ेगा।

१२ वाल्मीकि

वाल्मीकि पहले एक डाकू थे। एक बार इन्होंने कुछ ऋषियों को लूटना चाहा। उन्होंने कहा कि जिन लोगों के लिए तुम यह पाप करते हो वे तुम्हारे पाप को भी भोगेंगे, अथवा केवल खाने के साथी हैं। वाल्मीकि ने अपने घर पर जाकर पूछा, परन्तु सबने उत्तर दिया कि पाप का भागी तो कोई नही है, वह तो स्वय भोगना पड़ता है। इस पर वाल्मीकि को ज्ञान हुआ। ऋषियों ने इनको राम-मन्त्र का उपदेश दिया। परन्तु इनके पाप इतने अधिक थे कि इनके मुँह से शुद्ध नाम भी न निकल सका। अन्त में

इन्होंने राम नाम का उल्टा 'मरा मरा' जपना प्रारभ किया। इसी से इनको सिद्धि प्राप्त हुई।

१३ यवन

एक यवन को एक सूअर ने मारा। उसने कहा कि मुझे हराम ने मारा है। यवन सूअर को हराम कहते हैं। मुँह से राम शब्द निकलते ही उसे मुक्ति मिली।

१४ भगीरथ

ये राजा दिलीप के पूर्वज थे। इनके वंश में राजा सगर नामक बड़े प्रतापी राजा हुए थे। उन्होंने राजसूय यज्ञ किया, उसमें घोड़ा छोड़ा गया। इन्द्रने डरकर घोड़े को ध्यानस्थ कपिल मुनि के पीछे बाँध दिया। जब घोड़ा लौट कर न आया तो सगर के ६० हजार पुत्र ढूँढने निकले। कपिल मुनि के पीछे बँधा देख उन्हें कुछ भला बुरा कहे। मुनि ने शाप दिया, वे भस्म हो गये। इन लोगों को तारने के लिए भगीरथ ने गंगा को पृथ्वी पर लाने का महान् प्रत्नय किया। भगीरथ ब्रह्मा तथा शिव की उपासना कर गंगा को स्वर्ग से पृथ्वी पर लाने में समर्थ हुए।

१५ अम्बरीष-दुर्वासा

एक बार एकादशी के व्रत रहने पर अम्बरीष ने दुर्वासा को न्योता दिया। दुर्वासा के आने में बहुत देर लगी, पारण का समय बहुत थोड़ा रह गया था। इसलिए अम्बरीष ने व्रत का फल नष्ट होने के डर से भगवान् के चरणामृत से पारण किया। बाद मे दुर्वासा अम्बरीष के यहाँ पहुँचे। दुर्वासा बहुत क्रुद्ध हुए कि तू ने निमन्त्रित ब्राह्मण को खिलाए बिना क्यों खा लिया? राजा को मारने के लिए दुर्वासा ने अपनी जटा से कृत्या उत्पन्न की। तब कृत्या से अम्बरीष की रक्षा सुदर्शन ने की। सुदर्शन ने कृत्या को नष्ट कर दुर्वासा का पीछा किया। अन्त में जब दुर्वासा ने अम्बरीष से क्षमा मागी तब सुदर्शन चक्र से पिण्ड छूटा।

१६ वेनु

ये ध्रुव के पूर्वजों में से थे। जब इनको राज्याधिकार मिला, तो इन्होंने अपने को ईश्वर घोषित किया। ऋषियों ने मना किया परन्तु वेनु न माना। देवपूजा यज्ञादि बन्द करा दिया। अन्त में वेनु मरवा डाला गया।

१७ सहस्रबाहु

इसका नाम कार्तवीर्यार्जुन भी है। एक बार कामधेनु की कृपा से यमदग्नि ने इसका बड़ा आदर किया। इसने ऋषि से कामधेनु को मांगा। जब ऋषि ने उसे नहीं दिया तो इसने ऋषि को मार डाला। परशुराम जी ने जब अपने पिता की मृत्यु सुनी तो सहस्रबाहु को मार डाला।

१८ त्रिशंकु

इसने सदेह स्वर्ग जाने की इच्छा की और वसिष्ठ से प्रार्थना की कि आप यज्ञ कराइये। वसिष्ठ ने अस्वीकार कर दिया। तब विश्वामित्र के पास गया, उन्होंने उसकी बात स्वीकार कर अपने तपोबल से सदेह स्वर्ग भेज दिया। परन्तु इन्द्र की आज्ञा से वह नीचे ढकेल दिया गया। विश्वामित्र ने अपने तपोबल से आकाश में ही रोक दिया। तब से वह अधर में ही लटका हुआ कहा जाता है।

१९ चिरजीवी मुनि मार्कण्डेय ऋषि

एक बार मार्कण्डेय ऋषि ने भगवान् से प्रार्थना की कि मुझे प्रलय का दृश्य दिखलाइये। कुछ काल बाद मार्कण्डेय को पृथ्वी पर जल ही जल दिखाई दिया। अपनी रक्षा के लिए उस जल राशि में ये तैरने लगे। आगे इनको एक वट के वृक्ष के पत्ते पर एक सुन्दर बालक लेटा हुआ मिला, जो कि अपने पैर का अंगूठा चूस रहा था। इस बालक ने मुनि से पूछा कि 'प्रलय का दृश्य देखा'? मुनि ने भगवान् को पहचाना और प्रार्थना की।

इतने में सब माया नष्ट हो गई और मुनि ने अपने को उसी आश्रम में बैठा पाया।

२० अगस्त्य

बढ़त बिन्ध्य जिमि घटज निवारा।

अगस्त्य की उत्पत्ति एक घडे से बताई जाती है। ये मित्रावरुण क सन्तान थे, एक बार विन्ध्याचल पर्वत बढने लगा। वह इतना बढ़ा कि उसने सूर्य का मार्ग रोक लिया। तब देवताओं ने अगस्त्य से प्रार्थना की। अगस्त्य विन्ध्य पर्वत के पास गये। विन्ध्य ने झुककर उन्हें प्रणाम किया। अगस्त्य ने कहा-मै जब तक न आऊँ तक तब ऐसे ही रहो। यह कहि कर अगस्त्य दक्षिण दिशा की ओर चले गये, और फिर नही लौटे।

कुछ ज्ञातव्य बातें

१४ लोक– अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल, पाताल, भूलोक, भुवर्लोक, स्वर्गलोक, महःलोक, जनःलोक, तपःलोक, सत्यलोक।

८ सिद्धि– अणिमा, महिमा, लघिमा, गरिमा, प्राप्ति प्राकाम्य, ईशत्व, वशित्व ।

४ आश्रम– ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वाणप्रस्थ, सन्यास ।

६ ऋतु– शिशिर, वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, हेमन्त ।

कल्प–चार युगों की एक चौकडी और हजार चौकड़ी का एक कल्प ।

३ गुण– तमोगुण. रजोगुण, सतोगुण ।

नीति– साम, दाम, दण्ड, भेद ।

६ रिपु– काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य ।

४ वर्ग– धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष ।

३ ताप–आध्यात्मिक, आधिदैविक, अधिभौतिक ।

अष्टयोग–यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा, समाधि ।

त्रिविधकर्म– सञ्चित, प्रारब्ध, क्रियमाण ।

३ ईषणा–लोकेषणा, वित्तेषणा, पुत्रेषणा ।

सप्तद्वीप–जम्बू, शाल, कुश, क्रौंच, पुष्कर, शाल्मली, गोमेद ।

९ निधि–महापद्म, पद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील, खर्व ।

५ तत्व– (पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश) ।

५ पवन– (प्राण, अपान, उदान, व्यान, समान) ।

५ महायज्ञ– (वेदपाठ, तर्पण, होम, बलिवैश्वदेव, अतिथिसत्कार) ।